



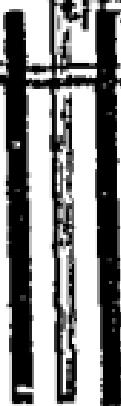
सर्व प्रथम अद्वितीय भाषा



१०८ मुनि कौरसागर जी महाराज प्रणीत

आगमवाणी

प्रथम भाग



प्रकाशक

बाबूलाल लभवदार

गा. फ. भोगचन्द्र प्रबलाल चौक चान्दार, भोपाल.

विषय-सूची

नाम पाठ

- १ सत् अधिकार
- २ सर्वाधिकार
- ३ क्षत्राधिकार
- ४ स्पशुभाधिकार
- ५ कालाधिकार
- ६ अंतराधिकार
- ७ भावाधिकार
- ८ आल्पथदुषाधिकार

शुद्धि पत्र

	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
=	६१	९	नाना जीवा वो	एक श्रीर नाना जीवो १
=	६५	१०	प्रमत्त स्वयत	प्रमत्त और अप्रमत्त





अनेक ग्राम क रता और अनेक अतिशय
स्वप्नोधित, परमश्रद्धात्मपोगी, विद्यमानभोगपरिहारी,
दम्पतिमहाप्रतिधारी, एकाविहारी, निन्द्रालिङ्गधारी,
महामाहिनियुक्त, महावार्ती, महामवि] क
धारा परमपूज्य श्री १०० महामुनि
नीरसागरजी महाराज ।

श्री १०८ मुनि द्वीरसागर जी महाराज का जीवन-चृत

आपका नम्म आवण वृच्छा ३ से १६६० में रिठीरा प्राम जिला सुरेना (गोरे) म बोरेया था श में सौ० द्वीपदी वहिन क पथान हुआ था । आपका नाम बोहरे मैलीलालजी था । पिता का नाम बोहरे पल्लोलालजी तथा माता का नाम कौणल्या थाइ था । आपदी शिद्धा सुरेना जीन विद्यालय में वेदन चौधी तक हुइ और ११ वर्ष की अवध्या में आपका विवाह साइ नादरामजी का [भवानिय] ही सुपुत्री मुरुराणे के गाय हो गया । लगभग ४० वर्ष की वया तक आप पूरे भार्मिक भवादा सन्ति गृह्य जीवन करते रहे । आपका व्यवसाय कपड़े की दुकान सथा साटुकारी था । चिरनीलालजी, मुनेरीलालजी, ममानजी, श करलालजी तथा अमृतलालजी आपके पाच सुपुत्र हैं । जो इस व्यवसाय में कपड़ का व्यवसाय कर रहे हैं । विद्यालय में शिद्धा प्राम करते ही आपके हृदय में विशेष भार्मिक अभिरुचि उत्पन्न हुई और त्वान्याय, न, पूजन आदि आपके दैनिक भियम बन गये । बाल्य नान से ही आपकी प्रशृति व्यसनों से संप्रथा विमुख रही । प्रत्येक गांज की समाती पर आप कुछ न कुछ अवश्य लेते थे । एक बार आपने एक मद्दान नियम लिया कि कुछ वस्तु का आपत्ति न लाग दू गा । एहस्य जीवन यतीन के ते हुए भी आपका हृदय सदैव साधारणिक रहा । सासारिक प्रलोभन आपकी पवित्र आत्मा के जरा भी विचलित न सके । दो पुत्री की शादी होने के प्रवात उनकी द्वेषी अवस्था होने के कारण ३ वर्ष तक ७ की प्रतिमा धारण कर पर पर ही रहे । अत में सीसार दी लेत्यता वे देख कर आपने आत्म कल्याण की हस्ति से आपने अपनी घर्मी पत्नी दृढ़ नुष्ठन अवस्था पारण की । इससे पूरे आपने घर्मी पत्नी सहित ३ वर्ष तक सभी दीशों की यात्रा की । आपकी घर्मी पत्नी अद्विका के नाम से जाना जाता है । ३ वर्ष तक नुष्ठक अवस्था में रहने के पश्चात सम्बत् २००७ में मोराल गाँव कल्याणक प्रतिष्ठा के गुभ अवसर पर तप कल्याणक के लिन विद्यालय समुदाय की हृषि व्यवसित के दीन आपने मुनि प्रत धारण किया । सासारिक सुखों समन्व साधनों के होने हुए भी, पारबाबरक गव आदिकर्तिसे सम्प्रभुते हुए,

उनकी हुवरा कर आपने बामान काल में एक महान अद्वितीय दर्शन किया है।

अध्ययन की ओर आरम्भ से ही आपकी प्रियोग रुचि थी। विद्यालय छोड़ने के बाद भी आपने धार्मिक अध्ययन जारी रखा और समयसार प्रबन्धनार्थ जैसे महान ग्रंथों का अध्ययन किया। अत्याहम बाणी जैसे महावृष्टि ग्रन्थ द्वारा इच्छा आपके दूसी अध्ययन और मनन का परिणाम है। लक्ष्यम के बाब अध्यात्म विषय का अनुनासन आपकी एक महान विशेषता है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषय का अपूर्य ज्ञान हीन के साथ द आपका स्वभाव भी अल्पतर गत भरने सहित बद्ध नहीं है। आपका डॉक्ट्री अल्पतर भयुर एवं प्रभावशाली है। आपका व्याप्ति-व इच्छा महान है कि दशन वरत ही दश्य में अपूर्ण गति का अनुभव होने लगता है। इसमें पूर्व आपने छागमय २० २५० आध्यात्मिक एवं महान् पूर्ण शारण द्वारा इच्छा की है जिसमें अनेक जगिल विषयों का निष्ठ दिया है ला अभी तक प्रप्रकाशित है।

आप कभी भी आपने श्रोताधी को किसी ब्रत को ग्रहण करने आवश्यक तुक्त दान करने के लिये विवश नहीं वरत। किन्तु आपका दर्पण इनना हृदयस्पर्शी होता है कि आतागत स्वयमेव ही शक्ति अनुग्राह ब्रह्म ब्रह्म द्विय विना नहीं रहत। आप लौकिक धार्मिक एवं सामाजिक सफरों से तनका विमुक्त रहत हैं आपका अधिकार लम्ब अध्ययन और मनन में ही अनीत हाता है। समाज का आप जसे मुनिराज पर महान गत है।

सितापराय लखमीचन्द्र मैन,
भेलसा



मूल्य जीवस्थानवोध

कारण निम्न लिखित दातार —

४००) प्रकाशक की ओर से ।

१०१) सेठ राजपति जी

मालिक फर्म — चुन्नीलाल दोलतराम भोपाल ।

१०२) सेठ हुलाराम जी हजारीलाल जी भोपाल ।

१०३) सेठ मुरलीधरजी चाहूलालजी जैमबाल जैन भोपाल ।

७०३) छुल जोइ

—*—*—*

❀ जीवस्थानदर्पण मे भूल ❀

प्रेस की शिखिलता से यह ग्रन्थ दो वर्ष में छप कर तैयार हो पाया । और असावधानी के कारण जीवस्थानदर्पण में नपु सक वेद व अपगत वेद छोड़ दिया है सो मूल ग्रन्थ से जानना चाहिये ज्ञानमार्गण मे मनपर्यय के साथ सयोग और अयोग का खाना बना दिया है । उसे काट कर ठीक कर लेना चाहिये ।

ପ୍ରାଚୀନାବ୍ୟକ୍ତିର ପ୍ରକୃତି

— ସମ୍ବନ୍ଧ ଜାଗାରେ ଲୋକର ପ୍ରମାଣିତ

— ୧୯୫୩ ମେସର୍ରେ (୧୦୯)

— ପ୍ରକୃତି (୧୦୯)

୧ ଲାଖ ୨୦୦୦୦ =

୧ ଲାଖ

ଲାଖରେ ୧୦

୧ ଲାଖ ୮୮ (୧୦୯)

ଲାଖରେ ୧୦ ଲାଖରେ ୧

୧ ଲାଖ ୬୫ (୧୦୯)

୬୫ + ୧୬୦୭

୬୫ ୮୫

+ ୧୬୦୭ ୧୬୦୭

— ୬୫ ୮୫ ୧୬୦୭ ୧୬୦୭ ୧୬୦୭

ଏହାରୁଙ୍କିମୁଣ୍ଡି ଉପରେ ୧୬୦୭ ଲାଖ ୮୫ ଲାଖ ୧୦୯ । ଏହାରୁଙ୍କି ଶବ୍ଦରେ
ଏହାରୁଙ୍କି ଶବ୍ଦରେ ଏହାରୁଙ୍କି ଶବ୍ଦରେ ଏହାରୁଙ୍କି ଶବ୍ଦରେ ଏହାରୁଙ୍କି ଶବ୍ଦରେ

୧ ଲାଖ ୮୫ ଲାଖ

भूमिका

(चौर प्रमण)

माव कथन इस ग्रन्थ में, द्रव्य कथन नहिं लेय ।
शब्द अर्व कर भ्रम गहे, तिनके मति न विशेष ॥

इस ग्रन्थ का धीर जिनेश किया—धीरमद्वधरसेनाचार्य
के रिष्ट धीर पुष्पदात और भूतपली ने । यह ग्रन्थ किस अनुयोग
का विषय है ।

जिन मत में अनुयोग आर होते हैं—प्रथमानुयोग चरणानुयोग,
करणालुयोग द्रव्यानुयोग । इसमें अमरा प्रत्येक का हेतु अदान आच
रण व्यवहार जीव का ज्ञान और पारमार्थिक जीव का ज्ञान कराना
है । आदि वे दो अनुयोगों में द्रव्य का और अन्त के दो में भाव वा
कथन है । किन्तु करणानुयोग में द्रव्य का नाम लेकर विधान किया
जाता है कि ये द्रव्य के भाव हैं जबकि द्रव्यानुयोग, में उन भावों
का नियेध किया जाता है कि ये द्रव्य के भाव नहीं हैं । उपर्युक्त
अनुयोगों में से यह प्रथम चरणानुयोग का विषय है ।

एवं ग्रन्थ का विषय क्या है ? मागणा और गुणस्थानों में स्थित
जीवों की साम्या आदि का ज्ञान कराना ।

इससे लाभ क्या है ? इससे यह लाभ है कि ज्ञा अनुनति 'तो मैं
मैं एड़ा सम्म मैं जाय रहो जग मार्ही' इत्यादि जीयाजीव में
भेद नहीं करते उसके वेधार्थ व्यवहार जीव के स्वरूप का निरूपण
किया गया है । मागणा १४ होती है । इनमें द्रव्य (आधार) और
भाव (आधेय) का भेद किया जावे तो जिस तरह भाव मागणा
वे १४ भेद होते हैं उसी तरह द्रव्य मार्गणा के भी १४ भेद हो
सकते ह ।

जैसे मनुष्यादि शरीर को गति, स्पर्शनादि इन्द्रिय वे चि ह पे। इन्द्रिय, वस स्थान जीवों के शरीर को वाय, द्रव्य मन आदि को योग और स्त्री आदि के वाया ग्रिह वा स्त्री आदि वेद इत्यादि द्रव्य मारणा ।

मनुष्यादि प्रहृति के उदय को गति, स्पर्शनादि के स्थोपशम को इन्द्रिय, वस स्थान कर्म के उदय को वाय, भाषमन आदि के स्थोपशम को योग तोर स्त्रा आदि व भाय को स्त्रा आदि वेद इत्यादि द्रव्य मार भाव मारणा ।

इन द्वय और भाव भावणाओं में सभी जपह समानता है कि तु वेद मारणा में असमानता है जैसे स्त्री स्त्री में द्रव्य वेद से समान ही होता है कि तु भाव वेद किसी ग्रावे पुरुष वेद, स्त्रा वेद, और नपुरुष घट द्वा सक्त है इत्यादि । यदि द्रव्य के आधित वल्लन किया जाता हो प्रत्येक भाव घट तीन प्रकार के द्रव्य वेद के आश्रय पाइ जान वाला वेद मारणा का कथन तीन प्रकार क अनिरित ह प्रकार या करना पड़ता और उसकी सख्यादि का विस्तार भा उसी तरह करना पड़ता इससे निष्प्रयोजन प्राय को विस्तार होता । क्योंकि द्रव्य से उसार एवं परमाय नहीं होता कि तु भाव स होता है इसलिये भाव का कथन किया गया है ।

सूलामा तात्पर्य यह है—कि पाघबैं गुणस्थान तक तीनों द्रव्य वेदों क आधित इत्यादि वेद पाये जाते हैं लक्षित घुठबैं गुण स्थान स आत तक द्रव्य पुरुष क आधित हो तोना भाव वेद पाये जाते हैं ऐसा आश्रय स्वयं निकलता है पर यहा द्रव्य वेद की अपेक्षा नहीं भी गई ।

प्रकाशक और प्रकाशन परिचय

भी बाबूलालजी नम्यरदार (फम भोगचांद्र घजलाल) भोपाल थी जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों में स है। आप प्राय सखार के सभी विभूतियों से परिपूर्ण हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। आपकी शृङ् भाता गगाधाई जी को धर्म में प्रगाढ़ प्रेम है। अचानक माताजी नेत्र विहीन हो गई जिस से आप विशेष दुःखों हुये और नश चिकित्सा योग्य न होते हुये भी भाकु प्रेम से प्रेरित होकर इदीर चिकित्सा हेतु के गये। चिकित्सा से निराश होकर यदवानी आदि सिद्ध हेतुओं की यात्रा करके घर लौटे। इसी दीच में अनेक अतिशय के धारी भी १०५ खुल्लां छोरसागर जी महाराज आध्यात्म वाणी के प्रकृत सशोषनाव भोपाल पधारे। भापाल समाज पर महाराज के सुमनुर व सरल प्रथान द्वारा अपूर्ण प्रभाव फैला यहां तक कि भगवान भी नमिनाथ स्वामी का विशाल मर्दिर जो दो साल स बगैर प्रतिष्ठा के था उसका पच कल्याण प्रतिष्ठा हुई उसी अवसर तप इथा एक क समय विशाल जैन समुदाय का इर्ष्य ध्वनि क द्याच उक्त खुल्लक जी महाराज न मुनियत धारण किया। इस घटना से प्रेरित होकर जैन समाज न भोपाल में ही चतुर्मास कराया थ समाज न प्रथाध हेतु एक समिति का निर्माण किया। उस समिति के मात्री था बाबूलाल जी नियुक्त हुये।

एक समय जब महाराज भी धबल सिद्धात में विद्याद प्रस्त लेखर "शाद" का निर्णय कर रहे थे। उसे देव धी बाबूलाल जी को अपनी भाता जी के नव विद्वानता का याद आ गई। तब उहोंन भाता जी के दर्शनावरणी कर्म क ह्यापश्यमार्य इस ग्रन्थ का अपनी ओर स प्रकाशित कराया।

आप का ही सदृ परणा के फलस्वरूप आज हमें भरल, सप्ट और सक्षेप रूप में इस आगमबाणा जैस रहस्य एवं महस्व पूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन करन का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

सूरजमन जैन विद्वान, भोपाल

शब्द-कोष

अभ्युर्त—आदली में उपर और २ पक्षों से पक्ष समय कम काल को कहते हैं।

अतीत—१ भूत काल, २ दीना हुआ।

अनागत—१ भविष्य काल २ आने वाला।

अनादि अस्ति—१ आदि अस्ति रहित २ जो कभी पूरा न हो।

अनादि शान्ति—अनादि हाइर भी अंत कहित।

अनिद्रिय—१ इंद्रिय रहित, २ जान लैवी।

अनियृतिकरण—१ समार भाव, २ चादर क्षय के उदय की ६^२ ३ भीमे गुणस्थान पा नाम।

अनुभय—संवादत्व भृत।

अपयास—१ अपूर्ण, २ यगीर प्रयात की पूष्टता से रहित।

अपूर्वकरण—१ जो मात्र पहिले कभी न मधे हा २ अनाले, ३ विरिप्र।

अथपुद्युग्म परिवर्तन—असख्यत कालवत्।

अपसरिणी—१ अपसरिणी, २ निक काल में उत्तरासर आयु आदि की हानि होती नाम ३ हास युत, ४ हानि युत।

अधार काल—१ अपहृत काल, २ पूरा काल।

असायत सम्पदादि—१ देश समय भक्ति गंयम से रहित सदाचारी, २ चतुर्य गुणस्थानेवर्णी ३ अपन सम्पदादि।

आयाम—जगती वाल के समय का फ्रमाण।

आदकी—असख्यत समय वाली मख्या।

उत्सपिणी—अपसरिणी से उत्तर अथ।

उपयुक्त—ऊपर कुछ हुआ।

उपशान—१ इंद्रिय निषेद, नियुक्ति क्षय उपराम का प्राप्त हो चुकी है।

कमण्डाययोग—१ कम याग, २ सब शरीरों की उत्तरति का धारण ।

कोटाकोड़ाकोटो—करोड़ दा पार करोड़ से गुणित सरथा ।

कोटाकोड़ाकोड़ाकोटो—करोड़ को तीन चार करोड़ से गुणित सरथा ।

गुणदानि—गुणारार रुप हीन हीन द्रव्य निसमें पाये जावें ।

घन—लग्नाँ, चौहाँ और ऊचाइ भ समान किसी मख्या को तीन गार
परस्पर गुणित करने पर प्राप्त सरथा जैसे, $4 \times 4 \times 4 = 64$ ।

जगप्रतर—नग भेणो वा वग ।

जगधेणी—अद्वापल्य की अधच्छेद राशि के असख्यातरे माम भाष
घनांगुलों को रखकर उ हैं परस्पर गुणित करने पर प्राप्त राशि ।

छुदोपव्यापना—पादों का प्रायशिचत लेहर पुन भत धारण करने को
छुदोपव्यापना कहते हैं ।

निवृत्त पर्याप्त—१ पूण हने वाला, २ शरीर पकापूर्ण हने वाला ।

पद्याप्त—१ पूण, २ शरीर पद्याप्त की पूर्णता सहित ।

परिद्वार विशुद्धि—हिंसादिनिवृति दिसा रहित निमल प्रवृत्ति ।

पल्य—४४ अर प्रमाण सख्या का पल्य कहते हैं —

पल्यशत पृथक्त्व—तान ती पल्यों से अधिक व नी ही पल्यों से कम ।

पूवकोटि—पूर को एक करोड़ से गुणा करने पर प्राप्त सरथा ।

पूर्व—८४ पूवाङ्ग का एक पूर्व होता है ।

पूवाङ्ग—८४ लाख वर वाल को पूवाङ्ग कहते हैं ।

पूर्वकोटि पृथक्त्व—तीन पूर्व कोटियों से अधिक व नी पूर्वकोटियों से कम ।

प्रतिपद्म—१ प्राप्त, २ स्थित

प्रतिभाग—१ भानक २ भागदार ।

मनुष्यनी—भाव स्त्री ।

मार्गला—१ जिनम जीवों को जाना चाहे २ जिनस आन स्तोत जाय ।

मास पृथक्त्व—जीन मास से अधिक व नी मास से का ।

यथारथात—माइनीय उपराम अधरा द्वय की अवस्था ।

योनिमती—विषेनाथी ।

रुपाधिक—एक अक से अरिक ।

लाघ—ग्राम हुआ ।

लाघपयातक—१ अप्रयात, २ जिसका पयात पूरा न हो ।

लोक नासी—प्रस नाला ।

बग—समान सरायाश्री का गुणन+ल ।

बगमू—विवित सरया जिसके बग रूप दा जैस २४ वा २ ।

बप्र पृथक्त्व—जीन वप से अधिक व नी बप स कम ।

विप्रद गति—रमव गति ।

विभग झानी—कुअवधि ।

विश्वभ सूची—जीन तर्ग के बाच का विस्तार ।

शुनपृथक्त्व—जीन भी से अधिक व नी सी न बम ।

शुनाशारूप—इक प्रक र का नाम, २, प-८ विशेष ।

सचित—इकड ।

सयनासयन—१ कुछ सयम तुळ्य अमर्यम २ भिभित, ३ दंरा विरति ।

सम्यग्मित्यादिट—१ भिभ २ समीचीन व मिठ्या भद्रान से भिभित ।

सागर—१० काढ़ाकाढी पह्य रा १ सागर ।

सागरशत पृथक्त्व—जीन भी सागर से अधिक व नी सी सागर से कम ।

सादिश्यात—आदि आन सहित ।

साधिक—कुठ अधिक ।

सूचागुल—अद्वाप्लय नी अधच्छु राहि प्रमाण पल्यो का रखकर प
स्पर गुरुणत करने पर ग्राम सरया ।

सूचमसाम्पराधिक—कैल सूचम लोम का उदय ।

स्त्री-मुक्ति निषेध

इस भग्न परम्पर नहिं चहे जो धारे जिन धर्मे ।
 किर क्यों नारी लिंग कौन पृथक् बताया भग्न ॥१॥
 नारी चित्त में अधिक है, राग द्वेष भय ग्लान ।
 मायाचार विचित्र है, इससे कम न छान ॥ २॥
 विषय भोग छलजा अधिक चित्त गिरुद्ध न गात ।
 हेवे सदसा इहाँ के मासिक लोह पात ॥ ३॥
 रिथिद्वाचरण स्वभावसे, रिथिद्वा हैं वर्यान ।
 इस कारण तिन भाव में, पुरुषार भत जान ॥४॥
 नारि ये नि कुच नाक में, धार नाभि के थन ।
 सूदम नर उत्पत्ति लखी, जिननर कवल शान ॥५॥
 इन एकहु विन दोप के, दन नारि जग पूर ।
 ढक्का शरीर न मनुज सम, इनसे वर्ण जरूर ॥६॥
 कोई दन गुद अर सूत पाठ युत होय ।
 घोर घरण आचरति यदि, तदयिन मुका होय ॥७॥
 इस कारण से पृथक् है वर्ण सहित तिय भेष ।
 योग्य चरण युन अजिका कुलवय रूप विशेष ॥८॥

— — — — —

—इन दोहों का आशय द्राय खी स है ।

पर्याप्तपर्याप्त दण्ड

नाम गति	मिथ्या •	साकाशन	मिथ्या	अमन्त्र •	सुधमा मयम	मह सयु
सामान्य नारका	पर्याप्ता पर्याप्त	पर्याप्त	पर्याप्त	पर्याप्ता पर्याप्त	×	×
प्रथम गृष्णी	"	"	"	"	×	×
शुप गृष्णी	"	"	"	पर्याप्त	×	×
सामान्य तिर्यच	"	पर्याप्ता पर्याप्त	"	पर्याप्ता पर्याप्त	पर्याप्त	×
सामान्य पञ्चदिव्य निवृत्ति तिर्यच	"	"	"	"	"	"
योनमती	,	,	,	पर्याप्त	","	"
सामान्य मनुष्य		,	,	पर्याप्ता पर्याप्त	","	पर्याप्त
निवृत्ति पर्याप्त मनुष्य	","	,	","	","	","	"
भाव मनुष्यली	","	","	","	पर्याप्त	","	"
सामान्य देव		,	","	पर्याप्ता पर्याप्त	×	"
नीधम से ग्रीवेन तक	,	","	","		×	"
अनुदिश से अत तक	×	×	×	","	×	"
भगवनक श्रीनन्द ऐदा	पर्याप्ता पर्याप्त	पर्याप्ता पर्याप्त	पर्याप्त	पर्याप्त	×	"



॥ श्री परमात्मने नम ॥

श्री १०८ मुनि क्षीरसागरी महाराज प्रणीत

आगमवारंगी.

प्रथम भाग.

मंगलाधरण श्रीत प्रथ पत्तिचय

सोऽनमि के वीर जिनेश, घबला का आधार ले।
जीव थान उपदेशा, भापा मय श्रुत मे करुँ ॥

एमो अरिहताण, एमो सिद्धाण, एमो आडरियाण
एमो उवजभायाण एमो लोए सब्बसाहण ॥१॥

जीमो के चौदह गुणस्थानों को जानने ये लिये पनि नै
मार्गणा स्थान जानना चाहिये ॥२॥ ये कौन हैं ॥३॥ गति,
इन्द्रिय, काय, योग, वद, कपाय, शान, सप्तम, दर्शन, लेश्या,
भव्यत्व, सम्येकत्व, मैनी और आहार ये चौदह मार्गणा हैं ॥४॥

इन मार्गणामों में चाँदह गुण स्थान जानने के लिये आगे कहे गये आठ अधिकार समझना चाहिये ॥५॥ वे कौन हैं? ॥६॥ सद, सर्वा, क्षेत्र, स्पर्शन, घाल, अन्तर, भाव, अल बहुत्व ये आठ अधिकार हैं ॥७॥ सत् कथन, सामान्य और रिशेप की अपेक्षा से दो प्रकार का है ॥८॥ सामान्य स मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥९॥ मम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥१०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥११॥ अस्यत सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥१२॥ सयतासयतजीव होते हैं ॥१३॥ मम्च सयत जीव हात है ॥१४॥ अप्रमत्त-सयत जीव होते हैं ॥१५॥ अपूर्वकरण चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१६॥ अनिष्टकरण चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१७॥ सूक्ष्म सापरा-पिक चढ़ने वाले उपशमक और क्षपक जीव होते हैं ॥१८॥ उपशमांत कपाय जीव होते हैं ॥१९॥ क्षील-कपाय जीव होते हैं ॥२०॥ सयोग केवली जीव हात है ॥२१॥ अयोगरेवली जीव होते हैं ॥२२॥ सिद्ध जीव होते हैं ॥२३॥

इति सामान्य गुणस्थान फग्न

१

रिशेप गतिमार्गणा थी अपेक्षा नरकगति, तियंचगति, मनुष्य-गति द्वयगति और सिद्धगति होती है ॥२४॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर अस्यत गुण स्थान तर नारकी होते हैं ॥२५॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर सयतासयत, गुण स्थान तक तियंच होते हैं

॥२६॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक मनुष्य होते हैं ॥२७॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर असत्यत गुणस्थान तक देव हीते हैं ॥२८॥ एकेन्द्रिय से लेकर असेनी पचेन्द्रिय तक केवल तिर्यंच होने हैं ॥२९॥ सेनी मिथ्यादृष्टि से लेकर असत्यत गुणस्थान तक चारोंगति वाले होते हैं ॥३०॥ सत्यतासत्यत गुणस्थान में तिर्यंच और मनुष्य होते हैं ॥३१॥ आगे केवल मनुष्य होते हैं ॥३२॥

इति गति मार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा की अपेक्षा एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तदन्द्रिय, चौड-
न्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीव होते हैं ॥३३॥ एकेन्द्रिय
जीव दो प्रकार के होते हैं वादर और सूखम वे दोनों पर्याप्त
और अपर्याप्त होते हैं ॥३४॥ दोइन्द्रिय से लेकर चौइन्द्रिय
तक वे जीव पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३५॥ पचेन्द्रिय जीव दो
प्रकार के होते हैं सेनी और असेनी वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त
होते हैं ॥३६॥ एकेन्द्री से लेकर असेनी पचेन्द्रिय तक मिथ्यादृष्टि
नामक प्रथम, गुणस्थान, में ही होते हैं ॥३७॥ इन असेनी
पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोग केवली गुणस्थान तक
पचेन्द्रिय जीव होते हैं ॥३८॥ उनसे पर मिद्द होते हैं ॥३९॥

इति इन्द्रिय मार्गणा

फाय मार्गणा की अपेक्षा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अनि-
कायिक, वायुकायिक, घनस्तरिकायिक, व्रसकायिक और काय

गद्वित जीव होते हैं ॥४०॥ पृथ्वीकायिक मे लेकर यायुक्तायिक तुक जीव दो प्रकार के होते हैं बादर और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४१॥ बनस्ततिकायिक जीव दो प्रकार के होत हैं प्रत्येक शरीर और साधारण गरीर। प्रत्येक दो प्रकार के होत हैं पर्याप्त और अपर्याप्त। साधारण ने प्रकार के होत हैं बादर और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४२॥ त्रिसक्तायिक दो प्रकार के होते हैं पर्याप्त और अपर्याप्त ॥४३॥ पृथ्वीकायिक से लेकर यनस्ततिकायक तक के जीव मिथ्यादृष्टि नामक प्रथम गुणस्थान मे ही होते हैं ॥४४॥ दोहन्द्रिय से लेकर अयोगकरली तक त्रिस जीव होते हैं ॥४५॥ बादर एकहन्द्रिय से लेकर अयोगकरली तक रात्र कायिक जीव होते हैं ॥४६॥ उनसे परे सिद्ध होते हैं ॥४७॥ , , ,

इति काय मार्गणा

योग मार्गणा की अपेक्षा मनोयोगी, वचनयोगी, काययोगी और अयोगी जीव होते हैं ॥४८॥ मनोयोग चार प्रकार या दोग है सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ॥४९॥ सत्यमनोयोग और अनुभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग केरली तक होते हैं ॥५०॥ असत्यमनोयोग और उभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण क्षयाय तक होते हैं ॥५१॥ वचनयोग चार प्रकार का होता है, मत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग,

और अनुभयवचनयोग ॥५२॥ अनुभयवचनयोग दोडन्द्रिय से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥५३॥ मत्यवचनयोग सेवी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥५४॥ अमत्यवचनयोग और उभयवचनयोग, सेवी मिथ्यादृष्टि से लेकर शीणस्थाय गुणस्थान तक होते हैं ॥५५॥ काययोग सात प्रकार का होता है—आदाग्नि, आदारकमिश्र, वैक्रियकमिश्र, आहारस, आहारकमिश्र और कार्मण ॥५६॥ नियन्त्र और मनुष्या के आदारिक और आदारिकमिश्रकाययोग होता है ॥५७॥ देव और नारकियों के वैक्रियक, वैक्रियकमिश्रकाययोग होते हैं ॥५८॥ आहारक और आहारकमिश्र ऋद्धिधारी मुनियों के होता है ॥५९॥ ग्रिहगति गाले जाँघों के तथा समुद्रान में प्राप्त केवली के कार्मणकाययोग होता है ॥६०॥ आदाग्नि और आदारिकमिश्र एन्ड्रिय से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥६१॥ वैक्रियक और वैक्रियकमिश्र सेवी मिथ्यादृष्टि से लेकर अमयत गुणस्थान तक होता है ॥६२॥ आहारस और आहारकमिश्र एन्ड्रिय से लेकर मयोग केवली तक होता है ॥६३॥ कार्मणकाययोग एन्ड्रिय से लेकर मयोग केवली तक मनोयोग, उचनयोग और काययोग होता है ॥६४॥ ने इन्द्रिय से लेकर असेवीपचन्द्रिय तक उचनयोग और काययोग होता है ॥६५॥ एन्ड्रिय जीवों के जाययोग

होता है ॥६८॥ नाययोग पर्याप्तकों के और अपर्याप्तकों के होता है ॥६९॥ छठ पर्याप्तिया और छह अपर्याप्तिया होती है ॥७०॥ वे सैनी मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुण स्थान में होती है ॥७१॥ पान पर्याप्तिया और पांच अपर्याप्तिया होती है ॥७२॥ वे दोइन्द्रिय से लेकर असैनीपञ्चेन्द्रिय तक होती है ॥७३॥ चार पर्याप्तिया और चार अपर्याप्तिया होती है ॥७४॥ वे एकेन्द्रिय जीवों के होती है ॥७५॥ आंदार्मिकसाययोग पर्याप्तकों के और आंदारिकमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७६॥ वैक्रियकसाययोग पर्याप्तकों के और वैक्रियकमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७७॥ आहारकसाययोग पर्याप्तकों के और आहारकमिथकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७८॥ मामान्य से नार्की जार मिथ्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥७९॥ सासादन और सम्यग्मित्यादृष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८०॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी म नार्की होत हैं ॥८१॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातर्वपृथ्वी तक नार्की मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८२॥ सासादन सम्यग्मित्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होत हैं ॥८३॥ मामान्य से तिर्यंच, मिथ्यादृष्टि, मासादन और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८४॥ सम्यग्मित्यादृष्टि और भयतामयतगुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८५॥

इमी प्रकार मामान्य पचेन्द्रियतिव्यंच और निर्त्तिपर्याप्तपचेन्द्रियतिव्यंच जात है ॥८६॥ यानिमती पचेन्द्रियतिव्यंचमिथ्यादृषि और मासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८७॥ सम्यग्मिथ्यादृषि, अमयत और सयतामयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८८॥ मामान्य से मनुष्य मिथ्यादृषि, सासादन और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८९॥ सम्यग्मिथ्यादृषि, मयतामयत और मव सयत गुणस्थानों में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९०॥ इमी प्रकार निर्त्तिपर्याप्त मनुष्य होते हैं ॥९१॥ मनुष्य मिथ्यादृषि और मासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती है ॥९२॥ सम्यग्मिथ्यादृषि, अमयत मयतामयत और मव मयत गुण स्थानों में नियम से पर्याप्त होती हैं ॥९३॥ सामान्य से नय मिथ्यादृषि, सासादन और अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९४॥ सम्यग्मिथ्यादृषि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९५॥ भूनवासी, व्यतर और ज्योतिषी दद्व और ममस्तु ददिया मिथ्यादृषि और मामादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती है ॥९६॥ मम्यग्मिथ्यादृषि और असयत गुणस्थान में नियम में पर्याप्त होती है ॥९७॥ सांधर्म स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयरु तक ऐ देव मिथ्यादृषि, मामादन और अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९८॥ सम्यग्मिथ्यादृषि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९९॥ नय भूदिशों से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक

अमयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होत है ॥१००॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीरेद, पुरुषरेद, नपुमरेद और इन रहित जीव होते हैं ॥१०१॥ स्त्रीरेद और पुरुषरेद याले जीव असर्वनी मिथ्याटप्ति से लेन्द्र अनिगच्छिकरण गुणस्थान तर होते हैं ॥१०२॥ एवेन्द्रिय से लेन्द्र अनिगच्छिकरण गुणस्थान तर नपुसक वेद याले होते हैं ॥१०३॥ आग इन रहित जीव होते हैं ॥१०४॥ नाभका जीव चारों ही गुणस्थानों में नपुमक वेदी होते हैं ॥१०५॥ तियंच एवेन्द्रिय मतोऽर्थात् एवेन्द्रिय तर नपुमर वेदी होते हैं ॥१०६॥ अर्गनी पवेन्द्रिय से लेन्द्र अयतामयत गुणस्थान तर तीनों इन याले शेषे हैं ॥१०७॥ मनुष मिथ्याटप्ति गुणस्थान से लेन्द्र अनिगच्छिकरण गुणस्थान तर तीना इन याले होते हैं ॥१०८॥ आगे वेद रहित जीव होते हैं ॥१०९॥ दृश्य चारा ही गुणस्थानों मध्यरेद और पुरुषरेद याले होते हैं ॥११०॥

ननि वद मागणा

पर्याप्तमार्गणा म ऋषकृपायी, मानस्पायी मायास्पायी, लोभस्पायी और क्षय रहित जीव होते हैं ॥१११॥ एवेन्द्रिय से लेन्द्र अनिगच्छिकरण गुणस्थान तर ऋषकृपायी मानस्पायी, मायास्पायी जीव होते हैं ॥११२॥ एवेन्द्रिय से लेन्द्र मृक्षमायग्नय गुणस्थान तर लोभस्पायी जीव होते हैं ॥११३॥ कृपायग्नित जीव उपजानक्षय से लेन्द्र अयोगी

गुणस्थान तर हात है ॥११४॥

इनि पापय मापला

ग्रानमार्गणा थी अपेक्षा कुमति, कुथ्रुति, कुअवधि, मति, थ्रुत, अवगि, मन पर्यय और लेन जान वाले जीर होते हैं ॥११५॥ एकेन्द्रिय स लेन सामादन गुणस्थान तर कुमति, कुथ्रुतस्थान वाले होते हैं ॥११६॥ कुअवधिनान संनी मिथ्यादपि और सामादन जीरों के होता है ॥११७॥ पर्याप्तसौं ये ही होता है अपर्याप्तवर्ते के नहीं हात हैं ॥११८॥ मन्यग्निध्याहपि गुणस्थान में आनि के तीनों ही ज्ञान कुमति, कुथ्रुत और कुअवधि से मिथित होत है ॥११९॥ मति, थ्रुत और अवगिनी असयत स लेन खीणस्पाय गुणस्थान तर होते हैं ॥१२०॥ मन पर्यद ज्ञानीजीर प्रमत्तसयत म लेन खीणस्पाय गुणस्थान तर होते हैं ॥१२१॥ पेततज्ञानीजीर मयोगरेवली अयोगरेवली और मिछ होत हैं ॥१२२॥

इनि ग्रानमार्गणा

मयम मार्गणा को अपेक्षा मामायिर, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, मूलमापराय, यवारयात, मयतामयत और अन्नयत जीर होते हैं ॥१२३॥ मयत जीर प्रमत्त से लेन अयोगरेवली गुणस्थान तर होते हैं ॥१२४॥ मामायिर और छेदोपस्थापना मयतजीर प्रमत्तमयत से लेन अनिवृत्तिरण गुणस्थान तर होते हैं ॥१२५॥ परिहार-विशुद्धि जीर प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान म होत है ॥१२६॥ मूलम मापरा सयत जीर एव-

सूक्ष्म मापगाय गुणस्थान म हा होत है ॥१२७॥ यमर्यात जीव उपगत कृपाय से लेकर शयोगरेती गुणस्थान तक होते ह ॥१२८॥ सयग्रामयत जीव एक सयनामयत गुणस्थान मे हा होते हैं ॥१२९॥ अमयतजीव एकन्द्रिय से लेकर अमयत गुणस्थान तक होते ह ॥१३०॥

इति स्वयम भार्गणा

दर्शनभार्गणा से चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अपविदर्शन और सेवल दर्शन जाले जीव हात ह ॥१३१॥ चक्षुदर्शन जाले जीव चाँडन्द्रिय से लेकर क्षीणमपाय गुणस्थान तक होत है ॥१३२॥ अचक्षुदर्शन जाले जीव एकेन्द्रिय से लेकर क्षीणमपाय गुणस्थान तक होत है ॥१३३॥ अपविदर्शनजाले जीव अमयत से लेकर क्षीणमपाय गुणस्थान तक हात ह ॥१३४॥ सेवलदर्शन जाले जीव मयोगरेती, शयोगरेती और मिछ हात ह ॥॥१३५॥

इति र्जन भार्गणा

लेश्यामार्गणा जी अपक्षाकृष्ण, नील, राष्ट्रात, पीत पद्म, शुक्ल लेश्यामाल और अलेश्यामारे जीव होत है ॥१३६॥ ठुण्ड जाल और काशात लेश्यामाल जीव एकेन्द्रिय मे लेकर अमयत गुणस्थान तक होत है ॥१३७॥ पीत और पद्मलेश्या जाल जार सेनी मिश्यादृष्टि मे लेकर अप्रभत्त गुणस्थान तक हात है ॥१३८॥ शुक्ल लेश्यामाले नीप सेनी मिश्यादृष्टि मे लेकर मयगवर्ली गुणस्थान तक होत है ॥१३९॥ आग लेश्या-

गहित जीव होते हैं ॥१४०॥

इनि लाया मार्गणा

भयमार्गणा की अपेक्षा भव्य और अभव्य जीव होते हैं ॥१४१॥ भव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर अयागिसेवली गुण-स्थान तक होते हैं ॥१४२॥ अभव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर मैरी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान तक होते हैं १४३॥

इनि भाय मार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा की अपेक्षा क्षायित्र, पेदन, उपशम, नामादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि आर मिथ्यादृष्टि जीव हात ह ॥१४४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव अमयत से लेकर अयागकेता गुणस्थान तक होत ह ॥१४५॥ उठकमस्यदृष्टि जीव इमयत से लेकर अपमत्ता गुणस्थान तक हात ह ॥१४६॥ उपशम सम्यग्दृष्टि जीव अमयत से लेकर उपशमा क्षाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१४७॥ मामान्तरमस्यदृष्टि जीव एव मामादन गुणस्थान मे ही हात है ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान मे ही होते हैं ॥१४९॥ मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रिय से लेकर मैरी मिथ्यादृष्टि तक होत है ॥१५०॥ मामान्य म नार्ती जीव अमयत गुणस्थान मे क्षायित्र ऐस आर उत्तमसम्यग्दृष्टि हात है ॥१५१॥ राष्ट्रकार प्रथम प्रदाक नार्ती हात ह ॥१५२॥ दूर्मी पृथ्वी से लेकर सातर्वा पृथ्वी तक नार्ती जीव अमयत गुणस्थान मे क्षायित्रसम्यग्दृष्टि नरी हात आप रे ता मम्यग-

दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५३॥ तिर्यंच असयत गुणस्थान म
क्षायिर् इति और उपगम सम्यग्दृष्टि होने हैं ॥१५४॥
नयनामयत गुणस्थान में क्षायिरम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं,
शप रे दो मन्यग्दर्शनों में युक्त नहीं है ॥१५५॥ इसी
प्रकार प्रेन्द्रिय निर्यंच और पञ्चत्रियनिर्वृत्तिपर्याप्तिर्यंच
होते हैं ॥१६॥ योनिमनी परन्द्रिय तिर्यंच में असयत और
नयनामयत गुणस्थान में क्षायिरम्यग्नर्गन नहीं होता,
शप के ना मन्यग्दर्शना में युक्त होते हैं ॥१५७॥ भनुप्य
असयत, नयनामयत और सदसयत गुणम्यानों में क्षायिरवेदव
और उपगम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५८॥ इसीप्रकार निर्वृत्ति
प्राप्त मउष्य आग समुच्छायियों में भी जानना चाहिये ॥१५९॥
प्रथ असयत गुणस्थान में क्षायिर, रेति और उपगम सम्यग्दृष्टि
होता है ॥१६०॥ भवनदासों, व्यतर और ज्योतिषी दृष्ट
तया समस्त दिवियाँ असयत गुणस्थान में क्षायिर मन्यग्दर्शन
जाती नहीं होती हैं एप न दो मन्यग्दर्शनों जाती
होती है ॥१६१॥ सांघर्षस्वगम लमर सर्वार्थसिद्धि तर न दृष्ट
असयत गुणस्थान में क्षायिर प्रदन और उपगम मन्यग्दृष्टि
दाता न है ॥१६२॥

इनि सम्यन्त्र मोर्गता

मैना मार्गणा री अपक्षा सेनी और अमैनी जार होत
है ॥१६३॥ नैनी नीर मिथ्यादृष्टि में लक्ष रीणपाय गुण-
स्थान तर होते हैं ॥१६४॥ ऋसनीं ज्ञाप एमेन्द्रिय से लेमर

स्वसैनीत्पचल्न्द्रिय तक होते हैं ॥१६५॥ औहारक मामणा सु
भद्रारक और भगवाहारक जीव होते हैं ॥१६६॥ आहारक जीव
गैर्किंद्रिय से, रोक अयोगनेमनी गुणस्थान तक होते हैं ॥१६७॥
अधिगतिष्वाले जीव, समुदार केवली, अयोगनेमनी और
सिद्धजीव अनाहरक होते हैं ॥१६८॥

इति सत् अधिगत्

अथ सत्याधिकार

मन्त्रिया कथन सामान्य और दिशेष की अपेक्षा ज्ञे दो प्राप्त हैं ॥१॥ मामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव, इनतु हैं ॥२॥ काल की अपेक्षा अनंतीनत उपसर्णी और उत्सर्णी के द्वारा पूरे नहीं होते ॥३॥ शेष की अपेक्षा अनुवानत लारु प्रमाण है ॥४॥ उपर्युक्त तीनों प्रमाणों का ब्लान ही भारतप्रमाण है ॥५॥ सासाठन से लेने संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानतेर्दल्ये के छासर्ण्यात्वे भाग भाग है इन चार गुणस्थानों में पत्येक की अपेक्षा अन्तर्सुहृत्ति से दल्य पूरा होता है ॥६॥ प्रमत्त जीव कोटि पृथक्त्व है ॥७॥ अपमत्त जीव संस्कार है ॥८॥ चारों गुणस्थानों के उपरामक ज्यवन्य की अपेक्षा, एक या दो अयवा तीन और उक्तुष्ट स्वय से योग्य होते हैं ॥९॥ काल की अपेक्षा मन्त्रित हुये सभी जीव सख्यात होते हैं ॥१०॥ चारों गुणस्थानों के सपर और अयोगनेमनी

[१४]

आगमवाणी

चीय जन्मन्य अपेक्षा एक या दो अयवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से
एकसी आठ होते हैं ॥११॥ काल की अपेक्षा सचित् हुये
मरणात् होते हैं ॥१२॥ सयोगिवेनी जीव जन्मन्य एक या
दो अयवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से एकसी आठ होते हैं ॥१३॥
काल की अपेक्षा लक्ष पृथक्त्व होते हैं ॥१४॥

इति सामान्य वृद्धन

यित्य गतिमार्गणा से नरकगति में सामान्य नारकियों में
मिथ्यादृष्टि जीव असरन्यात् है ॥१५॥ काल की अपेक्षा
असरण्यातासरण्यात, अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के द्वारा
पूरे होते हैं ॥१६॥ सेन की अपेक्षा जगभ्रतर के असरण्यात्ये
भागमोर्च अमरण्योत जगभ्रेणी प्रमाण है । उन जगभ्रेणियों
की विषभस्त्री, सूच्यगुल के प्रथम वर्गमूल को उसी के द्वितीय
वर्गमूल से गुणित करने पर नितना लब्ध आवे ज्ञतव्य
है ॥१७॥ सासादन^१ से लेकर असर्वत् गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थान में मामान्य कथन के समान हैं ॥१८॥ इसी प्रकार
प्रथम पृथ्वी में नारक जीव राशि- है ॥१९॥ दूसरी पृथ्वी
से लेकर सातवीं पृथ्वी तक प्रत्येक पृथ्वी के नारमियों में मिथ्या
दृष्टि जीव असरण्यात् है ॥२०॥ काल की अपेक्षा अमरण्याता
सरण्यात अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के द्वारा पूरे होते
हैं ॥२१॥ सेन की अपेक्षा जगभ्रेणी के असरण्यात्ये भाग
प्रमाण हैं । उस जगभ्रेणी के असरण्यात्ये भाग की ओर थे ए
है उमका आयाम असरण्यात् कोटि पोजन है, जिस अभरण्या

कॉटि योजन का प्रमाण, जंगश्रेष्ठी के सख्त्यात् चर्गमूलों के परस्पर गुणा करने से निवन्ना^{१८} प्रमाण उत्तम ही उत्तरा है ॥२२॥ सासादन से लेकर अस्यत् गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पत्त्य के असरयात्रे भाग है ॥२३॥ तिर्यच गति के सामान्यतिर्यचों में मिथ्यादृष्टि से लेकर स्यतास्यत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामान्ये फलन के समान हैं ॥२४॥ सामान्य पञ्चन्द्रिय^{१९} तिर्यच मिथ्यादृष्टि जीव असरयात है ॥२५॥ कालकी अपेक्षा असर्व्यातोसख्त्यात् अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के छारा पूरे होते हैं ॥२६॥ सेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से असर्व्यात् गुणेहीन काल से जगभतर पूर्ण होता है ॥२७॥ सासादन से लेकर स्यतास्यत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पत्त्य के असर्व्यात्रे भाग हैं ॥२८॥ पञ्चन्द्रिय तिर्यच पर्याप्ति^{२०} मिथ्यादृष्टि जीव असख्त्यात है ॥२९॥ कालकी अपेक्षा असख्त्यातासख्त्यात् अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के छारा पूरे होते हैं ॥३०॥ सेत्र की अपेक्षा देव, अवहारकाल से सख्त्यातगुणे हीन काल में जगभतर पूर्ण होता है ॥३१॥ सासादन से लेकर स्यतास्यत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव पत्त्य के असर्व्यात्रे भाग हैं ॥३२॥ पञ्चन्द्रिय तिर्यच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्त्यात है ॥३३॥ कालकी अपेक्षा असर्व्यातासख्त्यात् अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के छारा पूरे होते हैं ॥३४॥ सेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से सख्त्यातगुणे काल से

जगप्रतर पूरा होता है ॥३४॥ सामावन मे लेकर स्यतासंपर्क
गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म पूल्य क असाधने भाग
है ग ॥३५॥ पचेन्द्रिय त्रियंक अपर्याप्ति-जीव अस्त्वात् है ॥३६॥
काल की अपेक्षा । अस्त्रयातामर्ख्यात्, अपर्याप्ति-जीव
उत्सर्विणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥३७॥ सेन की अपेक्षा इन्हों
के अवदारकाल मे । अस्त्रयात्वगुणे, विन, कालका मे
जगप्रतरा पूरा होता है ॥३८॥, सामाय, मनुष्यों, मृ
मिथ्यादिएं, जीव-अस्त्रयात् हैं ॥३९॥ कालकी, अपेक्षा
अस्त्रयातामर्ख्यात् अपर्याप्तियों, शार-उत्सर्विणियों, द्वारा पूरे
होते हैं ॥४०॥ सेन-की, अपेक्षा-जगभेणी के अस्त्रयात्व
जागप्रमाण हैं, उस श्रेणी-जा आपाम अस्त्रयात् पर्याप्त सञ्जन
है । सूचयगुल के प्राप्त चर्गमूल का सूचयगुल के तुर्तीय तर्मभूत
मे, गुणित करके जो लकड़ी आवे उसे गलाकृपरूप न सरपित
करके इथाधिक जगश्रेणी पूरी होती है ॥४१॥ साम्प्रदान स लेकर
सयतासयतगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म सायात है ॥४२॥
प्रमत्त स-लेकर अयोग्यके मली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान
म सख्यात है ॥४३॥ मनुष्य, पर्याप्तों-म, मिथ्यादिएं मनुष्य,
फोड़ाकोड़ारोड़ि के क्तसर फोड़ाकोड़ाकोड़ि के तोड़े, उक्कामाहू
के लेकर और, सात घर्मत्ते नीच हैं ॥४४॥, सामादन स्फु लेकर,
सयतासयतगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म, जीव, सूख्यात
है ॥४५॥, समज से लेकर अयोग्यके गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थान म, सख्यात है ॥४६॥, मनुष्यनियों मे मिथ्यादिएं

जीव कोडाशेंडाकोडी के ऊपर और कोडाकोडाशेंडोकोडी के नीचे अठ्ठवें वर्ग के ऊपर और मानव वर्ग के नीचे मध्य की सख्त्य-भ्रमाण है ॥४८॥ मामानन्द में लेफ्टर अपोगिरेचली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव मध्यात है ॥४९॥ लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य असंरयात है ॥५०॥ कालकी अपेक्षा अमर्त्यातामर्त्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वाग पूरे होते हैं ॥५१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगथ्रेणी के असख्त्यातवें भागमेमाण है । उम जगथ्रेणी के असर्यातवें भागस्थैथ्रेणी पा आयोम असर्यात कंगड़ योजन है । 'सून्यगुल' के त्रुटीय वर्गमूल गुहित प्रथम वर्गमूल को शत्राजाल से स्थापित करके लगाधिक जगथ्रेणी पूरी होती है ॥५२॥ देवगति प्रतिपद्म सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि जीव असर्पिणित है ॥५३॥ काल की अपेक्षा अमर्त्यातामर्त्यात 'मूर्मर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा' पूरे होते हैं ॥५४॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगपतर के दोमाँ घण्ठन अर्गुलों के वर्गद्वय प्रतिभाग से देव राशि आती है ॥५५॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असर्यत सम्यग्मिथ्या एव्य के अमर्त्यातवें मांग है ॥५६॥ भवनंशार्मा देवों में मिथ्यादृष्टि जीव अमर्त्यात है ॥५७॥ कालकी अपेक्षा अमर्त्यातामर्त्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वाग पूरे होते हैं ॥५८॥ क्षेत्र की अपेक्षा असख्त्यात जगथ्रेणी प्रमाण हैं जो असख्त्यात जगथ्रेणियों जगपतर के असख्त्यातवें भागप्रमाण हैं उन अमर्त्यात जगथ्रेणियों की विष्कभमूर्ची, सून्यगुल को मून्यगुल

रे परम गर्गमूल से शुणित करके जो लाय, आये, उतनी है ॥५६॥ मासाद्वन्, सम्यग्मिध्याद्विषि, और असयत् सम्यग्मिध्यि मामान्य, घरन के समान हैं- ॥६०॥ व्यन्तर द्वा म- मिध्याद्विषि जाए असख्यात् हैं ॥६१॥ कालकी अपेक्षा अपरापातासख्यात् अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥६२॥ क्षेत्र-की, अपेक्षा जगभतर के सरयातमौ, योजनां के गर्गरूप प्रतिभाग से राखि, आती है ॥६३॥ सामाद्वन्, -सम्मग्मिध्याद्विषि और असयत् सम्यग्मिध्यि पल्य, के असरयातर भाग हैं ॥६४॥ जोतिर्पी देवों की सूख्या मामान्य देवों की मरुत्या से छुट्कम है ॥६५॥ सौधर्य और ऐशान, फलभृतासी देवों में मिध्याद्विषि जीव असख्यात् है ॥६६॥ काहुकी अपेक्षा असख्यातामरयात् अपमर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥६७॥ क्षेत्र की अपेक्षा असरयान जगथेणी प्रमाण है। जो असरयात् जगथेणियों का प्रमाण जगभतर के असख्यातवे, भाग है उन असरयात् जगथेणियों की विष्फभमदी सूख्यगुल ने द्वितीय चर्गमूल को उत्तीय गर्गमूल में गुणा बरने पर जितना लाय आय, उतनी है ॥६८॥ मासाद्वन्, सम्यग्मिध्याद्विषि, और असयत् सम्यग्मिध्यि, पल्य के असरयातवे, भाग है ॥६९॥ सनल्कुमार से लेकर महस्तार तक ये स्वलभासी देव मानदी, परी के नारकिया ये कुरुन समान हैं ॥७०॥ आनत सलकर नव ग्रन्थयस तक विमानवामी देवों में मिध्याद्विषि से लाइ, असयत् गुणस्थान तक पत्ये,

गुणस्थान में पल्य के असर्वातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीव-गणियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पल्य पूरा होता है॥७१॥ अनुदिश विमान से लेकर अपराजित विमान तक असंयत सम्यगदृष्टि देव पल्य के असर्वातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीवराशियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पल्य पूरा होता है॥७२॥ मर्वार्थसिंदि विमानवासी देव सूख्यात है॥७३॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रियमार्गणा से सर्वप्रकार के एकेन्द्रिय जीव अनन्त है॥७४॥ कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते हैं॥७५॥ सेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोकमाण हैं॥७६॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरन्द्रिय जीव तथा उन्हीं के पर्याप्त अपर्याप्त जीव असर्वात हैं॥७७॥ काल-की अपेक्षा, असर्वात, अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों वे द्वारा पूरे होते हैं॥७८॥ सेत्र की अपेक्षा सूख्यगुल के असर्वातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगमत् पूरा होता है पर्याप्तों से सूख्यगुल के असर्वातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगमत् पूरा होता है॥७९॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त, मिथ्यादृष्टि, असर्वात है॥८०॥ कालकी अपेक्षा असर्वातासर्वात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं॥८१॥ सेत्र की अपेक्षा सूख्यगुल के असर्वातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से असर्वातासर्वात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं॥८२॥

प्रतिभाग से जगप्रवर्त पूरा होता है ॥८३॥ सामाइन संलक्षण
अर्थायागिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में दृश्य के
असम्बद्धात्मेत्रे भाग है ॥८४॥ पचन्द्रिय अस्यात् जीव असम्बद्धात्
है ॥८५॥ कालकी अपेक्षा असम्बद्धात् संसर्यात् अपेक्षिणियों
और उत्सर्विणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८६॥ क्षेत्र की अपेक्षा
सूज्यगुल के असम्बद्धात् भाग के वर्गस्त्रे प्रतिभाग में जगप्रवर्त
पूरा होता है ॥८७॥

इति कृष्णयमार्गः ।

सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, और वायु, तथा पृथ्वी, अप, तेज,
वायु, और प्रत्येक वनस्पतिकाये के बादर अपर्याप्त जीव
वया पृथ्वी, अप, तेज, वायु, के सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त
जीव असंख्यात् लोकप्रमाण हैं ॥८८॥ पृथ्वी अप और प्रत्येक
वनस्पति के बादर पर्याप्त जीव असंख्यात् है ॥८९॥ काल की
अपेक्षा असंख्यात् संसर्यात् अपेक्षिणियों और उत्सर्विणियों
द्वारा पूरे होते हैं ॥९०॥१०॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूज्यगुल के
असंख्यतरे भाग के वर्गस्त्रे प्रतिभाग से जगप्रवर्त
पूरा होता है ॥९१॥ बादर तेजस्त्रायिक पर्याप्त जीव
असंख्यात् हैं । यह असंख्यतरे प्रमाण असंख्यात् आपलियों
के गणप हैं जो आपली के घने के भीतर आता है ॥९२॥
बादर चौथुक्त्रायिक पर्याप्त जीव असंख्यात् हैं ॥९३॥ काल की
अपेक्षा असंख्यात् संसर्यात् अपेक्षिणियों और उत्सर्विणियों
के द्वारा पूरे होने हैं ॥९४॥ अत्र की अपेक्षा असंख्यात् जग-

प्रत्यग्माण है, जो अमर्यात् जगप्रतरम्भाण लोक के सख्या-
त्वे भाग है ॥६४॥ बनस्तिकाय और निगोड़ वादर मृहमे-
के पर्याप्त अर्थात् जीव अनन्त है ॥६५॥ काल की अपेक्षा अनन्ता-
ना अमर्मिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते हैं ॥६६॥
क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोक ममाण हैं ॥६७॥ सामान्य
प्रसरायिक और प्रसरायिक पर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि
जीव असरयात् है ॥६८॥ काल वीथपेक्षा अमर्ल्यातामर्यात्
अमर्मिणियों और उत्सर्पिणियों दे द्वारा पूरे होते हैं ॥६९॥
भेत्र की अपेक्षा मृत्युगुल के असर्व्यात्वे भाग के वर्गरूप प्रति
भाग से और मृत्युगुल के सर्व्यात्वे भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से
नगर्नतर पूरा होता है ॥१००॥ सामादृन से लेकर अयोगि-
की मृत्यु गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान म सामान्य कथन पे
ममान है ॥१०१॥ प्रसरायिक लयपर्याप्त जीवों का प्रमाण
अमर्यात् है ॥१०२॥

इति कायमार्गणा ॥ १०२ ॥

योगमार्गणा से सब मनायोगियों और तीन वचनयोगियों में
मिथ्यादृष्टिजीव अमर्यात् है ॥१०३॥ सामादृन सज्जेर,
मयतासयत् गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान व्य, के पल्प
असर्यात्वे भाग है ॥१०४॥ प्रमत्त सज्जेर सयोगिमृत्यु
गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान मेर्यात् है ॥१०५॥ सामान्य
पचनयोगियों और अनुभव वचनयोगियों में लमिथ्यादृष्टि ॥
जीव असरयात् है ॥१०६॥ कालकी अपेक्षा असरयाता-

मरयात् अपसर्विणियों और उत्सर्विणियों के डाग पूर होते हैं ॥१०७॥ क्षेत्र की अपेक्षा अगुले के सरन्यातरे^१ भाग के र्गरूप प्रतिभागसे, जगप्रतरमूरा होता है ॥१०८॥ मासादन आदि शप गुणस्थानतर्त्ते । सासादन आदि^२ 'मनोयोगराशि'^३ के समान हैं ॥१०९॥ सामान्य-काययोगियों म और औदारिक काययोगियों। मे मिथ्यादृष्टि 'जीव सामान्य' कथन के समान है ॥११०॥ सासादन 'स लेकर 'सयोगिषेवली' गुणस्थानतर्क मनोयोगियों के समान हैं ॥१११॥ औदारिक मिथ्रकाययोगियों में, मिथ्यादृष्टि, जीव 'सामान्य' कथन के समान है ॥११२॥ मासादन सामान्य कथन के समान है ॥११३॥ असायत 'आर' मयोगिकेवली सम्प्राप्त है ॥११४॥ वैक्रियक काययोगियों मे मिथ्यादृष्टि जीव देवों से सर्वात्मेभाग बम हैं ॥११५॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असायत वैक्रियक काययोगी जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥११६॥ वैक्रियकमिथ्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव देवों से सर्वात्मेभाग हैं ॥११७॥ सासादन और असायत सामान्य कथन के समान हैं ॥११८॥ आहारकाययोगियों में प्रमत्तसंयते जीव चौबन हैं ॥११९॥ आहारमिथ्र काययोगियों में प्रमत्तसंयते जीव सरप्रात हैं ॥१२०॥ कार्मणकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान है ॥१२१॥ सासादन और असायत कार्मणकाययोगी जीव सख्यात है ॥१२२॥ मयोगीकेवलीकार्मणकाययोगी जीव सख्यात है ॥१२३॥

इति वेदमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीरेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥१२४॥ सासादन से लेकर भयतामयत "गुणस्थान तक" प्रत्येक गुणस्थान में पत्त्य के असरपातवे भाग हैं ॥१२५॥ प्रमत्त में लेकर अनिष्टिकरण उपशमक और सपक गुणस्थान तक से जीव संख्यात हैं ॥१२६॥ उत्तरप्रेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥१२७॥ सासादन से लेकर अनिष्टिकरण उपशमक और क्षपक तक के जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१२८॥ नपुंसकरेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक सामान्य कथन के समान हैं ॥१२९॥ प्रमत्त से लेकर अनिष्टिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक के जीव संख्यात हैं ॥१३०॥ अपगतरेदियों में ताजे गुणस्थानर्ती उपशमक जीव भवेश से पृक्, दोया तीन और उल्हासरूप से व्यापन है ॥१३१॥ काल की अपेक्षा उपशमक संख्यात है ॥१३२॥ तीन गुणस्थानर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन से समान है ॥१३३॥ अयोगकेवली जीव सामान्य कथन के समान है ॥१३४॥

इति वेदमार्गणोऽहं

सपापमार्गणा से झोपकपापी, मानकर्त्तायी, मायाकर्त्तायी और लोभपापी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान है ॥१३५॥ प्रमत्त से लेकर अनिष्टिकरण गुणस्थान तक

सरयात है ॥१३६॥ इतना विशेष है कि लोभकुपायी जीवों में सूक्ष्मसंपरायक उपशमक और शपके जीव सामान्यकथन के समान है ॥१३७॥ कृपायग्रहित जीवों में दृष्टिक्षेत्रकथाय जीव सामान्य कथन के समान है ॥१३८॥ क्षीणकर्णीय और अपोगिकेवली सामान्यकथन के समान हैं ॥१३९॥ सर्वांग केनी सामान्यकथन के समान है ॥१४०॥

इति विशेषमार्गं ॥

आनमार्गणा समत्यज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टि और सासादन जीव सामान्यकथन के समान है ॥१४१॥ मिथगज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीव दबों से कुछ अधिक है ॥१४२॥ सामादन जीव पल्य के अमरयात्रे भाग प्रमाण है ॥१४३॥ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और अवधिज्ञानी जीवों में असत्यता से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सामान्य कथन के समान है ॥१४४॥ इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सामान्यता है ॥१४५॥ मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकपाय गुणस्थानों तक जीव सरयात है ॥१४६॥ केवल ज्ञानियों भेदयोगिकेवली और अपोगिकेवली जीव सामान्यकथन के समान है ॥१४७॥

इति शामागणा ॥

सप्तममार्गणा से सामान्य सवभियों में प्रमत्त से लेकर भयोगिकेवली गुणस्थान तक के जीव प्रत्येक गुणस्थान में सरयात है

है ॥१४८॥ सामायिक और छेदोपस्थापन जीवों में प्रमत्त से
लेकर अनिटृचित्तगण उपशमक और शपक गुणस्थान तक
प्रत्येक गुणस्थान में सम्बन्धित है ॥१४९॥ परिहार विशुद्धि में
प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संस्तोषात् है ॥१५०॥ सूक्ष्मसांपराय
में सूक्ष्मपरिवायक उपग्रहक और क्षपक जीव सामान्य कर्यन के
समान हैं ॥१५१॥ यथार्यात् म ग्यारहवे, बारहवे, तेवहवे,
और चोदहवे गुणस्थानवर्ती, जीवों का प्रमाण सामान्य कर्यन
के समान है ॥१५२॥ सयतामुयत जीव पुल्य के असर यातरे
भाग है ॥१५३॥ असयतों में मिथ्यादृष्टि से लेकर
अमयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कर्यन के समान
है ॥१५४॥

इति सत्यममर्गणा
दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनी-जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव अस-
स्थान है ॥१५५॥ कालकी अपेक्षा, असर यातासुरयात अपस-
र्पिणियों और वृत्सर्पिणियों के इतरा पूरे होते हैं ॥१५६॥
क्षेत्र की अपेक्षा सून्यगुल के सद्यातरे भाग के वर्गस्त्र प्रति-
भाग स जगपत्र पूरा होता है ॥१५७॥ सामादन से लेकर
क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य
कर्यन के समान है ॥१५८॥ अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि
से लेकर भीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में
जीव सामान्य कर्यन के समान है ॥१५९॥ अवधिदर्शनी
जीव अवधिज्ञानियों के समान है ॥१६०॥ केवल अर्थनी जीव

येवलग्नानिपो रेतमान है ॥१६१॥

इति लेश्वामार्गेणा

लेश्वामार्गेणा में कृष्ण, जीव और कापात सभ यात्राने जीवों
में मिथ्यादृष्टि से लेश्वर अमरपा गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-
स्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१६२॥ तेजोलेश्वा-
यात्रे जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव योगिपौरुषों में शुद्ध अधिक
है ॥१६३॥ सासान्तन में लेश्वर मयतासयत गुणस्थान तक
प्रत्येक गुणस्थान में पत्त्वे पे असरस्थानों भाग है ॥१६४॥
ममत और अपमत जीव सेवी परद्विर तियंत्र योनमती
जीवों के मरणात्में भाग है ॥१६५॥ पश्चलेश्वा-
यात्रों में मिथ्यादृष्टि जीव सेवी परद्विर तियंत्र योनमती
जीवों के मरणात्में भाग है ॥१६६॥ सासान्तन से लेश्वर
मयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पत्त्वे
असरस्थात्में भाग प्रमाण है ॥१६७॥ प्रमत और अपमत जीव
मरणात्में है ॥१६८॥ शुद्धलेश्वयात्रानों में मिथ्यादृष्टि से लेश्वर
सर्वतोसयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव पत्त्वे
असरस्थात्में भाग प्रमाण है । इन जीवों के डोगे अन्तर्मुहूर्त
समान स एव्य पूरा होता है ॥१६९॥ 'प्रमत और अप्रमत
जीव सर्वतों हैं ॥१७०॥ अपूर्वकरण से लेश्वर सेयोगिपौरुषों
गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के सामान्य
हैं ॥१७१॥

इति लेश्वामार्गेणा भव्यमार्गेणा स भव्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिपौरुषों

गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान है १७२॥ अभव्य जीव अनन्त है ॥१७३॥

इति भव्यमार्गणा ॥ १७४ ॥ इति भव्यमार्गणा ॥ १७५ ॥
 मम्यकत्वमार्गणा से सम्बद्धियों में असयत से लेकर अयोगि-
 केवली "गुणस्थान" तक जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७४॥ शायिका सम्बद्धियों में असयत जीव सामान्य
 कथन के समान है ॥१७५॥ सयतासयत से लेकर उपशान्त-
 कथाय गुणस्थान तक सरयात है ॥१७६॥ चारों क्षपक और
 अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७७॥ सयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७८॥
 वेदक में असयत से लेकर अप्रभत्तसयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान है ॥१७९॥ उपशम में असयता
 और सयतासयत जीव सामान्य कथन के समान है ॥१८०॥ प्रभत्त से लेकर उपशान्त कथाय गुणस्थान तक जीव सरयात है ॥१८१॥ भासादनसम्बद्धि जीव पल्य के असख्यातवें भाग है ॥१८२॥ सम्बग्निध्याद्धि जीव पल्य के असख्यातवें भाग है ॥१८३॥ मिध्याद्धि जीव अनन्तान्त है ॥१८४॥

इति रुद्ध्यकृत्य मार्गणा ॥ १८५ ॥ इति रुद्ध्यकृत्य मार्गणा ॥ १८६ ॥
 सैनीमार्गणा से सैनियों में मिध्याद्धि, जीव असख्यात है ॥१८५॥ सासादन से लेकर क्षीरणकथाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१८६॥ असैनीजीव अनन्त है ॥१८७॥ काल वी अपेक्षा अनन्तान्त

अपमर्पिणियों और उत्सर्पिणियों ने द्वागा पूर्ण नहीं होते हैं ॥१८८॥ क्षेत्र की अपेक्षा इन नान्तलोक प्रमाण है ॥१८९॥

॥१९०॥ इति सत्त्वोमर्गगतः ॥ १९० ॥ १९१ ॥

आद्वारमार्गण म आद्वारकों में मिथ्यादृष्टि स लेखर मयोगि-
केली-गुणस्थान् तक प्रत्येकुः गुणस्थान् मेर्तीर्ति-मामन्य
कथन के समान है ॥१९०॥ अनाद्वारकों म मिथ्यादृष्टि सामान्य-
दनसम्यगदृष्टि अमयत्रसम्यगदृष्टि और सयोगिरेत्तीर्ति का
प्रमाण शर्मणारूपयोगियों वे समान हैं ? है ? ॥ अयोगिरेत्तीर्ति
जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१९१॥

॥१९२॥ इति आद्वारमार्गण, ॥ १९२ ॥

॥१९३॥ इति सरयाधिकारः ॥ १९३ ॥

॥१९४॥ इति सरयाधिकारः ॥ १९४ ॥

॥१९५॥ इति अथ-चेत्राधिकारः ॥ १९५ ॥

मेवरमन गीमाय और विशेष शीर्षप्रेक्षकों दो विकार का
है ॥१॥ सामान्यकथन से 'मिथ्यादृष्टि' जीव सर्वलोक मेरहेत
है ॥२॥ सामादने 'स लेकर' 'अयोगिरेत्तीर्ति' गुणस्थान तंत्र
प्रत्येक 'गुणस्थान तक के' 'जीव-नार्ति' के 'थिसरेयान्तरे' भाग
मेरहत है ॥३॥ मयोगिरेत्तीर्ति जाप लाइ ते असर्वात्मरूप
भाग मेर्ति, अयोगिरेत्तीर्ति जाकुर्ति, अमरयात् पदुभाग ते मेर्ति,
अयोगिरेत्तीर्ति महत है ॥४॥

॥४॥ इति सामान्यकथनः ॥ ४ ॥

॥५॥

विशप गति मार्गणा से नगकगति मे, सामान्ये नारकियों मे
मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के
जीव लोक के असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥५॥ इसी प्रकार सातों
पृथिव्यों के नारकीनीर लोक के असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥६॥
तियंच गति मे सामान्य, तियंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक मे
रहत है ॥७॥ सासादन से लेकर, सयतासयत गुणस्थान तक के
जीव लोक के असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥८॥ मामान्य पचन्द्रिय
तियंच पचन्द्रिय पर्याप्त और पचन्द्रिय, तियंचयोनिमती नीनो मे
मिथ्यादृष्टि से लेकर, मयतामयत गुणस्थान तक प्रत्येक
गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥९॥
पचन्द्रिय तियंच अपर्याप्त व लोक के असख्यातवे भाग मे रहते
हैं ॥१०॥ मनुष्य गति मे सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और
मनुष्यनियों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर, अयोगिकेवली
गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के
असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥११॥ सयोगिकेवली का
सेव सामान्य कथन के समान ॥१२॥ लब्ध पर्याप्त मनुष्य
लोक के असख्यातवे भाग मे रहते हैं ॥१३॥ देवगति
मे सामान्य देव मिथ्यादृष्टि से लेकर, अमयत गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थान के देव लोक के असख्यातवे भाग
मे रहते हैं ॥१४॥ भवनगासी से लेकर ग्रीवेयक तक के देवों
का सेव इसी प्रकार होता है ॥१५॥ अनुदिशा से लेकर
सर्वार्थसिद्धिविमान तक के अमयतदेव लोक के असख्यातवे

भाग में रहते हैं ॥१७॥

इति गतिमार्गणा

सर्वप्रभार के एकेन्द्रिय 'जीव सर्वलोक' में रहते हैं ॥१७॥
द्विन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुर्स्रिद्रिय 'जीव और उन्हीं' के पर्याप्त
तथा अपर्याप्त 'जीव लोक' के असर्वात्में 'भाग' में रहते
हैं ॥१८॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में
मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली 'गुणस्थान' तक प्रत्येक
गुणस्थान के जीव लोक के असर्वात्में भाग में रहते
हैं ॥१९॥ सयोगिकेवलियों का इन सामान्य कथन समान है ॥२०॥ लब्ध्यपर्याप्त पचेन्द्रिय जीव लोक के अम
रुद्यात्में भाग में रहते हैं ॥२१॥

इति ईद्रियमार्गणा

सामान्य पृथ्वी, अप, अग्नि वायु के जीव और वादर, पृथ्वी, अप,
तेज, वायु और प्रत्येक बनस्पति के अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म
पृथ्वी, अप, तेज, वायु के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक
में रहते हैं ॥२२॥ पृथ्वी, अप, तेज, और प्रत्येक
बनस्पति के वादर पर्याप्त जीव लोक के असर्वात्में भाग में
रहते हैं ॥२३॥ वादर वायुकायिक पर्याप्त जीव लोक के
सर्वात्में भाग में रहते हैं ॥२४॥ बनस्पतिकाय और निर्गोद
वादर सूक्ष्म के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक में रहते हैं
॥२५॥ सामान्य प्रसकायिक और प्रसकायिक पर्याप्त जीवों में
मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली 'गुणस्थान' तक प्रत्येक

गुणस्यानवर्ती जीव लोक के असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥२६॥
सयोगिकेवली का सेव्र सामान्य कथन के समान है ॥२७॥
व्रमकायिक लब्ध्यपूर्याप्ति जीव लोक के असरन्यातवें भाग में
रहते हैं ॥२८॥

इति कायमार्गणा

योग-मार्गणा की अप्सा सर्वमनोयोगी और सर्व-
वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टि गुणस्यान से लेकर सयोगि-
केवली गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती जीव लोक के
असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥२९॥ काययोगियों में मिथ्या-
दृष्टि जीवों का सेव्र सर्वलोक है ॥३०॥ सासादन से लेकर
भीणकपाप गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती लोक के
असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥३१॥ सयोग केवली का
सेव्र सामान्य कथन के समान है ॥३२॥ औदारिक काय-
योगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का सेव्र सर्वलोक है ॥३३॥
सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्यान तक प्रत्येक गुण-
स्यानवर्ती जीव लोक के असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥३४॥
औदारिक मिथ्यकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में
रहते हैं ॥३५॥ सासादन, असयत और सयोगिकेवली जीव
लोक के असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥३६॥ वैकियिक
काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्यान तक के
जीव लोक के असरन्यातवें भाग में रहते हैं ॥३७॥ वैकियिक मिथ्य-
काययोगियों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्यानवर्ती

जीव लोक के असरयात्रें भाग में रहत है ॥३८॥ आहारकाय
 योगियों में और आहारमिथकाय योगियों में प्रमत्तमयंत
 गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयात्रें भाग में रहत
 हैं ॥३९॥ कार्मणकाय योगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक
 में रहते हैं ॥४०॥ मामादन और असुख जीव लोक वे
 इसरयात्रें भाग में रहते हैं ॥४१॥ सत्योगिरेवली लोक के
 असरयात्रें वह भागों में और सर्वलोक में रहते हैं ॥४२॥

इति योगमार्गः ॥ ४३ ॥

वेदमार्गण की अपेक्षा स्त्रीपर्दी और पुरुष वेदियों में मिथ्यादृष्टि
 से लेकर अनिवृत्तिरूप गुणस्थानवर्तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव
 लोक के असरयात्रें भाग में रहते हैं ॥४३॥ नर्तमकर्त्तव्य या
 दृष्टि से लेकर अनिवृत्तिरूप गुणस्थानवर्तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती
 जीवों का सेवन मान्यकथन के समान है ॥४४॥ अप्यगतरेदी जीवों
 में अनिवृत्तिरूप अवेदभाग से लेकर योगिके गली गुणस्थान
 तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयात्रें भाग में
 रहते हैं ॥४५॥ तयोगिरेवली का सेवन सामान्यकथन के
 समान है ॥४६॥

इति वेदमार्गः ॥ ४७ ॥

विषयमार्गण स क्रापक्रुत्यो, मानवपाठी, मोयाकृपायी
 और लोभकपाठी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का सेवन सर्वलोक
 है ॥४७॥ मामादन में लेकर अनिवृत्तिरूप गुणस्थान
 तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरयात्रें भाग

में रहते हैं॥४८॥ विशेष गुत यह है कि लोभरुपायी जीवों में सूक्ष्मसाम्परायिक उपगमक और क्षपक जीव लोक के असर यात्रे भाग में रहते हैं॥४९॥ अरुपायी जीवों में दृष्टिगत स्थान आदि चारों गुणस्थानों का क्षेत्र सामान्यकथन के समान हैं॥५०॥

इति द्वयायमागण्या

ब्रानमार्गणा से ज्ञानति और कुश्रुतनानियों में मिध्यादृष्टियों का क्षेत्रमवलोक है॥५१॥ सामादन का क्षेत्र लोक का असरस्थान भाग है॥५२॥ विभगनानियों में मिध्यादृष्टि और भासादन गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असरस्थान भाग में रहते हैं॥५३॥ मतिथ्रुत और अवधिहानियों में असंयुत से लेकर भीणरुपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक ने असर यात्रे भाग में रहते हैं॥५४॥ मन, पर्ययज्ञानियों म प्रमणमयुत गुणस्थान से लेकर भीणरुपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक ने असर यात्रे भाग में रहते हैं॥५५॥ केवल जानियों में संयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है॥५६॥ अयोगिकेवली लोक के असर यात्रे भाग रहते हैं॥५७॥

इति द्वयायमागण्या

मयम-मार्गणा से सामान्य-मयत-प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असर यात्रे भाग में रहते हैं॥५८॥ संयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है॥५९॥ सामायिक और छेदो-

पर्म्यापना प्रमत्तसयत् गुणस्थान से लोक अनिवृत्तिकरण गुण स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असर्वात्में भाग में रहते हैं ॥६०॥ परिहार विशुद्धि म प्रमत्त और अप्रमत्त जीवलाल के असर्वात्में भाग में रहत है ॥६१॥ दृश्मसापरायिक में दृश्म सापरायिक उपशमक उपक जीवलाल ये असर्वात्में भाग में रहत है ॥६२॥ यथार्व्यात म उपशमनकाय से लेकर अयोग्य वेवली गुणस्थान तक चारों गुणस्थान वाले मामान्यस्थान के समान हैं ॥६३॥ सयतामयत् जीव लोक के असर्वात्में भाग में रहते हैं ॥६४॥ असयतों में मिथ्यादृष्टि का सेत्र सर्व लोक हैं ॥६५॥ सामादन सम्यग्मध्यादृष्टि और असयत जीव लोक के असर्वात्में भाग में रहते हैं ॥६६॥

इति सयममार्गणा

दर्गनमार्गणा से चर्षुदर्शनियों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण कपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असर्वात्में भाग में रहते हैं ॥६७॥ अचर्षुदर्शनियों मे मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहत है ॥६८॥ सामादन से लेकर क्षाणकपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असर्वात्में भाग में रहते हैं ॥६९॥ अवधिदर्शनी जीवों का सेत्र अवधिज्ञानिय के समान है ॥७०॥ ऐसलदर्शनी जीवों का सेत्रलोक का असर्वात्मा तवां भाग, लोकका असर्वात्म यहुभाग और सर्वलोक है ॥७१॥

इति दर्शनमगणा

लेश्यमार्गणा स कृष्ण, नील और कापोत लेश्या वात

जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७२॥
 असादन, सम्पर्मिथ्यादृष्टि और अभयन् जीव लोक
 के असर्वात्मेभाग में रहते हैं ॥७३॥ तेजोलेश्यावाले
 और पश्चलेश्यावाले जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्त
 गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असर्वात्मेभाग
 में रहते हैं ॥७४॥ शुक्रलेश्यावाले जीवों में
 मिथ्यादृष्टि से लेकर भीणकथाय गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती लोक के असर्वात्मेभाग में रहते हैं ॥७५॥
 अयोगिकेवली का सेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७६॥

इति लेश्यामार्गणा

मध्यमार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर
 अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का
 सेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७७॥ अभव्य जीवों में
 मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७८॥

इति मध्यमार्गणा

सम्प्रबत्तमार्गणा से सामान्य सम्प्रदृष्टि और साधिक सम्प्रदृष्टि
 जीवों में असयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों का सेत्र सामान्य कथन के समान हैं ॥७९॥
 अयोगिकेवली का सेत्र सामान्यकथन के समान है ॥८०॥ वेदक-
 सम्प्रदृष्टियों में असयत से लेकर अप्रमत्त सप्तशुरुणस्थान तक
 प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असर्वात्मेभाग में रहते
 हैं ॥८१॥ उपशमसम्प्रदृष्टि जीवों में असयत से लेकर

उपरान्तरपाय गुणस्थानं तत् प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक
के असरयातमें भाग में रहते हैं ॥८२॥ मासादनं जीवों का
क्षेत्र सामान्यं कल्पते समार है ॥८३॥ मध्यमित्यादिः
जीवों का क्षेत्र सामान्यं कल्पन के समान है ॥८४॥ मित्य
इष्टि जीवों का क्षेत्र सामान्यं उथने पे समान है ॥८५॥

इति मध्यकथमाणा

सिनीमार्गणा से सिनीजीवोंमें मित्यादिष्टि से लेकर क्षीणस्थाप
गुणस्थानं तत् प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असरयातमें
भागम रहते हैं ॥८६॥ असिनीजीव सर्वलोक में रहते
हैं ॥८७॥

इति आदारमार्गणा - आदारमार्गणा से आदारक जीवों में मित्यादिष्टियों
का क्षेत्र सर्वलोक है ॥८८॥ मासादन से लेकर सयोगि-
वेवली गुणस्थान तत् प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असरया-
तमें भाग में रहते हैं ॥८९॥ अनादारजीवों में मित्यादिजीवों
का क्षेत्र सर्वलोक है ॥९०॥ - सासादन, अमयन और
अयोगिवेवली लार के असरयातमें भाग में रहते हैं ॥९१॥
सयोगिवेवली लोक फे असरयात् वहुभागों में और सर्व-
लोक में रहते हैं ॥९२॥

इति आदारमार्गणा

* इति चौथाधिकारः ॥९३॥

॥१॥ इति स्वर्णाधिकार ॥ २ ॥ २
 ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥
 'स्वर्णन् इथं न' सामान्ये और मिश्रेष्ठी अपेक्षा 'दो प्रकार' का
 है ॥१॥ 'सामान्य' से मिथ्यादृष्टि जीवों ने 'सर्वसोर' स्वर्ण
 'स्त्रिया है' ॥२॥ 'सासादन' जीवों ने लोक को अमरयात्रवाँ
 भाग 'स्वर्ण' किया है ॥३॥ अतीते एले भी 'अपेक्षा' 'कुछ' के म
 'आठ' बटे चौदह भाग 'तथा' 'कुछ' 'नम' 'गोड़' रटे चौदह
 'भाग' 'मर्ज' 'स्त्रिया - है' ॥४॥ 'सम्यग्मित्यादृष्टि थीर' असयत
 'लीवों ने 'लोक' को अमरयात्रवा॑ भाग 'स्वर्ण' किया है ॥५॥
 'अतीत' काल की 'अपेक्षा' 'कुछ' के म 'आठ' बटे 'चाहूँ' भाग 'स्वर्ण'
 'किया है' ॥६॥ 'सवर्तोमयते' जीवों ने 'लोक' को असख्यात्यवा॑
 'भाग' 'स्वर्ण' किया है ॥७॥ 'अतीत' काल की 'अपेक्षा' 'कुछ' के म
 'छह' रटे 'चाहूँ' 'भीग' 'स्वर्ण' किया है ॥८॥ प्रमत्ते मयत गुण-
 'स्थान स 'लोकर' 'अयोग्मित्यली' 'गुणस्थान तुक मत्येन गुण-
 'स्वानेतरी' जीवों ने 'लोक' का 'असख्यात्यवा॑ भाग' 'स्वर्ण' किया
 'है' ॥९॥ 'भयोग्मित्यली' 'भगवन्तों' ने 'लोक' का 'अमरयात्रवा॑ भाग'
 'असुख्यात घटु' भाग और 'सर्वलोक' 'स्वर्ण' किया है ॥१०॥
 ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥८॥ ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥
 'मिश्रेष्ठ' गतिमार्गणी मे जग्न गति म 'मित्यादृष्टि' सामान्य
 'नागरक' जीवों। ने 'लोक' को 'असख्यात्यवा॑ भाग' 'स्वर्ण', किया
 'है' ॥१॥ 'अतीत' काल की 'अपेक्षा' 'कुछ' कम 'यही' बटे 'चाहूँ' 'भीग'
 'भाग' 'मर्ज' 'किये हैं' ॥२॥ 'मासादन' जागमियों ने 'लोक' का

असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥१३॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम पाच बटे चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीवों ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥१५॥ प्रथम पृथ्वी में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर असयत जीवों ने लोक का असर्वातवा, भाग, स्पर्श किया है ॥१६॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर छठी पृथ्वी तक पत्तेरु पृथ्वी के मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥१७॥ अतीत काल की अपेक्षा चाँदह भागों में से कुछ कम -एक दो तीन ज्ञार, और पाच भाग स्पर्श किये हैं ॥१८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत नाइकी जीवों ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥१९॥ सातवाँ पृथ्वी में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥२०॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२१॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥२२॥ तियंच, गति, में मिथ्यादृष्टि जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥२३॥ सासादन जीवों ने लोक का असर्वातवा भाग स्पर्श किया है ॥२४॥ भूत और भविष्य काल की अपेक्षा कुछ कम सात बटे चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि तियंचों ने लोक का असर्वातवा भाग, स्पर्श किया है ॥२६॥ असयत और मयतासयत गुणस्थानवर्ती तियंचों

ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥२७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम वह वटे चौंदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त और योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीर्णों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥२९॥ अतीत और अनागत काल में सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३०॥ शेष तिर्यंच गति के जीर्णों का स्पर्श सेत्र सामान्य कथन के समान है ॥३१॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच लब्धयपर्याप्त जीर्णों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥३२॥ अतीत और अनागत काल में सर्व लोक स्पर्श किया है ॥३३॥ मनुष्य गति म सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि जीर्णों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥३४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३५॥ सामादन जीर्णों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥३६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम सात वटे चौंदह भाग स्पर्श किया है ॥३७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणम्यान से लेख अयोगिकेवला गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती। जीर्णों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥३८॥ सयोगिकेवली जिन्होंने लोक का असख्यातमा भाग असख्यात वहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३९॥ लब्धय पर्याप्त मनुष्यों ने लोक का असख्यातमा भाग स्पर्श किया है ॥४०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व

लोक सर्व किया है ॥४१॥ देवगति में मामान्य-मिथ्या इष्टि और सासादन जीवों ने लोक का अमरुत्यात्मा, भाग सर्व किया है ॥४२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ चौदह, भाग और कुछ कम नीं चौदह खण्ड सर्व किये हैं ॥४३॥ सम्यग्मिथ्याइष्टि और असंयत ने लोक का अमरयात्मा भाग सर्व किया है ॥४४॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ चौदह भाग सर्व किया है ॥४५॥ भगवत्वासी व्यन्तर और ज्योतिष्क दोनों में मिथ्याइष्टि और सासादन जीवों ने लोक का अमरुत्यात्मा भाग सर्व किया है ॥४६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा लोक नाली के चौदह भगवत्वों में से कुछ कम साढ़े तीन खण्ड, आठ भाग और नौ भाग सर्व किये हैं ॥४७॥ सम्यग्मिथ्याइष्टि और असंयत ने लोक का अमरयात्मा भाग सर्व किया है ॥४८॥ अतीत और अनागत । काल की अपेक्षा कुछ कम माहे तीन खण्ड भाग और कुछ कम आठ चौदह भाग सर्व किये हैं ॥४९॥ सौ र्षय और ईशान वेद्य चासी देवों में मिथ्याइष्टि से लेकर असंयते गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यान वर्ती देवों को सर्वन क्षेत्र मामान्य देवों के समान है ॥५०॥ सनन्दुमारे से लेकर सहस्रारन तक के देवों में मिथ्याइष्टि से लेकर असंयते गुणस्यान तक प्रत्येक गुणस्यान वर्ती देवों ने लोक का अमरुत्यात्मा भाग सर्व किया है ॥५१॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ चौ-

चौंदह भाग सर्वे किया है ॥५२॥ अनित से लेखरे अच्छुत तक के देवों में मिथ्योहपि से लोकर असयता गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असरयोत्तम भग्न सर्व किया है ॥५३॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम यह बड़े चौंदह भाग सर्व किये हैं ॥५४॥ नव-प्रेयक विमानवासी देवों में मिथ्योहपि से लेखर असयत गुणस्थान द्वाक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असरयोत्तम भाग सर्व किया है ॥५५॥ नव अनुदिश से लेखर सर्वार्थ सिद्धि तक विमानवासी देवों में असयत सम्यक हपि जीवों ने लोक का असरयोत्तम भाग सर्व किया है ॥५६॥ १५ । १५ ॥

इति गतिमात्राणा ॥५७॥ १६ ॥ इन्द्रिय मार्गणा से सर्व प्रकार के एनेन्द्रिय जीवों ने सर्व लोक सर्व किया है ॥५७॥ सर्व प्रकार के इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुर्निंद्रिय जीवों ने लोक का असरयोत्तम भाग सर्व किया है ॥५८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक सर्व किया है ॥५९॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तों में मिथ्योहपि जीवों ने लोक का असरयोत्तम भाग सर्व किया है ॥६०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बड़े चौंदह भाग और सर्व लोक सर्व किया है ॥६१॥ सामादेन से लेखर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का सर्वन क्षत्र सामान्य

रुद्धन के समान है ॥६३॥ सयोगिकेवली-जीरोंका, सर्वज-
सेव, सामान्य करने के समान हैं। ल-पूर्णास पच-
न्द्रिय, जीरोंने जो करा अमरुपात्तवा भाग, सर्वाद किया;
है ॥६४॥ अतीत-अंग, अनागत, काल, की अपेक्षा सर्व लोक :
सर्व इया है ॥६५॥ तो ता-पूर्ण इ-उत्तम इ-

इ-उत्तम मार्ग, आपा, इ-उत्तम
काप-मार्ग, स सामान्य, पृथ्वी, जल, अग्नि, चायु कायिक
जीव तथा वादर, पृथ्वी, जल, अग्नि, चायु, और, चनस्पति,
कायिक प्रत्येक गरीब, जीव तथा, इन्हीं पांचों के वादर अप-
र्यास-जीरा, सूक्ष्म पृथ्वी, जल, अग्नि, चायु, कायिक और, इन्हीं
सूक्ष्म जीरों के पर्यास और अपर्यास जीरों ने सर्व लाल, सर्व
किया है ॥६६॥ वादर, पृथ्वी, अप, तेज और उनस्पति
कायिक प्रत्येक शरीर पर्यास जीरों ने तोड़ने का असरपात्तरा;
भाग, सर्व, किया है ॥६७॥ अतीत-अंग, अनागत, काल, की
अपेक्षा भर्तलोक सर्व इया है ॥६८॥ वादर, चायु कायिक ने
पर्यास, जीरों ने लोक को अमरपात्तरा भोग-पैर्यास किया है
॥६९॥ अतीत औरों अनागत, काल, की, अपेक्षा, भर्तलाल, सर्व
सर्व, किया है ॥७०॥ उनस्पति, कायिक जीव, और गोट
जीव वादर, सूक्ष्म जीव, पर्यास, अमरपात्तरा, जीरों ने सर्व लोक सर्व
किया है ॥७१॥ सामान्य, अपकायिक, और त्रस्मायिक पर्यास
जीरों, मध्याद्युष्टि गुणस्थान से लेकर, अयोगिकेवली गुणने से
स्थान तक प्रत्येक गुणस्थान वर्ती जीरोंथा, सर्वन क्षेत्र सामा-

“न्य कर्त्तव्ये” के समान है। जिरि॥ ग्रन्थकारिका लब्ध्यपर्याप्त
जीवों का सर्वशेष क्षेत्रलोक को अमर्त्यात्मा भाग है॥७३॥
॥८॥ इति शार्वमार्गण् ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥ ॥८॥
“योग मार्गण्” में सर्व मनोयोगी॥ और भवि व्यवनयोगियों में
मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का अमर्त्यात्मा भाग सर्वशेष किया
है॥७४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम ओढ़
बटे चांदह भाग और भर्त लोक सर्व किया है॥७५॥ “सासार-
दन से लेकर मृत्युतासंयत गुणस्थाने” तक प्रत्येक गुणस्थान-
वर्ती जीवों को सर्वशेष क्षेत्र सामान्य करने के समान है॥७६॥
प्रमत्त संयत से लेकर सयोगिमली गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-
स्थानवर्ती जीवोंने लोक को अमर्त्यात्मा भाग सर्वशेष किया
है॥७७॥ काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों को सर्वशेष क्षेत्र
भर्त लोक है॥७८॥ “सामर्दन से लेकर क्षण कर्त्य गुणस्थान
तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का सर्वशेष क्षेत्र सामान्य करने
के समान है॥७९॥ सयोगिमली को सर्वशेष क्षेत्र लोक का
असर्यात्मा भाग अमर्त्यात्मा वहुभाग और सर्वलोक है॥८०॥
अवार्तिक काययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का सर्वशेष क्षेत्र
भर्त लोक है॥८१॥ “सासारदन जीवों ने लाक का असर्यात्मा
भाग सर्व गम्या है॥८२॥” अतीत और अनागत इलाके की
अपेक्षा कुछ ऐसे सार्व चांदह भाग सर्वशेष किये है॥८३॥
“सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असर्यात्मा भाग सर्व
किया है॥८४॥” असर्यात्मा और संयत सर्वतों जीवों ने लोक का

असर्वात्मा भाग स्पर्श किया है ॥८५॥ अतीत और अनगत
 काल का अपेक्षा कुछ कम छह बट चाँदह भाग स्पर्श, किया
 है ॥८६॥ प्रमत्त सयत से लेकर सयोगिनेवनी गुणस्वात तर
 पत्येक गुणम्यानवर्ती जीवोंने लोक का अमर्त्यात्मवा-भाग
 स्पर्श किया ॥८७॥ औदृष्टि, मिथ्रकाययोगियों में मिथ्या-
 हृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥८८॥ सासादन
 असयत और सयोगिकेवली-जीवोंने लोक का असर्वात्मा
 भाग स्पर्श किया है ॥८९॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्या-
 हृष्टि जीवोंने लोक वो असर्वात्मा भाग स्पर्श किया है ॥९०॥
 अतात आग अनागत काल की अपेक्षा हुठ कमआठ बट चाँदह
 और कुछ कम तेरह बट चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥९१॥ सासा-
 दन जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कृयन के ममान है ॥९२॥
 मम्यमिथ्याहृष्टि और असयत जीवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य
 कृयन के ममान है ॥९३॥ वैक्रियक, मिथ्रकाययोगी, जीवों में
 मिथ्याहृष्टि सासादन और असयत सम्यहृष्टि, जीवोंने लोक
 का अमर्त्यात्मवा भाग स्पर्श किया है ॥९४॥ आहारक काययोगी
 और आहारक मिथ्रकाययोगी जीवों में प्रमत्त सयतोंने लोक का
 असर्वात्मा भाग स्पर्श किया है ॥९५॥ कार्मण काययोगी
 जीवोंम मिथ्याहृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य-कृयन के
 ममान है ॥९६॥ सासादन न लोक का अमर्त्यात्मवा भाग
 स्पर्श किया है ॥९७॥ तीनों कालों की अपेक्षा, कुछ कम, म्या-
 हृष्टि तर चाँदह भाग स्पर्श किया है ॥९८॥ अमृतन जीवों न

लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥६६॥ तीनों
कालों की अपेक्षा से कुछ कम 'चढ़' बटे चौदह भीम स्पर्श
किये हैं ॥१०५॥ मयोगिकलियों ने 'लोक' का 'असख्यात
नहुभाग और सर्वलोक स्पर्श' किया है ॥१०६॥ १०७
॥ १०८ ॥ १०९ ॥ लाइयोगमार्गण ॥ १०१ ॥ १०३ ॥ १०४
वदमार्गणा से त्री बेदी, और पुरुष ऐदो जीवों मि॒व्या-
द्धियों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श कियो है ॥१०२॥
अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे
चौदह भाग तथा, मर्व लोक स्पर्श किया है ॥१०३॥ सासादन
जावों न लोक वा असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१०४॥
अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे
चौदह जीवों ने चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०५॥ सम्या-
मिथ्याद्धि, तथा असख्यत जीवों ने लोक का असख्यतवा
भाग स्पर्श किया है ॥१०६॥ अतीत और अनागत काल की
अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०७॥
सयतासयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श कियो
है ॥१०८॥ अतीत और अनागत काल की रिक्षा से कुछ
कम छठ पट चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०९॥ भ्रमते
जीयत स लेफ्ट अनिवृत्ति करण उपगमक और लक्षपत
गुणस्थान लोक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का
असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥११०॥ नपुसरु बेटी जीवों
मे मिथ्याद्धि, जीवों या स्पर्शन 'शेष सर्व लोक है ॥१११॥

मामादन जीवों, जे लोक का अमरत्यात्मा भाग स्पर्श किया है॥११२॥ अत्रीत और अनागत वृकाश एवं अपेक्षा कुछ कम वाग्ह वटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं॥११३॥ मम्यग्मिथ्ये-
हृषि जीवों ने लोक का असंख्यात्मा भाग। स्पर्श किया है॥११४॥ असयत और सयतासयत जीवों ने लोक का अमरत्यात्मा भाग स्पर्श किया है॥११५॥ अतीत और अनागत काल एवं अपेक्षा कुछ कमच्छबटों चौदह भाग स्पर्श किया है॥११६॥ प्रमत्त सयतास लोक अनिवृत्ति करणे गुणस्यान तेक प्रत्येक गुणस्यानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र लोक का असरत्यात्मा भाग स्पर्श किया है॥११७॥ अनगत नेदी जीवों में अनिवृत्ति करणे से लेकर अपोगिनेत्री गुणस्यान। तरु प्रत्येका शुणस्यानवर्ती॥ जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है॥११८॥ सपोगिनेत्री जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है॥११९॥ ॥११९॥

कपाय सार्गणा से क्रोधकपायी, मानकपायी, मायाकपायी और लोभकपायी जीवों में मिथ्याहृषि से लेकर अनिवृत्ति करणे गुणस्यान तरु प्रत्येक गुणस्यानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है॥१२०॥ मिश्र वात यह है कि लोम कपायी जीवों में शूल उसीपराय गुणस्यानवर्ती उपगमक और क्षपक जीवों द्वा क्षेत्र सामान्य नथन के समान है॥१२१॥ अकपायी जीवों में उपशान्तः कपाय आनि चार

गुणस्थान वालों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२३॥ मासांशः इः पाठः एव गुणांशः ॥

“एवं प्राप्तान्तरात् व्ययमागण्डात् ॥१२४॥ अतिथि ज्ञानेमार्गणा संकुपति और कुशुत् अवानियो में मिथ्यादृष्टि जीवों का ‘स्वर्णनाक्षेत्र’ सामान्य कथन के समान है ॥१२५॥ सासान्न जीवों का ‘स्वर्णनाक्षेत्र’ नामान्य कथन के ‘समान’ है ॥१२६॥ विभग ज्ञानियो में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का अभयान भाग स्पर्श किया है ॥१२७॥ अतीत और अनागत खोलीकी घण्टाओं छड़े चांदह भाग और चर्व लोक मारा किया है ॥१२८॥ सामान्य क्षेत्र के समान है ॥१२९॥ मितिहानी, अतिहानी और अवधज्ञानियों मध्यमध्यते से लेकर क्षीणरूपाय गुण स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३०॥ मना पर्यय ज्ञानियों द्वारा प्रमत्त से लेकर क्षीणरूपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का ‘स्वर्णनाक्षेत्र’ सामान्य कथन के समान है ॥१३१॥ अयोगिकेलीं जिनों का ‘स्वर्णनाक्षेत्र’ सामान्य कथन के समान है ॥१३२॥ अयोगिकेलीं जिनों का स्वर्णनाक्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३३॥

“अतिहानीलोका इति भान्नालोका ॥१३४॥ सप्तम मार्गणे से सप्तती में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेलीं गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का ॥१३५॥

क्षेत्र सामान्य - कथन , के - समान है ॥१३७॥ ८ स्थिरता
म सयोगिकेवली का स्वर्णन क्षेत्र सामान्य कथन के क
समान है ॥१३८॥ सामायिक शीर छेटोपस्थापना में प्रमत्त
से लेकर अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती
जीवों का स्वर्णन क्षेत्र सामान्य कथन , के समान है ॥१३९॥
परिहार चिशुटि में प्रमत्त और अप्रमत्त, ने लोक, शा - असर्वात्मा-
तरा भाग स्पर्श किया है ॥१३५॥ ८ सूक्ष्म, सापरायिक,
सूक्ष्म सापरायिक भ्रष्टक जीवों का स्वर्णन, क्षेत्र सामान्य कथन
के समान है ॥१३६॥ यथान्यात में खारों गुणस्थानवर्ती जीवों
का स्वशान भैरव सामान्य ऋद्धन के समान है ॥१३७॥ संयता-
मयत जीवों का स्वर्णन लेत्र, सामान्य, कथन - के समान
है ॥१३८॥ असंयत, जीवों में मिथ्यादृष्टि स, लेकर असंयत
गुणस्थान, तष प्रत्येक, गुणस्थानवर्ती, जीवों, शा सर्वन क्षेत्र
सामान्य कथन के समान है ॥१३९॥ ८ ३८ ८ ३९ ८ ४०

८ ३८ ८ ३९ ८ ४० इति संयममार्गलग्नः ॥ १ ८० ८ ४१
दर्शन मार्गणा से चम्बु दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक
का असर्वात्मा भाग स्पर्श किया है ॥१४०॥ अतीत और
अनागत काल की अपेक्षा कुछ प्रम थाठ बड़े चौटड भाग और
सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१४१॥ तामादन से लेकर क्षीण-
प्रयाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्वर्णन
शब्द - सामान्य कथन के समान है ॥१४२॥ ८ अचम्बु
दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, स लेकर क्षीण प्रयाय

गुणस्यान तेज प्रत्येक गुणस्यानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य क्यन के समान है ॥१४३॥ अवधिदर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र अवधि ज्ञानियों के समान है ॥१४४॥ फेरल दर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र फेरल ज्ञानियों के समान है ॥१४५॥

इति दर्शनवर्मार्यणा

लेश्यामर्गणा से कुछ लेख्या, नीललेख्या और काषोत्तलेख्या वाले मिथ्याहृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र मामान्य क्यन के समान है ॥१४६॥ सासादन जीवों ने लोक का असरयात्रवा भाग स्पर्श किया है ॥१४७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम पाच बटे चाँदह, चार बटे चाँदह और दो बटे चाँदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असर्यत सम्यग्हृष्टि जीवों ने लोक का असरयात्रवा भाग स्पर्श किया है ॥१४९॥ तेजो लेश्या वालों में मिथ्याहृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असरयात्रवा भाग स्पर्श किया है ॥१५०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चाँदह और कुछ कम नौ बटे चाँदह भाग स्पर्श किया है ॥१५१॥ सम्यग्मिथ्याहृष्टि और असर्यत सम्यग्हृष्टि जीवों ने लोक का असरयात्रवा भाग स्पर्श किया है ॥१५२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चाँदह भाग स्पर्श किया है ॥१५३॥ सर्यतासर्यत जीवों ने लोक का असरयात्रवा

अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ न मँडेह वटे
 चौंह भाग सर्व किया है ॥१५५॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीरों
 का सर्वन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१५६॥ पद
 लेख्या यालों मे मिथ्याद्विष्ट से लेकर असर्यत गुणस्यान तक
 पत्येक गुणस्यानवर्ती जीरों न लोक का अमर्त्यतवा भाग सर्व
 किया है ॥१५७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम
 आठ ये चौंदह भाग सर्व किया है ॥१५८॥ सर्यतासर्यत
 जीरों ने लोक का असर्यतवा भाग सर्व किया है ॥१५९॥
 अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ न मँड पट
 चौंदह भाग सर्व किया है ॥१६०॥ प्रमत्त और अप्रमत्त सर्यत
 जीरों का सर्वन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६१॥
 शुरुलेख्या यालों मे मिथ्याद्विष्ट से लेकर सर्यतासर्यत गुण-
 स्यान तक पत्येक गुणस्यानवर्ती जीरों ने लोक का अमर्त्या-
 तवा भाग सर्व किया है ॥१६२॥ अतीत और अनागत काल
 की अपेक्षा कुछ न मँड यह ये चौंदह भाग सर्व किया है ॥१६३॥
 प्रमत्त से लेकर सर्यागिरेली गुणस्यान तक
 पत्येक गुणस्यानवर्ती जीरों का सर्वन क्षेत्र सामान्य कथन के
 समान है ॥१६४॥

“ते चायाम् गणा”

भव्य मार्गणा से भव्य जीरों मे मिथ्याद्विष्ट मे लेकर अयोगि-
 केवला गुणस्यान तक पत्येक गुणस्यानवर्ती जीरों का सर्वन
 वय सामान्य इन के समान है ॥१६५॥ अभव्य जीरों न

“मेर्यांगोक स्पर्श मिया है ॥१६६॥” ॥५८॥
 इति वायम गण ॥२४॥

मन्यवत्य मार्गला से सम्यग्दृष्टियों में असयत से लोक अयोगि-
 देवती गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन
 भेद मामान्य कथन के समान है ॥१६७॥ साधिकों में असयत
 मन्यग्दृष्टि जीवों का स्पर्शन भेद मामान्य ऋथन के समान
 है ॥१६८॥ अपतासयत से लोक अयोगिदेवती गुणस्थान तक
 प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असरूपात्वा भाग स्पर्श
 किया है ॥१६९॥ मरागिदेवती जीवों का स्पर्शन भेद
 मामान्य कुवन के समान है ॥१७०॥ वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों
 में असयत से लोक अप्रभाग गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान-
 वर्ती जीवों का स्पर्शन भेद मामान्य कथन के समान
 है ॥१७१॥ आपशमिद सम्यग्दृष्टियों में असयत सम्यग्दृष्टि
 जीवों का स्पर्शन भेद मामान्य ऋथन के समान है ॥१७२॥
 सपतासंयुत से लोक उपरात्रपाय गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असरूपात्वा भाग स्पर्श
 किया है ॥१७३॥ मामादन जीवों का भेद मामान्य कथन के
 उमान है ॥१७४॥ सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन भेद
 मामान्य ऋथन के समान है ॥१७५॥ मिध्यादृष्टि जीवों का
 स्पर्शन भेद मामान्य ऋथन के समान है ॥१७६॥

इति सम्यक्त्वमार्गला

सैनी मार्गला से सैनी जीवों में मिध्यादृष्टियों ने लोक का

अमरुयातवा भाग स्पर्श किया है १७७॥ अर्तात् और अनामत
काल की अपेक्षा कुद वर आठ वट चौदह भाग और सर्व
लोक स्पर्श किया है ॥ १७८॥ सामादन से लोक-क्षीण
कपाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानती जीवों का स्पर्शन
क्षेत्र सामान्य क्षयन के समान है ॥ १७९॥ अमैर्ना, जीवों न
सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १८०॥ - - - ,

इति सैवामार्गणा

आहोर मार्गणों से आहारक जीवों में मिथ्याहृष्टियों का
स्पर्शन क्षेत्र आमान्य क्षयन के समान है ॥ १८१॥ सामादन
से लोक संयोगसंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानती
जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य क्षयन के समान है ॥ १८२॥
प्रमत्त से लोक सयोगिकेवली गुणस्थान सेक प्रत्येक गुण-
स्थानती जीवों ने लोक रा अमरुयातवा भाग स्पर्श किया
है ॥ १८३॥ अनाहारक जीवों मध्यभवित गुणस्थानती जीवों
को स्पर्शन क्षेत्र कामाण कोययोगियों के क्षेत्र को समान
है ॥ १८४॥ मिशेप यात यह है कि अयोगिनेयलिङ्गों न लोक
का असरयातवा भाग स्पर्श किया है ॥ १८५॥

इति आहारमार्गणा

॥ ४ ॥

इति सूर्गनाधिकार

अथ कालाधिकार

काल कान सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते ह ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा फाल तीन प्रकार है अनादि-अनन्त, अनादि-सान्त और सादि-सान्त । इनम् सादि-सान्त का जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्कृष्ट काल कुद्र कम अर्थपुद्गलपरिवर्तन है ॥४॥ - सासान्त जाव नाना जीवों की अपेक्षा जनन्य से एक समय तक हान है ॥५॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असर्व्यात्मेभाग हैं ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल एक समय है ॥७॥ उत्कृष्ट काल यह आपली है ॥८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों का अपेक्षा जनन्य से अन्तर्मुहूर्त तक होते हैं ॥९॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असर्व्यात्मेभाग है ॥१०॥ एक जीव का अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२॥ अमर्यतम्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट काल कुद्र अदिवतीस मानार है ॥१५॥ सुयतामयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७॥ उत्कृष्ट काल कुद्र कम पूर्ण शाटि सर्व प्रमाण है ॥१८॥ प्रमत्त और अप्रमत्त मयत जीव नाना

जीरों की अपेक्षा मर्दाल होते हैं ॥१६॥ एक जीव का
अपेक्षा जगन्य राल एक समय है ॥२०॥ उत्कृष्ट काल शां
मुदूर्त है ॥२१॥ चारों उपगमन जीर नाना जीरों की अपेक्षा
जगन्य स एक समय तक होते हैं ॥२२॥ उत्कृष्ट काल
अन्तमुदूर्त है ॥२३॥ एक जीर की अपेक्षा जगन्य चार
एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुदूर्त है ॥२५॥
चांग सर्वक और अयोगिरेमली जीर नाना जीरों की
अपेक्षा जगन्य कात अन्तमुदूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट दाल
अन्तमुदूर्त है ॥२७॥ एक जीर की अपेक्षा जगन्य कार अन्त
मुदूर्त है ॥२८॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुदूर्त है ॥२९॥ सुयामि
फबली जिन नाना जीरों की अपेक्षा मर्द कार होते हैं ॥३०॥
एक जीर की अपेक्षा जगन्य काल अन्तमुदूर्त है ॥३१॥ उत्कृष्ट
काल हुदूषम पूर्व रोटी द ॥३२॥

इति साम दश इति

रिश्यं गति मार्गणा स सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि ज
नाना जीरों की अपेक्षा मर्द राल होते हैं ॥३३॥ एक जीर की अपेक्षा
जगन्य काल अन्तमुदूर्त है ॥३४॥ उत्कृष्ट काल तेतीस मार्ग
है ॥३५॥ सासादन और समयमिथ्यादृष्टि जीरों का एक जीर
नाना जीरों की अपेक्षा जगन्य और उत्कृष्ट काल मामान्य का
रे ममान है ॥३६॥ अमयत सम्यग्दृष्टि जीर नाना जीरों की अपेक्षा
सर्वराल होते हैं ॥३७॥ एक जीर की अपेक्षा जगन्य
अन्तमुदूर्त है ॥३८॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस मार्ग

३६॥ प्रयम् पृथ्वी स लेहर मात्रीं पृथ्वी न कु मिथ्या-
दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल होते हैं ॥४०॥
एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४१॥ उत्कृष्ट
काल भ्रमण एक, तीन, मात्र, दस, सचरह, वार्डस और
तर्तीन मागत है ॥४२॥ मामादन और सन्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों
का नाना आरण जीव की अपेक्षा जगन्य और उत्कृष्ट काल
सामान्य भ्रमण के समान है ॥४३॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव
नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल होते हैं ॥४४॥ एक जीव
की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४५॥ उत्कृष्ट काल
भ्रमण कुछ रुप एक, तीन, सात, दस, सचरह, वार्डस और
तत्त्वात् मागत है ॥४६॥ तियंच गति में सामान्य तियंचों म
मिथ्यादृष्टि जाव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
हैं ॥४७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त
है ॥४८॥ उत्कृष्ट काल अमुख्यात पुटगङ्ग परिवर्तन है ॥४९॥
सामान्य और सन्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य
द्वयन् ये समान है ॥५०॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना
जीवों की अपेक्षा मुर्द काल होते हैं ॥५१॥ एक जीव की अपेक्षा
जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५२॥ उत्कृष्ट काल तीन पल्य
है ॥५३॥ सयतामयत जीव नाना जीवों का अपेक्षा मुर्द काल होते
है ॥५४॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५५॥
उत्कृष्ट काल कुछ कम, पूर्व कोटि वर्षे है ॥५६॥ सामान्य
पञ्चन्द्रिय तियंच, पञ्चन्द्रिय तियंच पर्याप्त, और पञ्चन्द्रिय तियंच

योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वे काल होते हैं ॥५७॥ एक जीर्य की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५८॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथग्न्य से अधिक तीन पल्य है ॥५९॥ सासार्दन और सम्यग्मध्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य ध्वन के समान है ॥६०॥ असयत सम्पर्गदृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वे काल होते हैं ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६२॥ उत्कृष्ट काल क्रम से तीन, तीन और शुद्ध क्रम तीन पल्य ॥ ॥६३॥ सेयतासयर्त वा काल सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ पचेन्द्रिय लब्ध्यर्थीसक तिर्यंच नाना जीवों की अपेक्षा सर्वे काल होते हैं ॥६५॥ एक जीव का अपेक्षा जगन्य काल शुद्ध भव ग्रहण ममाण है ॥६६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ॥६७॥ मनुष्य गति मे मामान्य मनुष्य, मनुष्यपय स प्राप्ति मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वशाल होते हैं ॥६८॥ जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६९॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथक्त्व वर्ष से अधिक तीन पल्य है ॥७०॥ मामान्य जीर्य नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय होते हैं ॥७१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७२॥ एक जीर्य की अपेक्षा जगन्य काल एक समय है ॥७३॥ उत्कृष्ट काल छह आपली है ॥७४॥ सम्यग्मध्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ॥७६॥ एक जीर्य की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७७॥ उत्कृष्ट काल अन्त-

मुहूर्त है॥७८॥ अमर्यत सम्प्रदृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा
 सर्वकाल होते हैं ॥७९॥ एवं जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल
 अन्तर्मुहूर्त है ॥८०॥ उत्कृष्ट काल क्रम से तीन, तीन से अधिक
 और तीन पल्य से कुछ क्रम है ॥८१॥ सप्ततासप्तवर्त से लैकर
 अयोगिकेवली तरु उत्कृष्ट वा जयन्त्य काल सामान्य कथन
 के समान है ॥८२॥ लव्यपर्याप्ति समुदायों मनुष्यों जीवों
 की अपेक्षा जयन्त्य से सुदृभय ग्रहण प्रमाण काल तरु होते
 हैं ॥८३॥ उत्कृष्ट काल पल्य का अमर्यातरा भाग है ॥८४॥
 एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल कुछ भय ग्रहण प्रमाण है ॥८५॥
 उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥८६॥ दैवगति म
 सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि जीव चार्ना जीवों की अपेक्षा
 सर्वकाल होते हैं ॥८७॥ एवं जीव की अपेक्षा जयन्त्य काल
 अन्तर्मुहूर्त है ॥८८॥ उत्कृष्ट काल इतीस सागर है ॥८९॥
 सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि वा काल सामान्य कथन के
 समान है ॥९०॥ असयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की
 अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥९१॥ एक जीव की अपेक्षा जयन्त्य
 काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९२॥ उत्कृष्ट काल तीतीम सागर
 है ॥९३॥ भगवान्सी देवों से लैकर सहस्रार कल्प वासी देवों
 तरु मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों
 की अपेक्षा रार्पकाल होते हैं ॥९४॥ एक जीव की अपेक्षा
 जयन्त्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९५॥ उत्कृष्ट काल क्रम से एक
 सागर एक पल्य, दो, सात, दस, चाँदह, सोलह और

मागर से कुछ अविक है ॥६६॥ मासादन और सम्यग्मिध्यादपि
देवों का काल सामान्य कारन के समान है ॥६७॥ आनत-श्राणत
से लेकर नद गैरेयक विमान वासी दरों म गिध्यादपि और
अमयत सम्यग्दपि देव नाना जीवों की अपेक्षा मर्दकाल होते
हैं ॥६८॥ एक जाप की अपेक्षा जगन्य काल अनुसृद्धर्त
है ॥६९॥ उत्कृष्ट काल क्रम मै गैर, शार्दुस, तेइस, चौबीम,
पंचास, छीस, सत्तार्दुस, अद्वार्दुस, उन्तीम, तीम और इकतीस
सामग्र है ॥१००॥ सासादन और सम्यग्मिध्यादपि देवों का
काल मामान्य कथन के समान है ॥१०१॥ मन अनुदिश विमान
वासी दरों कथा अनुचर नामक ग्रन्थ, वैजयन्त, जयन्त और
अपराजित विमान वासी दरों म अमयत सम्यग्दपि देव
नाना जीवों की अपेक्षा संप्रकाश होते हैं ॥१०२॥ प्रक जाप
की अपेक्षा जगन्य काल कुछ अविक इकतीस सामर और चार
अनुचर विमानों मै कुछ अविक गैराम सामर है ॥१०३॥
उत्कृष्ट काल ग्रम से तीम प्रार तीम सामर है ॥१०४॥
मर्गधर्मिदि विमानवासी दरों म अमयत सम्यग्दपि देव
नाना जीवों की अपेक्षा मर्द काल होते हैं ॥१०५॥ एक
जाप की अपेक्षा जगन्य तम उत्कृष्ट काल तेतास सामर
है ॥१०६॥ इनि गतिमांगला गैर गैर गैर
इन्द्रिय सामरणा से सामान्य एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की
अपेक्षा मन काल होते हैं ॥१०७॥ एक जीव का अपेक्षा

जपन्य काल धुद भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०८॥ उत्कृष्ट काल
अनन्ते कालात्मक 'असरयात् पुटगल परिवर्तने है' ॥१०९॥
सामान्य बादर एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व
काल होते हैं ॥११०॥ एक जीव की अपेक्षा जपन्य काल
धुद भव ग्रहण प्रमाण है ॥१११॥ उत्कृष्ट काल अगुले प
असरयात्मे भाग प्रमाण असरयातासर्वात अपरिपर्णी
आर उत्सर्पिणी प्रमाण है ॥११२॥ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त
जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११३॥
एक जीव 'का अपेक्षा जपन्य काल अनन्तमुदूर्त है' ॥११४॥
उत्कृष्ट काल सर्वात हेनार वर्ष है ॥११५॥ 'नादग' एकेन्द्रिय
लब्ध एर्यापर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
हैं ॥११६॥ 'एक जीव की अपेक्षा जपन्य काल धुद भव ग्रहण
प्रमाण है ॥११७॥' उत्कृष्ट काले अनन्तमुदूर्त है ॥११८॥
सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व
काल होते हैं ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जपन्य काल धुद
भव ग्रहण प्रमाण है ॥१२०॥ उत्कृष्ट काल असरयात लाक
ऐ जितने प्रदग है उतने प्रमाण है ॥१२१॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय
पर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत है ॥१२२॥
एक जीव की अपेक्षा जपन्य काले अनन्तमुदूर्त है ॥१२३॥
उत्कृष्ट काल अनन्तमुदूर्त है ॥१२४॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध
पर्याप्त जीव नाना जीवों का अपेक्षा सर्व काल होते
हैं ॥१२५॥ 'एक जीव की अपेक्षा जपन्य काल धुद'

ग्रहण प्रमाण है ॥१२६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुद्दर्त है ॥१२७॥ सामान्य द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुर्निंद्रिय और उ हीं के पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल होते हैं ॥१२८॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अमश, भुट्ट भव ग्रहण और अन्तर्मुद्दर्त प्रमाण है ॥१२९॥ उत्कृष्ट काल सख्यात हजार रुप है ॥१३०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुर्निंद्रिय लब्धयपर्याप्तक जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१३१॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल भुट्ट भव ग्रहण, प्रमाण है ॥१३२॥ उत्कृष्ट काल, अन्तर्मुद्दर्त है ॥१३३॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पैचेन्द्रिय, पर्याप्तरों में मिल्याद्विष्ट, जीव नाना जीवों की अपेक्षा, सर्व काल, होते हैं ॥१३४॥ एक, जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुद्दर्त प्रमाण है ॥१३५॥ उत्कृष्ट काल एक हजार, सातांश आर पूर्व कीर्ति प्रथवत्त्व से कुछ अधिक है ॥१३६॥ सासाठन, स रोकर अयोगि केवली गुणस्थान तक के जीवों का काल, सामान्य कथन के ममान है ॥१३७॥ पचेन्द्रिय लब्धयपर्याप्तक जीवों का काल द्वीन्द्रियादि लब्धयपर्याप्तक जीवों के काल के समान सर्व कथन है ॥१३८॥

इति इडियमागणा

काय मार्गणा म सामान्य पृथी, जल, तम और वायु कायिक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व, काल होत है ॥१३९॥

है ॥१४०॥ उत्कृष्ट काल असरयात लोक प्रमाण है ॥१४१॥
 सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक
 के बादर-जीव, नाना जीवों की अपेक्षा- सर्व काल हात
 है ॥१४२॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल सुद भव ग्रहण
 प्रमाण है— ॥१४३॥ उत्कृष्ट- काल कर्म स्थिति, प्रमाण
 है ॥१४४॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति
 काय के बादर-पर्यास जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल
 हाते हैं ॥१४५॥ एक जीव की अपेक्षा, जनन्य काल अन्त-
 मुहूर्त है ॥१४६॥ उत्कृष्ट काल सरयात, हजार, वर्ष
 है ॥१४७॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु-और प्रत्येक वनस्पति
 कायिक के बादर, लच्छपर्यास कर, जीव, नाना, जीवों की
 अपेक्षा मर्म काल होते हैं ॥१४८॥-एक जीव की, अपेक्षा
 जनन्य, काल, सुद भव ग्रहण प्रमाण है ॥१४९॥ उत्कृष्ट काल
 अन्तमुहूर्त है ॥१५०॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति-और
 निगोद के सूखम जीव और-उनके ही, पर्यास- तथा अपर्यास
 जीवों का काल सूखम, एवेन्द्रिय पर्यास- और अपर्यासों के
 काल के समान है ॥१५१॥ सामान्य वनस्पति, कायिक जीवों
 का काल एवेन्द्रिय- जीवों के, काल, के समान है ॥१५२॥
 सामान्य निगोद जीव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
 हैं ॥१५३॥ एक जीव की, अपेक्षा, जनन्य काल, सुद भव
 ग्रहण, प्रमाण है ॥१५४॥ उत्कृष्ट काल अदाई, पुढ़गल परि-
 वर्तन, प्रमाण है, ॥१५५॥ बादर निगोद जीवों का, काल नानू

पृथ्वी कायिक" जीरों के समान है ॥१५६॥ सामान्यं त्रैम
कायिक और त्रैसर्वायिके पर्याप्तता में मिथ्यादृष्टि जीवे नानों
जीरों की अपेक्षा सर्व फाल होते हैं ॥१५७॥ एक जीव की
अपेक्षा जिवाय फाल अन्तर्मुदूर्त है ॥१५८॥ उत्कृष्ट "किल" पूर्व
दीटी पृथक्तरे से अविक्षिते हजार संग्रह और "पूरे दो हजार
साँगर है ॥१५९॥ मासांडों से लेकर "शेयोगि केवली" शुण
स्थान तक फाल काल सामान्यं कर्यन के समान है ॥१६०॥
त्रैमकायिक लेयेपर्याप्तता का फाल ट्रोडन्द्रियादि लब्ध-
पर्याप्तता के काले के समान समय केरने है ॥१६१॥ ॥१६१॥
इति वार्यमणिल ॥ ॥१६२॥

योग भारता से मर्य मनोयोगी और सर्व वचन योगी जीरों म
मिथ्यादृष्टि, असियत सम्बन्धदृष्टि, सयतामयता, प्रमत्त, अप्रमत्त आग
संयागि केवली जिन नाना जीरोंको अपेक्षा सर्व फाल होते
हैं ॥१६२॥ एक जीव ऐसी "अपेक्षा" जैवन्य दीले एक समय
है ॥१६३॥ उत्कृष्ट फाल अन्तर्मुदूर्त है ॥१६४॥ मासांडने रूप
कौल सामान्यं कर्यने के समान है ॥१६५॥ सम्योगम् योदृष्टि जीव
नानों जीरों की अपेक्षा एक समय होता है ॥१६६॥ उत्कृष्ट
करि प्रिल्य दे अमर्ल्यात्मे भाग है ॥१६७॥ एक जीव की
अपेक्षा जैवन्य काल एक समय है ॥१६८॥ उत्कृष्ट फाल
अन्तर्मुदूर्त है ॥१६९॥ चारों उपगमरु आग क्षेत्र, जीव नाना
जीरों की अपेक्षा जैवन्य काल एक समय होता है ॥१७०॥
उत्कृष्ट किल अन्तर्मुदूर्त है ॥१७१॥ एक जीव की अपेक्षा

एक जीर की अपेक्षा जगन्य काने अन्तर्मुहूर्त है ॥१६१॥
 उत्कृष्ट दान अन्तर्मुहूर्त है ॥१६२॥ सेवोगिरैरार्था जिने नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय होते हैं ॥१६३॥
 उत्कृष्ट काल सख्यात् समय है ॥१६४॥ एक जीर की अपेक्षा
 जगन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ॥१६५॥ वैक्रियर
 काययोगियों में मिथ्याहृष्टि और अग्रवत्तमस्यहृष्टि जीवों नाना
 जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१६६॥ एक जीर की अपेक्षा
 जगन्य काल एक समय है ॥१६७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त
 है ॥१६८॥ सासादन जीवों का काल सोमान्य कर्ता के समान
 है ॥१६९॥ मम्यग्नियाहृष्टि जीवों का काल भग्नोयोगियों
 के समान है ॥२००॥ रैक्रियर मिथ्र काययोगी जीवों में
 मिथ्याहृष्टि और असंयन मम्यग्निय जीव नाना जीवों की
 अपेक्षा जगन्य में अन्तर्मुहूर्त पाले तक होते हैं ॥२०१॥
 उत्कृष्ट काल पल्य के असख्यात्वे भाग है ॥२०२॥ एक
 जीर की अपेक्षा जगन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२०३॥ उत्कृष्ट
 काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२०४॥ सासादन जीवों का काल नाना
 जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय है ॥२०५॥ उत्कृष्ट
 काल पल्य के असख्यात्वे भाग है ॥२०६॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्य काल एक समय है ॥२०७॥ उत्कृष्ट काल
 एक समय केरम यह आमली प्रमाण है ॥२०८॥ आहारक
 काययोगियों में प्रमत्त मयते जीर नाना जीवों की अपेक्षा
 जगन्य से एक समय होते हैं ॥२०९॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त

मुहूर्त है॥२१०॥ एक जीव भी अपेक्षा जगन्य काल एक समय है॥२११॥ 'उत्कृष्ट' काल 'अन्तमुहूर्त' है॥२१२॥ प्राहरकमिश्र काययोगियों में प्रमत्त गयित जीव नाना जीवों से अपेक्षा जगन्य से अन्तमुहूर्त काल तक होते हैं॥२१३॥ उत्कृष्ट काल 'अन्तमुहूर्त' है॥२१४॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल 'अन्तमुहूर्त' है॥२१५॥ उत्कृष्ट काल 'अन्तमुहूर्त' है॥२१६॥ कार्मण दकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा नर काल होते हैं॥२१७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल एक समय है॥२१८॥ उत्कृष्ट काल 'तीन समय' है॥२१९॥ सासादन और असयत सम्यदृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय तक होते हैं॥२२०॥ उत्कृष्ट काल आवली के असरन्यातरें भाग हैं॥२२१॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल एक समय है॥२२२॥ उत्कृष्ट काल दो समय है॥२२३॥ सयागिरेवली, जिन नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से तीन समय तक होते हैं॥२२४॥ उत्कृष्ट काल सर्व यात समय है॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य और उत्कृष्ट काल 'तीन समय' है॥२२६॥ ॥ २२७ ॥ इति योगमार्गणां । ॥ २२८ ॥

मदमार्गणां से स्त्रीं प्रदिव्यामें। मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं॥२२७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल 'अन्तमुहूर्त' है॥२२८॥ उत्कृष्ट काल सख्य शत पृथक्त्व है॥२२९॥ सासादन जीवों का काल

सामान्य कथन के समान है॥२३०॥ सम्यग्मध्यादृष्टियों
 का काल सामान्य कथन के समान है॥२३१॥ असपत
 सम्यग्मध्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा । सर्व काल होत
 है॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है॥२३३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पचपन पद्धति है॥२३४॥
 मयूरा सयत स लेखर अनिट्टिरण गुणस्थान तक के जीवों
 का काल सामान्य कथन के समान है॥२३५॥ पुरुष वैदियों
 म मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत
 है॥२३६॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है॥२३७॥ उत्कृष्ट काल मागर शत पृथक्षत्व है॥२३८॥
 सामादन स लेखर अनिट्टिरण गुणस्थान तक प्रत्येक
 गुणस्थानवर्ती जीवों का काल सामान्य कथन के समान है॥२३९॥
 नपुमक वैदियों म मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों
 की अपेक्षा सर्व काल होते हैं॥२४०॥ एक जीव की अपेक्षा
 जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है॥२४१॥ उत्कृष्ट काल अनन्त कोला
 त्मक असर्वात पुद्गल परिपत्ति प्रमाण है॥२४२॥ सामादन
 जीवों का काल सामान्य कथन के समान है॥२४३॥ सम्यग्म
 मिथ्यादृष्टि का काल सामान्य कथन के समान है॥२४४॥
 असपत सम्यग्मध्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते
 हैं॥२४५॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त
 है॥२४६॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तेवीस मागर है॥२४७॥
 मयूरा मयूर स लेखर अनिट्टि परण गुणस्थान तक का

काल सामान्य कीयने के समान है ॥२४८॥ अपुगत रेदी जीवों में अनित्तिरुग्णे के अवेद भाग से लेकर अयोगिकैपली गुणस्थान तक का काल सामान्य उथन के समान है ॥२४९॥

इति वेदमागणा

क्षाय मार्गणों से क्रीघक्षायी, मानस्पायी, मायाकपायी और लाभक्षायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अपमत्त गुणस्थान तक का काल, मनोयोगियों के समान है ॥२५०॥ ग्रोध, मान और माया इन तीनों क्षणायों की अपेक्षा आठवें और नवें गुणस्थानपर्ती और लोभ क्षाय की अपेक्षा आठवें, नवें और दशवें गुणस्थानपर्ती उपरामन जीव नाना जीवों की अपेक्षा जनन्य से एक समय तक होता है ॥२५१॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है ॥२५२॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है ॥२५४॥ अदूरकरण और अनित्तिरुग्ण ये दो गुणस्थानपर्ती क्षणक तथा अदूरकरण अनित्तिरुग्ण और सूक्ष्म साप्तराय ये तीन गुणस्थानपर्ती क्षणक नाना जीवों की अपेक्षा जनन्य से अन्तमुहूर्त तक होता है ॥२५५॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है ॥२५६॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तमुहूर्त है ॥२५७॥ उत्कृष्ट काल अन्तमुहूर्त है ॥२५८॥ अक्षयी जीवों में अनित्त चतुर्गुणस्थानी जीव का काल सामान्य कर्त्तव्य के समान है ॥२५९॥

इति क्षणमार्गणा

शान मार्गणा से कुपति और कुश्रुत ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि
जीर्णों वा काल सामान्य रूपन के समान है ॥२६०॥ सासा
दन जीवों का काल सामान्य कथन, के समान है ॥२६१॥
रिंभगङ्गानियों में मिथ्यादृष्टि, जीर्ण नाना जीवों की अपेक्षा
मर्त काल होते हैं ॥२६२॥ एक जीर्ण वृक्ष अपेक्षा जावन्य काल
अन्तर्मुद्रित है ॥२६३॥ खत्तृष्ट काल कुछ कम तत्त्वीस सागर
है ॥२६४॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन, के
समान है ॥२६५॥ मतिश्रुत और अवधिनानी जीवों में अस
यते से लेकर क्षीणस्पाय गुणस्पान तक जीर्णों का काल
सामान्य रूपन के समान है ॥२६६॥ मन पूर्णय ज्ञानियों में
प्रमत्त सयत में लेकर क्षीण स्पाय गुणस्पान तक जीर्णों का
दील सामान्य रूपन के समान है ॥२६७॥ केवल ज्ञानियों
में अयोगिरेखा, और अयोगिरेखा जीर्णों वा काल सामान्य
रूपन के समान है ॥२६८॥

इति शानमार्गणा ॥ १८ ॥ १४५

मयम मार्गणा से सामान्य सयतों में प्रमत्त सयत से लेकर
अयोगिरेखा तक जीर्णों वा दील सामान्य रूपन के समान
है ॥२६९॥ सामायिर और उन्नेप्रस्पापना में प्रमत्त गुण-
स्पान से लेकर अनिट्टिकरण तक के जीर्णों का काल सामान्य
रूपन के समान है ॥२७०॥ परिहारगिशुद्धि में प्रमत्त और
अप्रमत्त का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७१॥ सूक्ष्म
साम्परायिर में उपर्युक्त और संपर्कों का काल सामान्य

स्थन के समान है ॥२७३॥ यथा रुद्धते में अन्विते चार गुणस्थान चाले जीवों का काल सामान्य स्थन के समान है ॥२७३॥ स्वयतामयतो वा कोले सामान्य कथन के समान है ॥२७४॥ असयत जीवों में मिथ्या द्वितीय में लेन्हर असयत गुणस्थान तरु असयतो वा काल सामान्य कथन के समान है ॥२७५॥

इति संयमसार्गेणा ॥

दर्शनमार्गणा स चमुदर्शनी जीवा में मिथ्याद्वितीय जीव नाना जीवों की अपश्चा सर्व भाल होते हैं ॥२७६॥ एक जीव की अपश्चा जगन्न्य काल अन्तर्मुद्रृत है ॥२७७॥ उत्कृष्ट काल दा हजार मागरे हैं ॥२७८॥ सामान्य से लेन्हर क्षीणकृपाय गुणस्थान तरु का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७९॥ अवधिदण्डनी जीवों का काल अवधिनानियों के समान है ॥२८०॥ अवधिदण्डनी जीवों का काल केरल नानियों के समान है ॥२८१॥ केवल दर्शनी जागों का काल केरल नानियों के समान है ॥२८२॥

इति संयमसार्गेणा

लेख्या भार्गणा से कृष्ण, नील और नापोत तेश्या गले जागों में मिथ्याद्वितीय जीव नाना जागों की अपेक्षा सर्व काल हान है ॥२८३॥ एक जीव की अपश्चा जगन्न्य काल अन्तर्मुद्रृत है ॥२८४॥ उत्कृष्ट काल क्रमश तर्तीम सागर, मत्तगह

गागर और सात सागर से कुछ अधिक है ॥२८५॥ सासाठन
जीवों का काल सामान्य - कथन के समान है ॥२८६॥ मम्य-
मिथ्यादृष्टि जीवों काल सामान्य, कथन के समान है ॥२८७॥
अमयत सम्यग्दृष्टि जीव-नाना जीवों की अपेक्षा "सर्व काल
होत है ॥२८८॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल अन्त-
मुर्हूर्त है ॥२८९॥ उत्कृष्ट काल तीस सागर, सत्तरह-मागर
और सात सागर से कुछ रम है ॥२९०॥ तेज और पद्मलैण्या
शालों में मिथ्यादृष्टि और अमयत सम्यग्दृष्टि, जीव-नाना
जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९१॥ एक जीव-की
अपेक्षा जगन्य काल अन्तमुर्दूर्न है ॥२९२॥ उत्कृष्ट काल
दा, सागर और अठारह मागर से कुछ अधिक है ॥२९३॥
सामादन जीवों का, काल सामान्य - कथन के समान
है ॥२९४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि, जीवों ना काल सामान्य करन
के समान है ॥२९५॥ मयतामयत, ममता और अममता जीव
नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९६॥ एक जीव
की अपेक्षा जगन्य, काल एक समय है ॥२९७॥ उत्कृष्ट काल
अन्तमुर्हूर्त है ॥२९८॥ शुभल लेण्या म मिथ्यादृष्टि जीव नाना
जीवों की अपेक्षा सर्व काल होत है ॥२९९॥ एक जीव की
अपेक्षा जगन्य काल अन्तमुर्हूर्त है ॥३००॥ उत्कृष्ट काल कुछ
अधिक तीस सागर है ॥३०१॥ सासाठन जीवों का काल
सामान्य कथन ने समान है ॥३०२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों
का काल सामान्य ने

इष्टः जीवों का कौल सामान्ये रुधन के समान है ॥३०४॥
भयतामयत, प्रगत और अप्रगत जीव भाना जीवों की अपेक्षा
सर्व कान होने हैं ॥३०५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य काल
एव ममय है ॥३०६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुद्दृत है ॥३०७॥
चारों उपशमक चारों क्षणक और मयोगिरेत्ती का काल
सामान्य कथन के समान है ॥३०८॥

“इति लेश्यमार्गणा”

भव्य मार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यान्पृष्ठ जीव नाना जीवों
की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३०९॥ एक जीव की अपेक्षा
अनादि मान्त और मादि मान्त काल है ॥३१०॥ इस
में से ‘मादि’ मान्त का पंथन इस प्रकार है ॥३११॥ जगत्य
काल अन्तर्मुद्दृत है ॥३१२॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्थ पुद्गल
परिवर्तन है ॥३१३॥ सासादन में लेकर अयोगिरेत्ती
गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥३१४॥
अभव्य जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होने
हैं ॥३१५॥ एक जीव की अपेक्षा अनादि और अनन्त काल
है ॥३१६॥

“इति भयमार्गणा”

सम्यक्त्वे मार्गणा से सामान्य सम्यग्विष्टि और क्षायक सम्य-
द्विष्टियों में असयत से लेकर अयोगिरेत्ती गुणस्थान तक का
काल सामान्यकथन के समान है ॥३१७॥ घेदक सम्यग्विष्टियों में
असयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का काल सामान्य-

करन के समान है ॥३१८॥ उत्तर मुम्यादिं जीरों में असपत्-
मुम्यादिं और मधुवामयवीर नाना जीरों की अपेक्षा जनन्य-
स अन्तर्मुहूर्त काल तर होते हैं ॥३१९॥ उत्तर फाल, पल्ला-
क थमर यात्रे भाग है ॥३२०॥ पर जीर वीर अपेक्षा जनन्य-
काने अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्तर काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥-
परमता में गमर उपजान्त, पपाय, गुणस्थान के जीव नाना-
जीरों की अपता जनन्य में पर ममय तर होते हैं ॥३२३॥
उत्तर काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२४॥ एक जीर वीर अपेक्षा-
जनन्य काल एक ममय है ॥३२५॥ उत्तर काल अन्तर्मुहूर्त
है ॥३२६॥ सासादन जीवों का काल सामान्य वयन के समान-
है ॥३२७॥ मम्यगिमिथ्यादिं जीरों का काल सामान्य वयन के
समान है ॥३२८॥ मिथ्यादिं जीरों का शुल सामान्य वयन-
के समान है ॥३२९॥

इति सम्यक्त्वं मागणा ।

सेवी मार्गणा से सेवी जीरों में मिथ्यादिं जीर नाना जीरों
की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३०॥ एक जीव की अपेक्षा-
जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३३१॥ उत्तर काल सागर-
शर पृथक्त्व है ॥३३२॥ सासादन स तर भीण पपाय
गुणस्थान तर का शुल सामान्य वयन के समान है ॥३३३॥ असेवी जीव नाना जीरों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३४॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य फल सुद-
भर ग्रहण समान है ॥३३५॥ उत्तर काल अन्तर्मुहूर्त काला-

तस्म अमरुपान प्रदृग्न परिवर्तन प्रमाण है ॥३३६॥

इति सैनीमारणा

आद्वार मार्गणा से आहारकों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा तर्ह काल दोते हैं ॥३३७॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३३८॥ उत्सृष्ट काल अगुल के असरयात्रवें भाग प्रमाण असरयात्रासम्बन्धात् अपमर्पिणी और उत्सर्पिणी है ॥३३९॥ सासादन से लेकर स्यागिनेश्वली गुणन्यान तक के आद्वारकों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३४०॥ अनाद्वारक जीवों का काल कामणि काय-यागियों के समान है ॥३४१॥ अयोगिनेश्वली का काल सामान्य कथन के समान है ॥३४२॥

इति आद्वारमार्गणा

इति कालाधिकार

अथ अन्तराधिकार

— ५५ —

अत्र कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य ऐ मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निम्नतर है ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्सृष्ट अन्तर छह दश दो छ्यासठ सागर है ॥४॥ सामादर्श और सम्या-

मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जबन्य स एक समय है ॥५॥ उत्कृष्ट अन्तर पाप के असत्यावर्त माप है ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य अन्तर प्रमण दल्य ए असरयातरे भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥७॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ रुम शर्व पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८॥ असयत स लोक अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है निरन्तर है ॥९॥ एक जीव की अपेक्षा जप्तय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१०॥ उत्कृष्ट अत्तर कुछ एक रुम शर्व पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥११॥ चारों उपशमनों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जबन्य से एक समय है ॥१२॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा जप्तय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ एक शर्व पुद्गल परिवर्तन काल है ॥१५॥ चारों क्षपक और अयागि केवली का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जबन्य स एक समय है ॥१६॥ उत्कृष्ट अन्तर उड़ मास है ॥१७॥ एक जीव की अपेक्षा अत्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१८॥ सयोगि केवलियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२०॥

इति साम परथा

गति मार्गणा - म - नरक गति में सामान्य नारस्तियों म मिथ्या

हृषि और शमयत् सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों
 की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२१॥ एक जीव की
 अपेक्षा जगन्य अन्तर अन्तर्मुद्दूर्त है ॥२२॥ उत्कृष्ट अन्तर
 कुछ कम तेतीस सागर है ॥२३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्या-
 दृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से
 एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असर्यात्मने
 भाग है ॥२५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर पल्य का
 असर्यात्मना भाग और अन्तर्मुद्दूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट अन्तर
 कुछ कम तेतीस मांगर है ॥२७॥ प्रथम पृथ्वी से लेकर
 सातवीं पृथ्वी तक के नारकियों में मिथ्यादृष्टि और असर्यत-
 सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों का अपेक्षा अन्तर नहीं
 है, निरन्तर है ॥२८॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर अन्त-
 मुद्दूर्त है ॥२९॥ उत्कृष्ट अन्तर एक, तीन, सात, दश, मत्तरह
 राईस, और तेतीम मांगर से कुछ कम है ॥३०॥ सासादन
 और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियों का अन्तर नाना जीवों की
 अपेक्षा जगन्य से एक समय है ॥३१॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य
 के असर्यात्मने भाग है ॥३२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य
 अन्तर क्रमशः पल्य का असर्यात्मना भाग और अन्तर्मुद्दूर्त
 है ॥३३॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः एक, तीन, सात, दश, सत्त-
 रह, बाईस और तेतीस सागर से कुछ कम है ॥३४॥
 तिर्यचगति में सामान्य तिर्यचों में मिथ्यादृष्टि जीवों का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है. निरन्तर ॥३....॥

एक जीव की अपेक्षा जरय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६॥
 उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य है ॥३७॥ सामादन से
 लेकर स्यतासयत गुणस्थान तक तो अन्तर सामान्य कथन
 के समान है ॥३८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यंच, पचेन्द्रिय
 तिर्यंच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में मध्या
 हृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
 है ॥३९॥ एक जीव का अपेक्षा जगन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥४०॥
 उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है ॥४१॥ सामादन
 और सम्यग्मित्याहृष्टिया का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जगन्य से एक समय है ॥४२॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के अम-
 रूपान्तरें भाग प्रमाण है ॥४३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य
 अन्तर कम से पल्य के असरभावों भाग और अन्तर्मुहूर्त
 है ॥४४॥ उत्कृष्ट पूर्व घोटि पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य
 है ॥४५॥ अस्यत मम्यदृष्टि का नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥४६॥ एक जीव की अपेक्षा
 जरय अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥४७॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व घोटि
 पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥४८॥ मयतासयत का
 नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहा है, न अन्तर है ॥४९॥
 एक जाग री अपेक्षा जगन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥५०॥
 उत्कृष्ट अतर पूर्व घोटि पृथक्त्व है ॥५१॥ पचेन्द्रिय
 तिर्यंच सब्यपर्याप्तियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर
 नहा है, निरन्तर है ॥५२॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतर

कु भव ग्रदण ममाण - है ॥४३॥ उत्कृष्ट अतर अनत काल
 ममाण अभरयात पुद्गल परिवर्तन है ॥४४॥ यह अतर गति
 भी अपेक्षा रहा गया है ॥४५॥ गुणस्यान की अपेक्षा जगन्य
 और उत्कृष्ट, इन दोनों प्रकार म अतर नहीं है, निरतर है ॥४६॥
 मनुष्य गति में मामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्तश्चौर
 मनुष्यनियों -मे मिथ्याद्विषि जीवों का नाना जीवों भी
 अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥४७॥ एक जीव वी अपेक्षा
 जगय अत्मुद्दूर है ॥४८॥ उत्कृष्ट अतर कुछ क्रम तीन पल्य
 है ॥४९॥ मामान्न और सम्यग्मध्याद्विष्यों का अन्तर नाना
 जीवों भी अपेक्षा जगन्य से-एक समय है ॥५०॥ उत्कृष्ट
 अनर पल्य के असम्भवातवे भाग है ॥५१॥ एक जीव वी अपेक्षा
 जगन्य अतर क्रम, से पल्य नाअसर यातवा भाग और अन्तमुद्दूर है ॥५२॥
 उत्कृष्ट अतर पूर्व कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तान
 पल्य है ॥५३॥ असयत सम्यग्द्विष्यों का नाना जीवों भी
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥५४॥ एक जीव वी
 अपेक्षा जगन्य -अतर -अत्मुद्दूर है ॥५५॥ उत्कृष्ट अतर पूर्व
 कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥५६॥ सयता-
 सयतों स लेरु, अममत तम नाना जीवों भी अपेक्षा अतर
 नहीं है, निरतर है ॥५७॥ एक जीव वी अपेक्षा जगय ,अतर
 अत्मुद्दूर है ॥५८॥ उत्कृष्ट अतर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥५९॥
 चारों उमग्मकों -का अतर नाना -जारों भी अपेक्षा जगन्य
 से एक समय है ॥६०॥ उत्कृष्ट-अतर वर्ष - ॥६१॥

एक जात की अपेक्षा जगत्न्य अतरं अत्मुद्दृत है ॥७२॥ उत्कृष्ट
अतरं पूर्व कोटि पृथगत्व है ॥७३॥ चारों क्षेपकं और अयोगि
मवलियों का अतरं नाना जीवों की अपेक्षा जगत्न्य से एक
समय है ॥७४॥ उत्कृष्ट अतरं छह मास और चर्षे पृथगत्व
है ॥७५॥ एक जात की अपेक्षा अतरं नहीं है, निरतरं
है ॥७६॥ मयोगि केमली का अतरं सामान्य मृत्युन् ये समान
है ॥७७॥ मनुष्य लड़ाय पर्याप्तर्हां का अतरं नाना जीवों की
अपेक्षा जगत्न्य से एक समय है ॥७८॥ उत्कृष्ट अतरं पल्य के
अमरयात्रे भाग है ॥७९॥ एक जीव की अपेक्षा जगत्न्य अतरं
भुद्ध भर ग्रहण प्रमाण है ॥८०॥ उत्कृष्ट अतरं अनन्त-
सालात्मक असर्व्यान् पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८१॥
यह अतरं गति की अपेक्षा कहा है ॥८२॥ शुण्ठस्यान की
अपेक्षा तो दोनों प्रकार से भी अतरं नहीं है, निरतरं
है ॥८३॥ दूर गति में सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि और
असर्यत मम्यदृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा
अंतरं नहीं है, निरतरं है ॥८४॥ एक जीव की अपेक्षा जगत्न्य
अतरं अत्मुद्दृत है ॥८५॥ उत्कृष्ट अतरं कुछ कम इकेतीसं
माग है ॥८६॥ मासादन और मम्यमिथ्यादृष्टि दबों की
नाना जीवों की अपेक्षा जगत्न्य अन्तरं एक समय है ॥८७॥
उत्कृष्ट अतरं पल्य का असर्यात्रवा भग है ॥८८॥ एक
जीव की अपेक्षा जगत्न्य अतरं क्रम से पल्य का असर्व्यात्रवा
भग और अत्मुद्दृत है ॥८९॥ उत्कृष्ट अतरं कुछ कम इन-

र्तम भागा है ॥६०॥ भयन गामी, स लेकर सहस्रार तक मिथ्यादृष्टि
 और असयत सम्यगदृष्टि, जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं
 है, निरदर है ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य अतर अत्मुरुर्ते
 है ॥६२॥ उल्काष्ट अतर क्रम से एक सागर, एक पल्य और
 हुठ अधिक दो, सात, दश, चौदह, मोलह और अहारह
 सागर, है ॥६३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का
 अतर स्वस्यान सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ आनत
 कल्प म लेकर नग्नग्रैमेयक विमानवासी देवों म मिथ्यादृष्टि
 और अमयत-सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अतर नहीं है, निरतर है ॥६५॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य
 अतर-अत्मुरुर्त-है ॥६६॥ उल्काष्ट अतर क्रम से कुछ क्रम
 बीस, बाईस, तैम्ब चौमीस, पच्चीस, छमीम, मत्ताईस, अड़ा-
 ईम, उनतीस, तीस और इकतीस सागर है ॥६७॥ सासादन
 और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का, अतर स्वस्यान सामान्य
 कथन के समान है ॥६८॥ अनुदिग्द को आडि लेकर सर्वादि
 मिठि विमान, घामी देवों म असयत सम्यग्दृष्टि देवों का
 अतर नहीं है, निरतर है ॥६९॥ एक जीव की अपेक्षा अतर
 नहीं है, निरतर है ॥१००॥

इति गतिमार्गणा

उन्निय मार्गणा मे सामान्य एकेन्द्रियों का, नाना जीवों की
 अपेक्षा, अतर नहीं है, निरतर है ॥१०१॥, एक जीव की
 अपेक्षा जबन्य अतर भुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०२॥, उल्काष्ट

अतरं पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक दो हजार । मांग है ॥१०३॥ सामान्य ब्रादर एकेन्द्रियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहा है, निरतर है ॥१०४॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतरं क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०५॥ उत्कृष्ट अतर असर्व्यात लोक प्रमाण है ॥१०६॥ इसी प्रसार से बादर एकेन्द्रियलब्ध पर्याप्तिक और चान्द्र एकेन्द्रिय पर्याप्तिसमां का अतर जानना चाहिये ॥१०७॥ सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय लायभर्याप्ति जीवों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा अतरं नहा है, निरतर है ॥१०८॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतरं क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०९॥ उत्कृष्ट अतर अङ्गूल के असरयातरें भाग असर्व्यातासर्व्यात उत्सर्पिणी और अमर्पिणी काल प्रमाण है ॥११०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरन्द्रिय और उन्हीं के पर्याप्तक तथा लायभर्याप्ति जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१११॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तरं क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥११२॥ उत्कृष्ट अतर अनन्त कालात्मक अमरयात पुद्रगल परिवर्त है ॥११३॥ सामान्य पचन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तिसमां भिन्न्यादिष्ट जीवों का अन्तरं सामान्य वयन के समान है ॥११४॥ सामादन और सम्यग्मिन्न्यादिष्ट जीवों का अन्तरं नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय है ॥११५॥ उत्कृष्ट अन्तरं पहर के असर्व्यातरें भाग है ॥११६॥

एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर ग्रम से पल्य के असर्वत्यात्में
भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥११७॥ उत्कृष्ट अतरं पूर्व कोटि पृथकत्वे
से अधिक एक हजार सागर है, तथा सागर शतं पृथकत्व है
॥११८॥ असयत्र से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तकं प्रत्येक
गुणस्थानर्तीं जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तरं नहीं है,
निरन्तर है ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जेऽन्य अन्तरं अन्तर्मुहूर्ते
है ॥१२०॥ उत्कृष्ट अतरं पूर्व कोटि प्रथकत्वे से अधिक सहस्रं सागरं
भीं शतपृथकत्वं सागर है ॥१२१॥ चारों उपरामर्तों का अतरं
न ना जीवों की अपेक्षा समान्यं कथन के समान है ॥१२२॥ [एक
जीव की अपेक्षा जगन्य अतरं अन्तर्मुहूर्त है ॥१२३॥] उत्कृष्ट
अतरं पूर्व कोटि पृथकत्वे से अधिक सागरं सहस्रं और सागरशतं
पृथकत्व है ॥१२४॥ चारों सपकं और अयोगिकेवलीं का अतरं
सामान्यं कथन के समान है ॥१२५॥ सयोगिसेवलीं का अतरं
सामान्यं कथन के समान है ॥१२६॥ पचेन्द्रियं लब्ध्यपर्याप्तिकों
का अन्तरं। द्विन्द्रियादि लभ्यपर्याप्तिकों के समान सर्वं
पृथकत्वं है ॥१२७॥] यह गति की अपेक्षा अन्तरं कहा है ॥१२८॥
गुणस्थान की अपेक्षा दोनों ही प्रकार से अन्तरं नहीं है, निरतरं
है ॥१२९॥ । । , । । , । ।

" इति इन्द्रियमार्गणा । । , ।
पायमार्गणा स पृथ्वी, जल, तेज, वायु, के घादर और सूर्यम्
तथा उन मनके पर्याप्त और अपर्याप्त ॥ जीवों को नाना
जीवों शी अपेक्षा अतरं नहीं है, निरतरं है ॥१३०॥ एक जीव

की, अपसा जपन्य अन्तर- खुदभर ग्रहण भमाण है ॥१३१॥
 उत्कृष्ट, अतर यनवकालात्मक (असरथात् पुढ़गल परिवर्तन, है ॥१३२॥) यनस्त्रियायि-, -निगाड, नीग, इनके चालू, वा सूक्ष्म दार, उन के पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीवा ना नाना जीवों की अपेक्षा, अतर नहीं है, निरत ॥१३३॥ एव जीव की अपेक्षा नवन्य अतर खुदभरग्रहण भमाण है ॥१३४॥ उत्कृष्ट अतर, (अस्त्रव्यात् लोक, है ॥१३५॥) बादर- यनस्त्रियायि- पर्यक शरीर, शौर, चर्नके पर्याप्तत तथा ।, अपर्याप्तक जीवों का नाना, जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥१३६॥, प्रत जीव की अपेक्षा जपन्य अतर खुदभर ग्रहण भमाण है ॥१३७॥ उत्कृष्ट, अन्तर, दाई पुढ़गल परिवर्तन भमाण है ॥१३८॥ सामान्य यमसायि- आदि यमसायि- पर्याप्तक जार्द-म विषयाद्विज जीवों ना, अतर समिय क्षयन, पे भमान है ॥१३९॥ सामादन जीर, सम्पर्मिष्याद्विज, जीवोंका अन्तर नाना, जावोंकी अपेक्षा-, सामान्य वरनात्मे- भमाना है ॥१४०॥ एव जीव, की अपेक्षा जपय अन्तर-क्षमग, एवय, रे असरथात्मे भर अर्थात् अन्तमुहुर्त, है ॥१४१॥ (उत्कृष्ट अतर प्रभग पूर्णता एव वृद्धि दो हजार मात्र थाँग कुड़ा कम)। दो हजार मात्र है ॥१४२॥ असंयत से लेकर अभ्यमन्तमधत गुणस्वरूप नक, जीवों, का- नाना, जीवों-की, क्षमपरा, अतर, जीवों, है, निरतर है ॥१४३॥ एव जीव की अपेक्षा। जपय अन्तर अन्तर सुन्दर है, ॥१४४॥ उत्कृष्ट, अन्तर, पूर्णता एव पृथक्षय स । अभिक-

दो सहस्र सागर और कुछ रुम दो सहस्र सागर है ॥१४६॥
 चारों उपशमनों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा मामान्य
 रथन के 'समान' है ॥१४७॥ एक जीव 'वी' अपेक्षा जन्मन्य
 अन्तर अन्तर्मुद्रृत है ॥१४८॥ उत्तरप्ति अन्तर क्रमशः पूर्णोटि
 पृथक्तर से अधिक दो सहस्र सागर तथा कुछ कम दो सहस्र
 सागर है ॥१४९॥ चारों क्षेत्र और अयोगिकली का अन्तर
 मामान्य क्रमन के समान है ॥१५०॥ संशोधिकली का अतर
 सामान रथन के समान है ॥१५१॥ त्रिमायिकल-योग्यासनों
 का अतर दोइन्द्रियादि तर्थ-योग्यासनों के समान सर्व
 क्रमन है ॥१५२॥ यह अंतरों कायमीं अपेक्षा कही है।
 गुणस्थान की अपेक्षा दोनों ही प्रकार से अंतर नहीं है, निरतर
 है ॥१५३॥

इति वायमार्गणा

योग भोगणा में मर्द मनोयोगी, सर्व चर्चनयोगी, मामान्य
 राययोगी और अंदारिक काययोगियों में, निर्व्याहष्टि, अस-
 यत सम्यग्भजि संयतीयत्ते, प्रमत्त, अप्रमत्त और मयोगि-
 येयलियों की नाना जीवों वी और एक जीव की
 अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५३॥ सामाइन और
 सम्यग्याहष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
 जन्मन्य स। एक भवय है ॥१५४॥ उत्तरप्ति अन्तर पल्ल के
 अमन्यतरे भी इस है ॥१५५॥ एक जीव वी अपेक्षा अन्तर
 नहीं है, निरन्तर है ॥१५६॥ चारों उपगमकों का अन्तर

नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य क्यन के समान है ॥१५७॥
एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५८॥
चारों भृपकों का अन्तर सामान्य क्यन के समान है ॥१५९॥
आंदारिकमिश्र - काययोगियों में, मिथ्यादृषि - जीवों का
नाना जीवों और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
है ॥१६०॥ सामादन का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
सामान्य क्यन के समान है ॥१६१॥ एक जीव की अपेक्षा
अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६२॥ असत्यतमन्यगृहियों
का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य म एक समय
है ॥१६३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व ममाण है, ॥१६४॥
एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६५॥
सदोगिसेवली जिनों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा
जगन्य से एक समय है ॥१६६॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व
है ॥१६७॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर
है ॥१६८॥ वैक्रियकसाययोगियों - में, आदि के चारों गुण
म्यानन्तरी जीवों का अन्तर मनोयोगियों के समान है
॥१६९॥ वैक्रियकमिश्र, काययोगियों म, मिथ्यादृषियों का
अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय
है, ॥१७०॥ उत्कृष्ट अन्तर - वारह, मुहूर्त है, ॥१७१॥
एक जीव की अपेक्षा - अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७२॥
सामादन और असत्यत सम्यगृहियों का अन्तर आंदारिक-
मिश्र काययोगियों के समान है ॥१७३॥ आहारक काययोगी

और आहारकमिश्रकायपोगियों में नाना जीवों की अपेक्षा जनन्य के उत्तर वर्षपूर्वत्व है ॥१७॥ इन्होंने जीवों के अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१८॥ इन्होंने जीवों के मिथ्यादृष्टि, सासादन, असयत्वे संकल्पना के अन्तर और अद्वितीयों का अन्तर आंदारिकमिश्र कायेन्द्रि के मात्र है ॥१९॥

इति योगः

यह मार्गणा से स्वीचेदियों के उत्तर वा जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर है ॥२०॥ एक जीव की अपेक्षा जनन्य के उत्तर है ॥२१॥ उत्तर अन्तर कुछ कम उत्तर है ॥२२॥ मासादन और सम्यग्मध्यादृष्टि जीवों के नाना जीवों की अपेक्षा सामान्यव्यवहार के उत्तर है ॥२३॥ एह जीवों की अपेक्षा जनन्य अतग कमशः पन्द्रह लक्ष्मीनारायण भाग और सुहृत्व है ॥२४॥ उत्तर उत्तर और शुद्ध है ॥२५॥ असयत स उत्तर गुणम्यान तथा गुणस्यानवर्ती जीवों का उत्तर वा अपेक्षा अन्तर है ॥२६॥ एह उत्तर अपेक्षा जनन्य है ॥२७॥ सुहृत्व है ॥२८॥ उत्तर के उत्तर गत पृथक् नाना अपूर्वकरण और अविद्या, उपशमन के जीवों की अपेक्षा जनन्य के उत्तर अवर्त नाना के अमान है ॥२९॥ तीव्र की

अन्तर अन्तर्मुहूर्तं ॥१८॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व्य शत पूर्वल-
 है ॥१८॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, क्षपकों, का
 अन्तर, जाना जीवों सी अपेक्षा ज्ञवय से एक समय है ॥१९॥-
 उत्कृष्ट अन्तर प्रपूर्वकरण है ॥१९॥ एक जीव की अपेक्षा,
 अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२०॥ पुराप देवियों में मिथ्यान-
 इतियों, जो अन्तर मामान्य, कथन के समान ॥२०॥ मासाद्वा-
 आम सम्यग्मिथ्यादितियों, जो अन्तर, जाना जीवों की अपेक्षा
 ज्ञवन्य से एक समय है ॥२१॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व्य का अस-
 स्त्यात्मा, भाग है ॥२१॥ मासादन- और यम्यग्मिथ्यादिति-
 जीव, जो एक जाति की अपेक्षा ज्ञवन्य अन्तर नंभर पूर्व्य
 रा अमरयात्रा- भाग अन्तर्मुहूर्त है ॥२२॥ उत्कृष्ट अन्तर-
 मागर शत- पूर्वकरण है ॥२३॥ अभयत स-लेख, अप्रभत्त-
 गुणम्यात्म तम, कुड़ाजाना जीवों की अपेक्षा ॥ अन्तर
 नहीं है, निरन्तर है ॥२४॥ ज्ञवन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२५॥
 उत्कृष्ट, अन्तर मागर शत पूर्वकरण है ॥२६॥ अपूर्वकरण-
 और अनिवृत्तिकरण, उपगमकों वा, अन्तर जाना जीवों की
 अपेक्षा मामान्य, कथन के, समान है ॥२७॥ एकाजीव
 रा अपेक्षा ज्ञवय, अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२८॥ उत्कृष्ट अतर
 मागर, शत, पूर्वल, है ॥२९॥ अपूर्वकरण ॥ और
 अनिवृत्तिकरण क्षपरा कर अन्तर जाना जीवों की, अपेक्षा ज्ञवन्य
 से एक समय है ॥२०॥ उत्कृष्ट अतर, कुड़ा, अधिक- एवं
 चर, है ॥२१॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर, नहीं है, निरन्तर

है ॥२०६॥ नपेषका वेदियों में मिव्यादपि जीरों का
नाना जीरों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर
है गा ॥२०७॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अंतर अन्तरुत्त
है ॥२०८॥ उत्कृष्ट अन्तरेर कुर्द किम तत्त्वम सांगर है ॥२०९॥
मामान्त्र से लेकर अनिवृत्तिरूप उपगमक गुणस्थान
तक एक अतरं सामान्य कथने के समान है ॥२१०॥
अपूर्वकरण और अनेवृत्तिकरण, क्षदको का अतरं नाना
जागा की अपेक्षा जग्न्य संपर्क भवय है ॥२११॥
उत्कृष्ट अतरं वर्ष पृथक्त्व है ॥२१२॥ एक जीव की अपेक्षा
यतर नहीं है, निरतर है ॥२१३॥ अवर्गत वेदियों में अनटृत्ति
करण और सूक्ष्म सापराय उपगमका का अतरं नाना जीरों
से अपेक्षा जग्न्य से एक समय है ॥२१४॥ उत्कृष्ट अन्तरं
वर्ष पृथक्त्व है ॥२१५॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अतरं
अन्तरुत्त है ॥२१६॥ उत्कृष्ट अन्तरं अन्तरुत्त है ॥२१७॥
उपशान्तीकरणाय बाला का अन्तरं नाना जीरों का अपेक्षा
जेष्य से एक समय है ॥२१८॥ उत्कृष्ट अन्तरं यत्र पृथक्त्व
है ॥२१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तरं नहीं है, निरन्तर
है ॥२२०॥ अनिवृत्तिकरण इपक, सूक्ष्मसापराय क्षपक,
सीणकपायो और योगिकेली जीरों का ॥२२१॥ अन्तरं सामान्य
पथने के समान है ॥२२२॥ सयोगिकेली का अन्तर
सामान्य भवन के समान है ॥२२३॥ ॥२२४॥ ॥२२५॥ ॥२२६॥
इति प्रभार्गला ॥२२७॥ ॥२२८॥

क्षयमर्गणा से क्रोधकपायी, मानकुपायी, मायारूपायी और लोभरूपाइयों में मिथ्यादृष्टि से लेह सूदम सामराय, उपशमक और धृष्टक तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का, अतर मनोर्यागियों के समान है ॥२२३॥ अकाशायियों में उपशान्त दपाय का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय है ॥२२४॥ उत्कृष्ट अतर वर्ष पृथकत्व है ॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२२६॥ अकुपायी-जीवों में धीणकुपाय और अयोगिसेवली जिनों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२२७॥ सयोगिसेवली जिनों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२२८॥

तिवरयमर्गणा ॥२२९॥ इनमार्गणों में मत्यज्ञानी, थ्रुताज्ञानी और त्रिभगज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का नाना-जावों की और एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२२१॥ सासादन का अतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२३०॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२३१॥ मतिज्ञान, थ्रुतिज्ञान और अवधिज्ञान चालों में अमयतसम्यग्निदृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर, अन्तर्मुद्दृत है ॥२३३॥ उत्कृष्ट अतर कृद कम पूर्वकोटि है ॥२३४॥ सप्तासयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२३५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर, अन्त-

मुहूर्त है ॥२३६॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अभिक व्यामठ सागर है ॥२३७॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२३८॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३९॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अभिक तीम भागर है ॥२४०॥ चारों उपशमकों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जग्न्य से एक समय है ॥२४१॥ उत्कृष्ट अतर वर्षपूर्वकत्व है ॥२४२॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४३॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अभिक व्यामठ सागर है ॥२४४॥ चारों क्षपकों का अतर सामान्य रथन के समान है। बिशेष यान यह है कि अवधिवानियों में क्षपकों को अतर वर्षपूर्वकत्व है ॥२४५॥ मन, पर्ययवानियों में प्रमत्त और अप्रमत्त सयतों रा नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२४६॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४७॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४८॥ चारों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जग्न्य से एक समय है ॥२४९॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपूर्वकत्व है ॥२५०॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व कोटी है ॥२५२॥ चारों क्षपकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जग्न्य से एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपूर्वकत्व है ॥२५४॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२५५॥ एकलज्ञानी जीव म मयोगिरेत्ती का अन्तर मामा-

न्य कथन के समान है ॥२५६॥ अयोगिसेवली का अतर सामान्य रूपन के समान है ॥२५७॥

इति ज्ञानप्राप्तिः

मयम भार्गणा से सामान्य सयतों म प्रमत्त से लेकर उपगान्तकपाय तत्र के सयतों का अन्तर मन पर्यय शानियों के समान है ॥२५८॥ चारों क्षपर और अयोगिसेवली सयतों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२५९॥ मयागिसेवली सयतों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२६०॥ सामायिक और छेदोपग्रापना म प्रमत्त तथा अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२६१॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥२६२॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥२६३॥ दोनों उपगमर्णों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जबन्य से एक समय है ॥२६४॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्पण्यकत्व है ॥२६५॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥२६६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व थोटी है ॥२६७॥ दोनों क्षपरों का नाना और एक जीव की अपेक्षा जबन्य और उत्कृष्ट अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२६८॥ पग्हार शुद्धि म प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२६९॥ एक जीव की अपेक्षा जबन्य अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥२७०॥ उत्कृष्ट अतर अन्तर्मुद्दृत है ॥२७१॥ मूद्रप सापरायर मे मूद्रप सापरायर उपगमर्णों का अतर नाना जीवों की

अपेक्षा जगत् से एक समय है ॥२७२॥ उत्कृष्ट अतर वर्ष पृथक्त है ॥२७३॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२७४॥ क्षणों का अतर मामान्य कथन के समान है ॥२७५॥ यथाग्रात् सयतों में चारों गुणस्थानों का अतर असपायी जीवा के समान है ॥२७६॥ मयतासयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२७७॥ असयतों में मिथ्यादृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२७८॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७९॥ उत्कृष्ट अतर कुछ कम तरीके सागर है ॥२८०॥ मासादन मन्यग्निध्यादृष्टि और असयत मन्यग्निध्यादृष्टि जीवों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२८१॥

१ २ ३

इति सद्यममागणा

दर्शन मार्गण से चक्षुदर्शनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२८२॥ सावादन और मन्यग्निध्यादृष्टियों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२८३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतर क्रपण, पल्य का असख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२८४॥ उत्कृष्ट अतर कुछ कम दो हजार सागर है ॥२८५॥ अमयत से लेकर अपमत्ता गुणस्थान तक का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२८६॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥२८७॥ उत्कृष्ट अतर कुछ कम दो

हजार सागर है ॥२८८॥ जीर्णों का अपेक्षा सामान्य कथन के समान ॥२८९॥ एक जीर्ण की अपेक्षा जनन्य अन्तर्मुद्दूर्त है ॥२९०॥ उत्कृष्ट अतर कुछ रुम दो हजार सागर है ॥२९१॥ क्षपकों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२९२॥ अचक्षुटशर्णियों में मिथ्यादृष्टि से लेन्द्र क्षीणकपाय गुणस्थान तक प्रत्यक्ष गुणस्थानदर्तीं जीर्णों का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२९३॥ अवधिदर्शनी जीर्णों का अतर अवधिज्ञानियों के समान है ॥२९४॥ रेवलदर्शनी जीर्णों का अतर रेवलज्ञानियों के समान है ॥२९५॥

८८ शर्ण उमागणा

न या भार्गण स कण्ठालेश्या, नीलनेश्या और काषोत्तलेश्या गालों में मिथ्यादृष्टि और असयतमम्यगदृष्टि जीर्णों का नाना जार्णों की अपेक्षा अन्तर नहीं है; निरतर है ॥२९६॥ एक जीर्ण की अपेक्षा जनन्य अतर अन्तर्मुद्दूर्त है ॥२९७॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमग छुद कम तेतीस, सत्तरह और सात सात सागर है ॥२९८॥ सोमान्त्र और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जार्णों का अतर नाना जीर्णों की अपेक्षा सामान्य कथन ने नमान है ॥२९९॥ एक जीर्ण की अपेक्षा जनन्य अतर क्रमशः ८८ व असरयात्रा भाग आर अन्तर्मुद्दूर्त है ॥३००॥ रुच्य अतर छुठ रुम ततीस, सत्तरह और सात सात सागर है ॥३०१॥ तंगालेश्या और पश्चनेश्यागाला: ग मिथ्यादृष्टि

औंग अमर्येत मन्मयद्विष्ट जीवों सा नाना जीवों भी अपेक्षा अतरु
 नहीं है, निरतर है ॥३०२॥ एक जीव की अपेक्षा जगत्य
 अतरु "अन्तर्मुहूर्त है" ॥३०३॥ उत्कृष्ट अतरु कुछ अधिक दो
 सागर और अद्वाह सागर है ॥३०४॥ मामादन और मन्मय
 मिथ्याद्विष्ट जीवों का अतरु नाना जीवा भी अपेक्षा सामान्य
 अवस्थे समान है ॥३०५॥ एक जीव भी अपेक्षा जगत्य
 अतरु द्रव्यशे, इत्य ऐसे सरयातरै भाग और अन्तर्मुहूर्त है
 ॥३०६॥ उत्कृष्ट अतरु व्रेमण युछ अधिक तो गागर और
 अद्वाह सागर है ॥३०७॥ "मयतामदद, प्रमत्त और अप्रमत्त
 जीवों सा नाना और एक जीव भी अपेक्षा अतरु नहीं
 है, निरन्तर है ॥३०८॥" सुबललेण्या रालों म मिथ्याद्विष्ट और
 प्रमयतुसम्यद्विष्ट जीवों सा नाना जीवों भी अपेक्षा
 अतरु नहीं है, निरतर है ॥३०९॥ एक जीव भी अपेक्षा
 जगत्य अतरु अन्तर्मुहूर्त है ॥३१०॥ उत्कृष्ट अतरु कुछ रम इन्द्रीय
 तोंगर है ॥३११॥ सासान्न और मन्यग्निथ्याद्विष्ट जीवों सा
 अन्तरु जाना जीवा भी अपेक्षा सामान्य पापन ऐ यमान है
 ॥३१२॥ एक जीव भी अपेक्षा जगत्य अतरु द्रव्य पाप का
 अपरयात्रा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३१३॥ उत्कृष्ट अतरा
 कुछ रम इन्द्राम मागर है ॥३१४॥ मयतामयत और प्रमत्त
 मयतों सा जाना और एक जीव भी अपेक्षा अतरु नहीं
 है, निरन्तर है ॥३१५॥ अप्रमत्त या जाना जीवा भी
 अपेक्षा अन्तरु नहीं है, निरन्तर है ॥३१६॥ एक

जग्न्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१७॥ उत्कृष्ट अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१८॥ अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म सापराय गुणस्वानवता तीनों उपशमक जीवों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जग्न्य से एक समय है ॥३१९॥ उत्कृष्ट अतर अपपृथक्त्व है ॥३२०॥ एक जीव की अपेक्षा जग्न्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्कृष्ट अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥ उपशान्त कराय वालों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जग्न्य में एक समय है ॥३२३॥ उत्कृष्ट अतर वर्ष पृथक्त्व है ॥३२४॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥३२५॥ चारों भूपर्णों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२६॥ मयोगिमेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२७॥

इति लेश्यामागणा

भव्यमार्गणा से भव्यों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयागिमेवली तक प्रयोग गुणस्वानवर्ती जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२८॥ अभव्य जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३२९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३०॥

इति भव्यमागणा

मम्यमत्यमार्गणा स सामान्य मम्यदृष्टियों में असमय सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३१॥ एक जीव नीं अपेक्षा जग्न्य अन्तर

अन्तमुहूर्त है ॥२३७॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व काटी है
 ॥२३८॥ संयतामयत स लैकर उपशान्तकपाय गुणस्थान तद
 प्रयोग गुणस्थानपर्तीयों का अन्तर अविज्ञानियों दे समान है
 ॥२३९॥ चारों क्षणक और अयोगिकेवलियों का अन्तर
 सामान्य कथन क समान है ॥२४०॥ मयोगिकेवली का
 अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२४१॥ कायिक सम्यग्द्विष्टियों
 म असयत सम्यग्द्विष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा
 अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२४२॥ एक जीव की अपेक्षा
 जपन्य अन्तर अन्तमुहूर्त है ॥२४३॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम
 पूर्णसौरी वर्ष है ॥२४४॥ मयतामयत और प्रमत्तासयत जीवों
 का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है
 ॥२४५॥ एक जीव की अपेक्षा जपन्य अन्तर अन्तमुहूर्त है
 ॥२४६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तत्त्वास मागर है ॥२४७॥
 चारों उपशमकों का नाना जीवों की अपेक्षा जपन्य स एक
 समय अन्तर है ॥२४८॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपूर्यक्त्व है
 ॥२४९॥ एक जीव की अपेक्षा जपन्य अन्तर अन्तमुहूर्त है
 ॥२४१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तत्त्वास मागर है ॥२४२॥
 चारों क्षणक और अयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के
 समान है ॥२४३॥ सयोगिकेवली मा अन्तर सामान्य कथन
 के समान है ॥२४४॥ उद्दक सम्यग्द्विष्टियों म अमयत सम्यग्द्विष्टियों
 मा अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२४५॥ मयतामयतों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं

है, निरतर है ॥३५०॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥३५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम त्रयास्थ सागर है ॥३५२॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अतंग नहा ह, निरतर है ॥३५३॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतंग अन्तर्मुद्दृत है ॥३५४॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अधिक तीसां सागर है ॥३५५॥ उपरुमर मन्यगट्ठिया में अमयन सम्यग्विदि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य प्रतर एक समय है ॥३५६॥ उत्कृष्ट अतर सात दिन रात है ॥३५७॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतंग अन्तर्मुद्दृत है ॥३५८॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥३५९॥ मयतासयतों का नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य अतंग एक समय है ॥३६०॥ उत्कृष्ट अतर चाँड़, दिन रात है ॥३६१॥ एक जात की अपेक्षा जगन्य अतर अन्तर्मुद्दृत है ॥३६२॥ उत्कृष्ट अतंग अन्तर्मुद्दृत है ॥३६३॥ प्रमत्त और अप्रमत्त मयतों का नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य प्रतर एक समय है ॥३६४॥ उत्कृष्ट अतर पन्द्रह दिन रात है ॥३६५॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अतंग अन्तर्मुद्दृत है ॥३६६॥ उत्कृष्ट अतर अन्तर्मुद्दृत है ॥३६७॥ तीनों उपशमर्ता का अतंग नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य सु एक समय है ॥३६८॥ उत्कृष्ट अन्तर यर्प पृथक्क्ल है ॥३६९॥ एक जीव की अपेक्षा जगन्य अन्तर अन्तर्मुद्दृत है ॥३७०॥ उत्कृष्ट प्रतर अन्तर्मुद्दृत है ॥३७१॥

भारत इपाय जीवों का । नाना । जीवों एवं अपेक्षा जगन्य
न्तर । एक समयम है ॥३७२॥ उत्कृष्ट अन्तर एवं पृथक्त्व
॥३७३॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निर-
तर है ॥३७४॥ मासादन और सम्यग्मिध्यादप्ति जीवों
मत्र अतर नाना जीवों की अपेक्षा जगन्य से एक समय है
॥३७५॥ उत्कृष्ट अतर पल्य का । असर्वात्मा भाग है
॥३७६॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है
॥३७७॥ मिध्यादप्ति जीवों का नाना और एक जीव
की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥३७८॥ ॥ २६१॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा ॥ २६२ ॥ इति सूनीमार्गणा ॥
नी मार्गणा से सूनी । जीवों में मिध्यादप्तियों का अतर
मान्य कथन के समान है ॥३७९॥ मासादन से लेकर
पशान्तक्षय जीवों का अतर पुनर्प्रेदियों के समान
॥३८०॥ चारों भूपरों का अतर मामान्य कथन वे समान
॥३८१॥ असूनी जीवों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा
अतर नहीं है, निरतर है ॥३८२॥ ॥३८३॥ एक जीव की
अपेक्षा समान्य कथन के समान है ॥३८४॥ एक जीव

इति सूनीमार्गणा ॥

आहार मार्गणा से आहारक जीवों में मिध्यादप्तियों का
अतर समान्य कथन के समान है ॥३८५॥ सासादन
और सम्यग्मिध्यादप्तियों का अन्तर नाना जीवों की
अपेक्षा समान्य कथन के समान है ॥३८६॥ एक जीव

की—अपेक्षा जवन्य,, अन्तर पल्य का असख्यातवा भाग थोर अन्तर्मुहूर्त है ॥३८६॥ उत्कृष्ट अन्तर अगुल के असख्यातवे भाग प्रमाण असरयातासरयोत् उत्सर्पिणी और अपसर्पिणी काल है ॥३८७॥ असयत से, लेकर अप्रमत्त सयत शुणस्थान तर जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥३८८॥ एक जीव की अपेक्षा जवन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥३८९॥ उत्कृष्ट अतर अगुल के असरयातवे भाग प्रमाण असरयातासख्यात अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी पाल है ॥३९०॥ चारों उपशमरों पा नाना जीवों की अपेक्षा अतर सामान्य कथन के समान है ॥३९१॥ एक जीव की अपेक्षा जवन्य अतर अतर्मुहूर्त है ॥३९२॥ उत्कृष्ट अतर अगुल के अमर्ख्यातवो भाग प्रमाण, असरयातासरयात उत्सर्पिणी और अपसर्पिणी है ॥३९३॥ चारों सपकों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९४॥ सयोगिमेली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९५॥ अनादारक जीवों की अन्तर कार्मण काय योगियों के समान है ॥३९६॥ किन्तु विशेषता ये है कि सयोगिमेली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९७॥

इति आदीरमार्गणी

— ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए
ए
ए
ए ए

॥५॥ श्रव्य भावाधिकार ॥५॥ भाव ॥५॥

प्रिया ॥५॥ २। भाव से सामान्य कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार है ॥६॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि औदृष्टिक भाव है ॥७॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥९॥ असंयतमन्यगृहिति औपशमिक भाव भी है, क्षयिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥१०॥ किन्तु असंयतत्व औदृष्टिक भाव से है ॥११॥ संयता संयत, प्रभूत्तसंयत और अप्रभूत्तसंयत क्षयोपशमिक भाव है ॥१२॥ अपूर्व करण औदृष्टिक चारों गुणस्थानवर्ती उपशमक औपशमिक भाव है ॥१३॥ चोरों भवक, संयोगिकेवली और अयोगिकेवली क्षयिक भाव है ॥१४॥ इति सामान्यकथन ॥ १५॥ भाव से नरकगति में सामान्य नागरियों में मिथ्यादृष्टि औदृष्टिक भाव है ॥१०॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥११॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥१२॥ असंयत सम्यग्रहिति औपशमिक भाव भी है, क्षयिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥१३॥ किन्तु असंयतत्व औदृष्टिक भाव से है ॥१४॥ इस प्रकार प्रथम पृथ्वी में नागरियों के भाव होते हैं ॥१५॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नरकों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के भाव सामान्य कथन के समान है ॥१६॥ असंयतमन्यगृहिति

ओपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥१७॥ किन्तु असयतत्व औदियि॒र् भाव से है ॥१८॥ तिर्यंचगति में सामान्य तिर्यंच, पचन्द्रिय तिर्यंच, पचन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्ति और पचन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर, संयुग सयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥१९॥ विशप नात् यह है कि पचन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में असयत सम्प्रवृच्छि ओपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२०॥ किन्तु असयतत्व औदियिक भाव से है ॥२१॥ मनुष्यगति में सामान्य मनुष्य, मनुष्यपर्याप्ति और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिन्यली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥२२॥ देवगति म- सामान्य दृष्टि में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयतसम्प्रवृच्छि तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥२३॥ भवनवासी व्यन्ति ज्योतिर्मी और सर्व दृष्टियों, मूँ मिथ्यादृष्टि सासादन और मध्यगमिथ्यादृष्टि ये भाव सामान्य-कथन तक समान है ॥२४॥ अमयत सम्प्रवृच्छि ओपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२५॥ किन्तु असयत औदियिक भाव से है ॥२६॥ सौभर्म ईशान लक्ष्मि से लेकर नवर्णयत्व, पयत विमानरामी दर्शनम्, मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक भाव सामान्य, कथन के समान है ॥२७॥ अनुष्टिग आदि से लेकर सर्वार्थसिद्ध तक विमानरामी दर्शनम् म अमयत सम्प्रवृच्छि ओपशमिक भी है, भाषिक भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२८॥ किन्तु

अस्यतत्व आदिक भाव से, है ॥२६॥

इति गतिमार्गणा

इतिमार्गणा स एवेन्त्रियपर्याप्तिकों में मिथ्यादृष्टि से लेफ़ा,
अयागिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है
॥२०॥ कायमार्गणा से सामान्य प्रसुतायिक और प्रमसायिक
पशुपति में मिथ्यादृष्टि से लेफ़ा, अयागिकेवली गुणस्थान तक
पात्र सामान्य कथन के समान है ॥२१॥

इति इट्रिय और फायमार्गणा

पागमार्गणा स भर्त भनोयागी, भर्त वचनयागी, सामान्य काय-
यागी और आदारिकं काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेफ़ा
पशुपतिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है
॥२२॥ आदारिकमिथ काययोगियों में मिथ्यादृष्टि और सासा-
दने के भाव सामान्य कथन के समान है ॥२३॥ असुयतसम्यम-
दृष्टि ॥ क्षायिकभाव भी है और क्षयापशमिक भाव भी है
॥२४॥ मिन्तु असुयतत्व आदिक भी उस है ॥२५॥ सयागि
उवली-क्षायिक भाव है ॥२६॥ वैक्रियक, काययोगियों में
मिथ्यादृष्टि से लेफ़ा असुयत गुणस्थान तक भाव सामान्ये
कथन के समान है ॥२७॥ वैक्रियकमिथ काययोगियों में
मिथ्यादृष्टि सामान्य, और असुयत सुम्यदृष्टि सामान्य
कथन के समान है ॥२८॥ आदारिक काययोगियों और आदा-
रिकमिथ काययोगियों, से प्रमत्तसयत, क्षयापशमिक भाव है
॥२९॥ क्षुर्मण्ड काययोगियों में मिथ्यादृष्टि,

मन्यार्थि और सेयोगिकेरली 'भाव' सामान्ये कथन के समान है ॥४०॥ १०१ - १२

१०१ - १२ ; इति योगमारणा । १०२ - १३
ये मार्गणा से धीरेदी, 'पुरुषवेदी' और लेखर 'अनिवृत्तिरण गुणस्थान' तक 'भाव सामान्य कथन' के समान है ॥४१॥ अपर्गतवेदियों में अनिवृत्ति-रण से लेखर 'अयोगिनेवली' गुणस्थान 'तक भाव सामान्य कथन' के समान है ॥४२॥ १०३ - १४

१०३ - १४ ; इति वेद्यमारणा । १०४ - १५
कथायमार्गणा में 'क्रोधस्थाय', 'मानस्थायी', 'मायाकपायी' और लोभस्थायी जीवों में मिथ्यार्थि से लेखर मूल्य सांखर्णय उपगमक, और क्षेत्र 'गुणस्थान तक भाव' 'सामान्ये कथन' के समान है ॥४३॥ अकपायी, जीवों में उपशान्तकपाय आदि चारों गुणम्यानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान हैं ॥४४॥

१०४ - १५ ; इति कथायमारणा । १०५ - १६
ज्ञानमार्गणा से मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभगज्ञानी जीवों में मिथ्यार्थि और मासादन भाव सामान्य कथन के समान है ॥४५॥ मतिज्ञानी, श्रुताज्ञानी और अवगिज्ञानियों में असर्वते से लेखर क्षीणस्थाय 'गुणस्थान तक भाव' सामान्य कथन के समान है ॥४६॥ मन 'पर्यवज्ञानियों' में प्रमत्तमयत से लेकर क्षीण-कथाय 'गुणस्थान तक भाव' 'सामान्य कथन' के समान है ॥४७॥ केवलज्ञानियों में 'सयोगिकेरली' 'भाव' 'सामान्य' कथन

हे समान है ॥४८॥

इति क्वानमार्गेण

सुयदनमार्गणा से भयतोः में प्रभत्त मे-लेकर - अयोगिसेवी
गुणमान-तक-भाव सामान्य कथन के समान है ॥४९॥
सामादिक, और - डंडौरस्थापना-में प्रभत्त मे लेकर अनि-
हित्काणु गुणमान तक-भाव, सामान्य कथन के समान
है ॥५०॥ परिदागशुद्धि-में प्रभत्तमयत - और अप्रभत्त
सप्त भाव सामान्य, कथन के समान है ॥५१॥ सूखमारण-
पिक में सूखमारणरायिक उपशमिर और क्षपक भाव सामा-
न्य कथन के समान है ॥५२॥ यथाव्यात में उपरान्त क्षाय
भागि चारों गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान है
॥५३॥ सुयतामयत भाव सामान्य कथन के समान है ॥५४॥
भयतोः में मिथ्यादृष्टि से लेकर ,अमयत) गुणस्थान तक
भाव सामान्य कथन के समान है ॥५५॥

इति संयममार्गेण ॥ ५६ ॥
द्वंनमार्गणा से चकुटर्णी और अचकुटर्णनियों में मिथ्यादृष्टि
से लेकर सीणक्षाय गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन
के समान है ॥५६॥ अवधिट्टर्णी जीरों पे भाव अवधिशानियों
के समान है ॥५७॥ वेश्वल-टर्णी जीरों पे भाव वेश्व-
शानियों के समान है ॥५८॥ ५९ ॥ ६० ॥
इति दश्यममार्गेण ॥ ६१ ॥ ६२ ॥
लेश्यमार्गणा गुण्ठण, नील और अलोकलपांचाली

म आति दे चार गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के ममान है ॥५६॥ तेजो और पद्मभूष्या वालों में मिथ्या दृष्टि से लेखन अप्रमत्त गुणस्थान 'तंक' भाव सामान्य कथन के समान है ॥६०॥ शुशललिदया वालों में मिथ्या दृष्टि से लेखन सयोगिनेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६१॥ भव्यमार्गणा से भव्य मिथ्यादृष्टि से लेखन सयोगिनेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६२॥ अभव्य परिणामिक भाव है ॥६३॥

ग ३। इन लघ्या और भाव मार्गणा सम्बन्धित सम्यग्वत्तमार्गणा में सामाय सम्यग्विषयों में असंयत से 'हेतुर् अयोगिनेवली' गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ कायिक सम्यग्वद्विषयों में असंयत सम्यग्विषय 'क्षायिक' भाव है ॥६५॥ 'क्षायिक' सम्यक्तत्व ही होता है ॥६६॥ किन्तु असंयतन्व अद्विषय भाव से है ॥६७॥ स्यतासयत, प्रमत्तासयत, और अप्रमत्तासयत क्षयोपशमिक पाय है ॥६८॥ सम्यग्वदर्शन क्षायिक ही होता है ॥६९॥ चारों उपशमन गुणस्थानों में, औरगमिक भाव है ॥७०॥ सम्यग्वर्गने क्षायिक ही होता है ॥७१॥ चारों क्षयम्, मयोगियेवली और अयोगिनेवली गुणस्थानों में क्षायिक भाव है ॥७२॥ सम्यग्वदर्शन क्षायिक ही होता है ॥७३॥ रेट्रसम्यग्वद्विषयों में असंयतसम्यग्विषय क्षयोपशमिक भाव है ॥७४॥ सम्यग्वदर्शन क्षयोपशमिक होता है ॥७५॥ किन्तु असंयत

गांगपिक भाव से है ॥७६॥ सृष्टतासयत, प्रमत्त और अप्र-
 समयत स्थोपशमिक भाव है ॥७७॥ सम्यग्दर्शन स्थोपश-
 मिक हाना है ॥७८॥ उपशम सम्यग्दर्शियों में असयत
 महार्जि औपशमिक भाव है ॥७९॥ सम्यग्दर्शन औप-
 शमिक होता है ॥८०॥ किन्तु असयतत्व औदयिक भाव
 है ॥८१॥ सयतासयत, प्रमत्तासयत और अप्रमत्तासयत
 स्थोपशमिक भाव है ॥८२॥ सम्यग्दर्शन औपशमिक होता
 है ॥८३॥ अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानों में औपशमिक
 भाव है ॥८४॥ नेम्यग्दर्शन औपशमिक ही होता है ॥८५॥
 नामादन सम्यग्दर्शि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८६॥
 सम्यग्मिध्यादर्शि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८७॥ ॥८॥
 मिध्यादर्शि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८८॥ ॥९॥

इति सम्यक्त्वमार्गण्या

मनीमार्गणा से सैनियों में मिध्यादर्शि से लेकर सीएक्साय-
 गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥८९॥ असैनी
 आहारमार्गणा से आहारकों में
 औदयिक भाव है ॥९०॥ आहारमार्गणा से आहारकों में
 मिध्यादर्शि से लेकर स्योगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य
 कथन के समान है ॥९१॥ अनाहरक लीयों के भाव कार्मण-
 काययोगियों के समान है ॥९२॥ किन्तु विशेषण, यह है कि
 कार्मणकाययों की अयोगिकेवली सायिक भाव है ॥९३॥

इति माधविकार

अल्पवहुत्वाधिकारं ॥ १५ ॥
 अल्पवहुत्वा ॥ १६ ॥ अल्पवहुत्वा ॥ १७ ॥
 अल्पवहुत्वा रुपन् सामान्यं और विशेषं अपक्षा स दो
 प्रकार है ॥ १ ॥ सामान्य से अर्थमरणादि तीनों गुणस्थानों
 में, उपर्युक्त, प्रवण की अपक्षा तुल्य और मध्यसे अल्प है
 ॥ २ ॥ उपरान्तरपाय पूर्वोक्त, प्रमाण ही है ॥ ३ ॥ उपरान्त
 रपाय स अपक्षा मध्यात् गुणित है ॥ ४ ॥ क्षीण क्षयाये, पूर्वोक्त
 प्रमाण ही है ॥ ५ ॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश
 की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण है ॥ ६ ॥ सयोगिकेवली
 काल, की अपेक्षा अमरयात् गुणित है ॥ ७ ॥ सयोगिकेवलीयों
 से अल्पपक्ष और अनुपशमक अप्रमत्त सयत् सख्यात् गुणित है
 ॥ ८ ॥ अपमत्तसयतों से प्रमत्तसयत् मध्यात् गुणित है ॥ ९ ॥
 प्रमत्तसयतों से सयतासयत् अमर्ख्यात् गुणित है ॥ १० ॥
 सयतासयतों से मासादन असरयात् गुणित है ॥ ११ ॥ मासादनों
 से कम्यगिमध्यादप्ति सर्वयोते गुणित है ॥ १२ ॥ मासादनों
 दृष्टियों से असर्वयत् सम्यगदृष्टि असर्वयत् गुणित है ॥ १३ ॥ असर्वयत्
 सम्यगदृष्टियों से मिथ्यादप्ति अनन्त गुणित है ॥ १४ ॥ असर्वयत्
 गुणस्थानमें उपर्युक्त समस्त कम है ॥ १५ ॥ उपर्युक्त समस्त से क्षायिक
 अमरयात् गुणित है ॥ १६ ॥ क्षायिकों से वेदुक्त असर्वयत्
 गुणित है ॥ १७ ॥ सयतासयत् गुणस्थान में क्षायिकों समस्त
 कम ॥ १८ ॥ क्षायिकों से उपर्युक्त असर्वयत् गुणित है ॥ १९ ॥
 उपर्युक्त से वेदुक्त अमरयात् गुणित है ॥ २० ॥ प्रमत्त और

भगवान् में उपरशमक भवेत् कम है ॥२१॥ उपरशमक से
ज्ञायिक अमन्ब्यात् गुणित है ॥२२॥ ज्ञायिकों से वेदक
मन्मात् गुणित है ॥२३॥ इमी प्रकार उपरशमक और
उपरशमकों में सम्यकत्वे सम्बन्धी अल्प बहुत्व है ॥२४॥
परम्परण धारि तीनों गुणस्थानों में उपरशमक सबसे कम है
परिशा ग्रन्थमकों से ज्ञायने सम्भवित गुणित है ॥२५॥ ॥२५॥

इति सामान्यवचन ॥

विषेश गति मार्गणा से नरकगति में सामान्य नारकियों में
सामान्य सब स कम है ॥२६॥ सासादनों से सम्यग्मित्यादियों
द्वारा सख्यात् गुणित है ॥२७॥ सम्यग्मित्यादियों से असंयते
सम्यग्मित्यादियों द्वारा सख्यात् गुणित है ॥२८॥ अमर्यत सम्यग्मित्यादियों
सम्यग्मित्यादियों द्वारा सख्यात् गुणित है ॥२९॥ असंयते गुण-
स मित्यादियों द्वारा सख्यात् गुणित है ॥३०॥ असंयते गुण-
स सम्यग्मित्यादियों से कम है ॥३१॥ उपरशमकों से
स्थाने में उपरशमक सर से कम है ॥३२॥ उपरशमकों से
ज्ञायिक अमर्यत सख्यात् गुणित है ॥३३॥ इसी प्रकार प्रयत्न पृथ्वी में अल्प-
र्यात् गुणित है ॥३४॥ इसी प्रकार प्रयत्न पृथ्वी तक सासादन
नहुत्व है ॥३५॥ दूसरी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक सासादन
युक्त है ॥३६॥ कोसादनों से सम्यग्मित्यादियों से असंयते
गुणित है ॥३७॥ सम्यग्मित्यादियों से असंयते सम्यग्मित्यादियों असं-
यते गुणित है ॥३८॥ अमर्यत सम्यग्मित्यादियों से मित्यादियों असं-
यते गुणित है ॥३९॥ असंयते गुणस्थान में उपरशमक सर-
र्यात् गुणित है ॥४०॥ असंयते गुणस्थान में उपरशमक सर-
र्यात् गुणित है ॥४१॥ उपरशमकों से वेदक असंयते गुणित है
से कम है ॥४२॥ उपरशमकों से वेदक असंयते गुणित है
॥४३॥ नियंत्र गति में मामान्य तियंचि सामान्य

तिर्यंच, पचन्द्रिय, पर्याप्त और पचेन्द्रिय यानिमती तिर्यंचों में सयतामयत सरामे कम है ॥४१॥ सयतामयतों, से सामादन असुख्यात् गुणित है-न। ॥४२॥ -सामादनों से सम्यग्मित्यादपि सरयात् गुणित है ॥४३॥ -सम्यग्मि यादाच्छयों, से असयत सम्यग्दपि असर्वायात् गुणित है ॥४४॥ अमयत, सम्यग्दर्शियों से मिथ्यादाच्छ अनत्त गुणित और, असुख्यात् गुणित है ॥४५॥ असयत गुणस्थान में उपशमन, समये कम ह ॥४६॥ उपशमनों, से ज्ञायिक, असरयात् गुणित है ॥४७॥ ज्ञायिकों स, वेदन, असरयात् गुणित है ॥४८॥ मयतासयत, गुणस्थान म उपशमक सुन से कम है ॥४९॥ उपशमनों, स, वेदन असरयात् गुणित है ॥५०॥ विशेषता यह है कि, पचन्द्रिय, तिर्यंच योनिमतियों म अमयत और, सयतामयत, गुणस्थान में उपशमन, उनस भी कम है ॥५१॥ उपशमनों से वेदक-असरन्यात् गुणित है ॥५२॥ मनुष्य, जृति मे भामान्य-मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त और, मनुष्यनियों म, अपूर्वकरण, आदि, तीनों गुणस्थानों से उपशमक प्रयोग की अपेक्षा, तुल्य, और अल्प है ॥५३॥ उपशान्त, वर्षाय-प्रयोग से पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥५४॥ -उपशान्त, कपाय से, कपक सख्यात् गुणित है ॥५५॥ क्षीण-उ-कपाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥५६॥, सयोगिरेखली, और अयोगिरेखली, भी-प्रयोग, स, तुल्य, और पूर्वोक्त, प्रमाण ही है ॥५७॥ सयोगिरेखली सचयँ काल भी, अपेक्षा, सख्यात् गुणित है ॥५८॥, सयोगिरेखली से अपूर्वक, और अनुपशमक, अप्रभत् ।

सर्व सरयात गुणित है ॥५६॥ अप्रमत्त स्यतों, से प्रमत्तमयत
 सत्यात्, गुणित है ॥६०॥-प्रमत्त, स्यतों से, स्यतमयत
 मत्तात् गुणित है ॥६१॥ स्यतस्यतों से, सासादन, सख्यात्
 गुणित है ॥६२॥-सासादनों से १सम्यग्मिथ्याद्धिः सरयात्
 गुणित है ॥६३॥ सम्यग्मिथ्याद्धियों, से, असायत्, सम्यग्द्धिः
 सम्यात् गुणित है ॥६४॥ असायत्, मम्यग्द्धियों, से, मिथ्या-
 द्धिः असरयात् गुणितः और सरयात् गुणित है ॥६५॥,
 असायत्, गुणस्थान, म उपशमक्, सबसे, कम है ॥६६॥ उप-
 शमकों से क्षायिक्, सख्यात् गुणित है ॥६७॥ क्षायिकों—से,
 उक्त मरयात्, गुणित है ॥६८॥, सायतमयत् गुणस्थान मे,
 क्षायिक सबस कम है ॥६९॥ क्षायिको, से उपशमक सरयात्
 गुणित है ॥७०॥ उपशमकों, से रेट्ट, सख्यात् गुणित है ॥
 ॥७१॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान मे उपशमक सबस
 कम है ॥७२॥ उपशमकों, से क्षायिक सख्यात्, गुणित है,
 ॥७३॥ क्षायिकों से रेट्ट सख्यात् गुणित है ॥७४॥ त्रिग-
 एता यह है कि मनुष्यनियों में असायत्, स्यतस्यत्, प्रमत्त-
 और अप्रमत्त गुणस्थान मे क्षायिक, उनसे भी कम है ॥७५॥-
 क्षायिकों से उपशमक सख्यात् गुणित है, ॥७६॥ उपशमकों
 से उक्त मरयात् गुणित है ॥७७॥ इसी प्रकार, उपशमक
 और उपक गुणस्थानों में, मम्यकत्वं सम्बन्धीय अलग
 चलत है ॥७८॥, उपशमक सबसे उक्त है ॥७९॥ उपशमकों-
 से उपक सख्यात् गुणित है ॥८०॥ रेट्टकिं गाया-

न्ये देवों में सामादन 'नय स कम है ॥८७॥' सामादनों ने
 सम्यग्मित्याहृष्टि सरयात गुणित है ॥८८॥ सम्यग्मित्याहृष्टि
 दृष्टियों से 'अमर्यतम्यहृष्टि' अमर्यात् गुणित है ॥८९॥
 अमर्यतम्यहृष्टियों में 'मित्याहृष्टि' अमर्यात् गुणित है
 ॥९०॥ अमर्यते गुणस्थान म उरामेर नकम कम है ॥९१॥
 उपशमकों 'स शायिर् अमर्यात् गुणित' है ॥९२॥ क्षायिकों
 से वेदक असरयात गुणित है ॥९३॥ भानवासी, च्यता,
 च्योतिपी दृष्टि और नय देवियों का अल्पहृत्य नातवी पृथ्वी
 के अल्पहृत्य के मुमान है ॥९४॥ मौर्य न लेकर भद्रद्वार
 तक फलवासी देवों में अल्पहृत्य निवाति मामाय के अल्प-
 वहुत्ये ममान है ॥९५॥ 'थानत ने लेख नप्रवृत्यरु
 विमानों तक विमानवासी देवों में सामादा सरसे कम है
 ॥९६॥' सामादनों स मम्यग्मित्याहृष्टि मम्यात गुणित है
 ॥९७॥ सम्यग्मित्याहृष्टियों से मित्याहृष्टि असरयात् गुणित
 है ॥९८॥ सम्यग्मित्याहृष्टियों स अर्थर्यत्, सम्यग्मित्याहृष्टि
 सरयात गुणित है ॥९९॥ असरत् गुणस्थान में उपशमक
 सरसे कम है ॥१००॥ उपशमकों ने क्षायिर् असम्याति गुणित है
 ॥१०१॥ क्षायिकों स वेदक सरयात गुणित है ॥१०२॥
 नय अनुनिशों स अपराजित तक विमानवासी देवों में असर
 यत गुणस्थान म उपशमक मध्यस कम है ॥१०३॥ उपशमकों
 से क्षायिर् असम्याति गुणित है ॥१०४॥ क्षायिकों से वेदक
 सरयात गुणित है ॥१०५॥ सर्वर्ध मिति विमानवासी देवों में

अस्यत् गुणस्थानं म उपगमक सप्तसे , नम है ॥१००॥ उप
शमकों स कायिर् भासाव गुणित है ॥१०१॥ कायिकों से
वेदक सख्यात् गुणित है ॥१०२॥ १०२ इति श्रुतिमार्गणा
इन्द्रियमार्गणा से : सामान्य पूचेन्द्रिय और पूचेन्द्रिय-पर्याप्ति
में अल्परहुत्व सामान्य कायन के समान है । नेवल विशेषता
यह है कि , अस्यत् सम्यग्दृष्टिया मे मिथ्यादृष्टि , अस-
ख्यात् गुणित है ॥१०३॥ एकाय प्रार्गणा , मे - नमकायिर्
और व्रसकायिर् । पर्याप्ति से अल्परहुत्व सामान्य कायन के
समान है । केवल विशेषता सुदृढ़ि इ अस्यत् सम्यग्दृष्टियों
स मिथ्यादृष्टि , अनन्याकु गुणित है ॥१०४॥

इति इन्द्रिय और कायमार्गणा से , मर्द भनोयोगी , मर्द जचनयोगी , काययोगी
और आदातिक काययोगियों म अपूर्वकाणा , आदि तीन , गुण-
स्थानों में उपशुभ्रु प्रवशाकी अपेक्षा तुल्य और अल्प है
॥१०५॥ उपशान्त कपायों स क्षप्त , सख्यत गुणित है ॥१०६॥
उपशान्त कपायों पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०७॥ क्षीण-
कपाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०८॥ मयोगिरेवली प्रवेश की
अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१०९॥ सयोगिरेवली - सचय-
काङ्क्षी की अपेक्षा , सख्यात् गुणित है ॥११०॥ सयानिरेवली
से अक्षयक , और अनुपशमक , अपमत्तसायत सख्यात् गुणित
है ॥१११॥ अपमत्तसायतों से अपमत्तसायत मरयात है ॥११२॥

प्रेमचमयतों से संयतार्मपत् असरयात् गुणित है ॥११३॥
 मयतासंयतों से सासादन अभल्यात् गुणित है ॥११४॥
 मामादन से सम्यग्मध्याद्विष्टि सख्यात् गुणित है ॥११५॥
 मध्यगिर्थ्याद्विष्टियों से अनंयतेसम्यग्वद्विष्टि असरयात् गुणित है ॥११६॥ असर्वमें अनन्त गुणित है, और अनन्त गुणित है ॥११७॥ असायत् सृपता सायत्, प्रेमत्तसायते और अप्रेमत्तसायत् गुणस्थान में सम्यग्लव सम्पर्ची अल्पगहुत्वे सामान्य कर्यन कि ममान है ॥११८॥ इसी प्रकार उपशमन क और क्षपन गुणस्थानों में है ॥११९॥ उपशमन संपर्से कम है ॥१२०॥ उपशमनों से क्षेपक सख्यात् गुणित है ॥१२१॥ औदारिकमिथ वायोगियों में सयोगिक वली सबस कम है ॥१२२॥ सयोगिभवली जिनों से असायत् सम्यग्वद्विष्टि सख्यात् गुणित है ॥१२३॥ असायत् सम्यग्वद्विष्टियों से मामादन असख्यात् गुणित है ॥१२४॥ सासादनों में मिध्याद्विष्टि अनन्त गुणित है ॥१२५॥ असायत् गुणस्थान में क्षायिक सबस कम है ॥१२६॥ क्षायिकों से दैदक सख्यात् गुणित है ॥१२७॥ वैक्रियक काययोगियों में अल्पगहुत्व उच्चगति के ममान है ॥१२८॥ वैक्रियकमिथ वाययोगियों में मासादन सर्वमें कम है ॥१२९॥ सासादनों से असायत् सम्यग्वद्विष्टि सख्यात् गुणित है ॥१३०॥ असायत् सम्यग्वद्विष्टियों में मिध्याद्विष्टि असरयात् गुणित है ॥१३१॥ अमयत् गुणस्थान में उपशमन संपर्से कम है ॥१३२॥ उपशमनों से

‘क्षायिक’ सर्वयात् गुणित है ॥१३२॥ ‘क्षायिकों’ से ‘वेदक’ असर्वयात् गुणित है ॥१३३॥ आहारक काययागी शरि आहारकमिथ काययोगियों में प्रमत्तसयत गुणस्थान में क्षायिक रास कर्म है ॥१३४॥ क्षायिकों से वेदक मरयात् गुणित है ॥१३५॥ क्षायिकों में ‘संयोगिकेवली’ जिन सर्वसे कर्म है ॥१३६॥ ‘संयोगिकेवली’ जिनों से ‘सासादुन असर्वयात् गुणित है ॥१३७॥ ‘सासादुनों’ से असर्वयत् ‘सम्यग्वाहिति’ असर्वयात् गुणित है ॥१३८॥ ‘असर्वयत्’ सम्यग्वाहियों से ‘मिथ्याहिति’ अनन्तगुणित है ॥१३९॥ असर्वयत् गुणस्थान में उपशमक सबसे कर्म है ॥१४०॥ उपशमकों से क्षायिक सर्वयात् गुणित है ॥१४१॥ ‘क्षायिकों’ से ‘वेदक’ असर्वयात् गुणित है ॥१४२॥ ॥१४३॥ इति योगमार्गणा ॥१४३॥

विद्मार्गणा से खीवेदियों मध्यपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों के उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥१४४॥ उपशमकों से क्षपक सर्वयात् गुणित है ॥१४५॥ ‘क्षपकों’ से अक्षपक और अनुपशमक प्रमत्तसयत् सर्वयात् गुणित है ॥१४६॥ अप्रमत्तसयतों से प्रमत्तसयत् सर्वयात् गुणित है ॥१४७॥ प्रमत्तसयतों से संयतोसयत् असर्वयात् गुणित है ॥१४८॥ संयतोसयतों से सासादुन असर्वयात् गुणित है ॥१४९॥ सासादुनों से ‘सम्यग्मिथ्याहिति’ सर्वयात् गुणित है ॥१५०॥ ‘सम्यग्मिथ्याहित्यों’ से ‘असर्वयत्’ सम्यग्वाहिति अस-

स्वात् गुणित है ॥१५१॥ असयत् सम्यग्दृष्टियों से मिथ्या-
 हृष्टि समख्यात् गुणित है ॥१५२॥ असयत् और सयतामयत
 गुणस्थान में क्षायिक सप्तसे कम है ॥१५३॥ क्षायिकों से
 उपशमक असख्यात् गुणित है ॥१५४॥ उपशमकों से वेदक
 असख्यात् गुणित है ॥१५५॥ मूलचसयत् और अप्रमत्तसयत
 गुणस्थान में क्षायिक सप्तसे कम है ॥१५६॥ क्षायिकों से
 उपशमक भरयात् गुणित है ॥१५७॥ उपशमकों से वेदक
 सख्यात् गुणित है ॥१५८॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और
 अनिवृत्तिकरण - गुणस्थानों में अल्पवहूत है ॥१५९॥ उप-
 शमक सप्तसे कम है ॥१६०॥ उपशमकों से सेपक - सख्यात्
 गुणित है ॥१६१॥ पुरुषदियों में अपूर्वकरण और अनि-
 वृत्तिकरण, गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य
 और अल्प है ॥१६२॥ उपशमकों से सप्तस ख्यात गुणित
 है ॥१६३॥ क्षमाओं से अभावक और अनुपशमक, अप्रमत्तसयत
 सख्यात् गुणित है ॥१६४॥ अप्रमत्तों से मूलसयत् - सख्यात्
 गुणित है ॥१६५॥ प्रमत्तसयतों से सयतामयत, असर्वयात्
 गुणित है ॥१६६॥ मूलसयतों से सासादन असर्वयात्
 गुणित है ॥१६७॥ सासादनों से सम्यग्मित्यादृष्टि सख्यात्
 गुणित है ॥१६८॥ सम्यग्मित्यादृष्टियों से असयत्, सम्यग्दृष्टि
 भसख्यात् गुणित है ॥१६९॥ असयत् मन्यग्दृष्टियों, स
 मित्यादृष्टि - असर्वयात् गुणित है ॥१७०॥ असयत्, सयता-
 सेपत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में अल्पवहूत, सामा-

न्य कथीं के समान है ॥१७१॥ इसी प्रकार 'अपूर्वकरण' और 'अनिवृत्तिकरण', 'गुणस्थानों में अल्पवहुत्व' है ॥१७२॥ उपशमक सबसे 'कम है' ॥१७३॥ उपशमकों से 'क्षयक सख्यात् गुणित है' ॥१७४॥ 'नपु संवयेदियोऽम' 'अपूर्वकरण' और 'अनिवृत्तिकरण', 'गुणस्थानों में 'उपशमक प्रवेश' की 'अपृष्ठा तुल्य' और 'अवर' है ॥१७५॥ 'उपशमकों से 'क्षयक सख्यात् गुणित है' ॥१७६॥ क्षयकों से अक्षयक और अनुपशमक अप्रभावसयत् सख्यात् गुणित है ॥१७७॥ अप्रभावसयतों से 'प्रभावसयत्' सख्यात् गुणित है ॥१७८॥ 'प्रभावसयतों से सयतोसयत्' अमरुल्योंते गुणित है ॥१७९॥ 'सयतोसयतों से सासादिने अमरुल्यात्' गुणित है ॥१८०॥ 'सासादिनों से सम्यग्मिध्यादृष्टियों' से 'असायवसम्यग्दृष्टि' असख्यात् गुणित है ॥१८१॥ 'सम्यग्मिध्यादृष्टियों' से 'असायवसम्यग्दृष्टि' असख्यात् गुणित है ॥१८२॥ 'असयत् सम्यग्दृष्टियों' से 'मिध्यादृष्टि' 'अनन्त' गुणित है ॥१८३॥ 'असयत और 'सयतासयत्' गुणस्थानों में 'अल्पवहुत्व' 'सामान्य कथन के समान है ॥१८४॥ 'प्रभाव' और 'अप्रभाव' 'गुणस्थानों में 'क्षायिक' सबसे 'कम' है ॥१८५॥ 'क्षायिकों' से उपशमक सख्यात् गुणित है ॥१८६॥ उपशमकों से वेदक सख्यात् गुणित है ॥१८७॥ इसी प्रकार 'अपूर्वकरण' 'और' 'अनिवृत्तिकरण', 'गुणस्थानों में 'अल्पवहुत्व' है ॥१८८॥ 'उपशमक' सबसे 'कम' है ॥१८९॥ उपशमकों से 'क्षयक सख्यात् गुणित है' ॥१९०॥ 'अपृगत वेदियों' में 'अपूर्वकरण' और 'अनिवृत्तिकरण', 'गुणस्थानों में

उपशमक प्रेश की अपेक्षा तुल्य और अत्य है ॥१६३॥ उप-
शमन्त्रकृपायी पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१६२॥ उपशान्त कृपायियों
से इपरु सरयात् गुणित है ॥१६३॥ क्षीणकृपायी पूर्वोक्त
प्रमाण ही है ॥१६४॥ सुयोगिरेवली और अयोगिरेवली
प्रवृश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥१६५॥
सुयोगिरेवली, सचयकाल की अपेक्षा भर्त्यात् गुणित है ॥१६६॥

इति वेदमाग्नेय ॥१६६॥ ॥१६७॥

कृपायमार्गण से लोधकपायी, मानुकृपायी, मायाकृपायी; और
लोभपृष्ठपायियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण - गुणस्थानों
में उपशमन, जीव - प्रवेश की अपेक्षा तुल्य, और अल्प है;
॥१६७॥ - उपशमकों से धनक भर्त्यात् गुणित है ॥१६८॥

देवलं विशपता यह है कि लोभकपायी - क्षपकों से सूक्ष्म साप
रुपिर, उपशमक - विशेष - अविक है ॥१६९॥ उपशमकों से
क्षपक सरयात् गुणित है ॥२००॥ क्षपकों से असपर और अनु-
पगमन अपमृतसयत; सर्वात गुणित है ॥२०१॥ अप्रमत्त-
सयतों से अपमृतसयत; भर्त्यात् गुणित है ॥२०२॥ अपमत्त-
सयतों से सपत्नामयत; सर्वात गुणित है ॥२०३॥ मयता-
सयतों से सासादन असरयात गुणित है ॥२०४॥ सासादज्ञों
में मन्यस्मिथ्याद्विदि, सर्वात गुणित है ॥२०५॥ सम्यस्मिथ्या-
द्विदियों से असयतसम्यद्विदि असख्यात गुणित है ॥२०६॥
अमयतमस्थग्न्याद्विदियों से मिथ्याद्विदि अनन्त गुणित है ॥२०७॥;

असर्वतः सयवासप्रतः प्रमत्तसप्तवतः और क्षमत्तसयतः गुणस्याम्
 में अल्पबहुत्वं रैसामान्यं कृथन् इकों समानं है। ॥२१८॥ इसी
 प्रकार अपूर्वस्त्रये अनिवित्तिकरणं गुणस्यानों में अल्पबहुत्वं है। ॥२१९॥
 उपगमकुं सवस्त्रेकम् है। ॥३१॥ उपवासनों से
 सारक्षस्त्रयात् गुणित् है। ॥३२॥ असामान्यी लिंगों से
 गुणन्त्रकशायः सवस्त्रेकम् है। ॥३३॥ उपशमन्तकप्राप्तः से
 श्रीणक्षणायः सत्त्वात् गुणित् है। ॥३४॥ अस्योगिवेष्टी और
 अपोगिकेवली सवेशकी अपेक्षा अत्युल्य और प्रवर्णक प्रमाण ही
 है। ॥३५॥ अस्योगिवेष्टी अत्युल्यकाली अपेक्षा सत्त्वात्
 गुणित् है। ॥३६॥ एवं ॥५६॥ द्वे एवं कर्त्तव्य अन्तः
 शान्तिक्षणायाम् इति क्षणायाम् इति क्षणायाम् इति
 शान्तिक्षणायाम् से अत्युल्यानी अत्युल्यानी और विभराजानियों में
 सासादन सत्त्वात् कम है। ॥२२६॥ सासादनों से प्रियादर्शि
 अत्युल्य गुणित् और असत्त्वात् गुणित् है। ॥२२७॥ लक्षि तथा
 और आर्द्धविष्णुनियों संभवकरण व्याडि तीज गुणस्यात् से
 उपरमक पवेशकी अपेक्षा अत्युल्य और अल्प है। ॥२२८॥ लक्षि
 शान्तिक्षणाय पदोंके समाण ही है। ॥२२९॥ उपशमन्तकशायियों से
 सपूर्वसत्त्वात् गुणित् है। ॥२३०॥ अपसों से श्रीणक्षणाय पदोंके
 प्रमाण ही है। ॥२३१॥ श्रीणक्षणायियों से अप्तपुक और अत्युल्यमन्तः
 अपमत्तसंस्त्रेक्षणात् गुणित् है। ॥२३२॥ अपमत्तस्यतों से प्रमद्वा
 सयत् सत्त्वात् गुणित् है। ॥२३३॥ समचमसुतों से समतास्यतों
 असत्त्वात् गुणित् है। ॥२३४॥ सप्ततास्यतों से असयत् सम्यग्

दृष्टि अस्यात् गुणित है ॥२२०॥५४ इ सायत, 'सयनासीयत,' प्रमत्तसीयत और अपमत्तसीयत गुणस्थान में 'अवश्यहुत्व' यामोन्य कथन के समान है ॥२२६॥ इसी प्रकार 'अपूर्वकरण' आदि तीन 'गुणस्थानों' में अलौच पहुत्व है ॥२२७॥ उपशमक सर्वसे इम है ॥२२८॥ 'उपशमकों' से भयक मरयात् गुणित है ॥२२९॥ मन पर्यवशानियों में 'अपूर्वकरण' आदि तीन गुणस्थानों भ उपशमक 'मरण' की अपेक्षा तुल्य और अलौच है ॥२३०॥ 'उपशमन्ति' 'व्याय पूर्वक' प्रमाण ही है ॥२३१॥ उपशमन्तस्थानों से भयक सर्वसे सर्वयात् गुणित है ॥२३२॥ सीण-व्याय पूर्वक प्रमाण ही है ॥२३३॥ सीणरूपाय में अक्षयक और अनुपशमक अपमत्तसीयत मरयात् गुणित है ॥२३४॥ अपमत्तसीयतों से प्रमत्तसीयत 'सर्वयात् गुणित' है ॥२३५॥ प्रमत्तसीयत और अपमत्तसीयत गुणस्थान में उपशमक सर्वसे फूल है ॥२३६॥ उपशमकों से भायिक सर्वयात् गुणित है ॥२३७॥ इसी प्रकार 'अपूर्वकरण' आदि तीन उपशमक गुणस्थानों में 'अवश्यहुत्व' है ॥२३८॥ उपशमक 'सर्वसे भयक' है ॥२४०॥ उपशमकों से भयक सर्वयात् गुणित है ॥२४१॥ केवल 'ज्ञानियों' में 'संयोगिकेवली' और 'अयोगिकेवली' जिन 'प्रवेश' की अपेक्षा 'तुल्य' 'और पूर्वक' प्रमाण ही हैं ॥२४२॥ संयोगिकेवली संचयकाल की अपेक्षा सर्वयात् गुणित है ॥२४३॥

सप्तमार्गणा से, सप्तर्तों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्यानों में उपशमक- प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२४४॥, उपशमकपाय पूर्णक प्रमाण ही हैं ॥२४५॥ उपशमकपायों से भूपक, सख्यात् गुणित हैं ॥२४६॥ श्रीणकपाय पूर्णक प्रमाण ही हैं ॥२४७॥ सयोगिकेवली- और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य-, और सूक्ष्मोक्त, प्रमाण ही हैं ॥२४८॥ सयोगिकेवली, मूँचयकाल की- अपेक्षा, सख्यात् गुणित हैं ॥२४९॥, सयोगिकेवली, जिनमें स अपक, और अनुपशमक अपमत्तसायत्, सख्यात् गुणित हैं ॥२५०॥ अपमत्त सप्तर्तों से प्रमत्तसायत्, सख्यात् गुणित हैं ॥२५१॥ प्रमत्त और अपमत्त गुणस्यान में, उपशमक सबसे कम हैं ॥२५२॥ उपशमकों से क्षायिक सख्यात् गुणित हैं ॥२५३॥, क्षायिकों से वैदक मन्यात् गुणित हैं ॥२५४॥ हमी प्रकार, अपूर्वकरण, आदि तीन गुणस्यानों में अल्पमहुल्य है ॥२५५॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥२५६॥ उपशमकों से कम क सख्यात् गुणित हैं ॥२५७॥, सामायिक- और छेदोपम्यापना में, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्यानों- में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और, अल्प हैं ॥२५८॥ उपशमकों से शप्त मन्यात् गुणित हैं ॥२५९॥, शप्तकों से अशप्त- और अनुश- मक अपमत्तसायत्, सख्यात् गुणित हैं ॥२६०॥, अपमत्तसायतों से प्रमत्तसायत्, सख्यात् गुणित हैं ॥२६१॥, प्रमत्त और अप- मत्त गुणस्यान में उपशमक सबसे कम हैं ॥२६२॥ उपशमकों

१ सा॒ क्षायिका॑ द्वी॒ पौते॑ गुणिते॑ हैं ॥२६३॥ क्षायिकों से वेदक
 सर्वं विते॑ गुणिते॑ हैं ॥२६४॥ एमी प्रपोर अपूर्व रण और
 श्रीनृसिंहरण, गुणस्थानों में अलंकृत है ॥२६५॥ उपरामें
 मध्यमे पूर्व है ॥२६६॥ इति॒ शंखों से॑ संप्रका॒ सर्वात् गुणित
 है ॥२६७॥ परिद्वारा॑ प्रियुद्धि॑ में॑ क्रममत्त्वमें विभिन्नता॑
 है ॥२६८॥ श्रीमत्ता॑ संयतो॑ से॑ मेमेत्तामयते॑ संरयोते॑ गुणिते॑ हैं
 ॥२६९॥ प्रमृता॑ और॑ अप्रमृता॑ गुणस्थान में॑ क्षायिका॑ संपर्य से॑
 हैं ॥२७०॥ क्षायिकों जे॑ वेदक सर्वते॑ गुणित हैं ॥२७१॥
 १ शूलमे॑ सार्वतोयिका॑ में॑ शूलमे॑ सार्वतोयिका॑ उपरामेंका॑ अलंकृत
 है ॥२७२॥ उपरामेंको॑ में॑ जपते॑ सर्वात् गुणित है ॥२७३॥
 वर्तयो॑ याते॑ में॑ अलंकृत॑ धृत्य॑ अवृत्य॑ ज्ञातो॑ पे॑ संमोन है
 ॥२७४॥ संयतीमयत में॑ अलंकृत॑ जहाँ है ॥२७५॥ क्षयितो॑
 संयते॑ गुणस्थान में॑ क्षायिका॑ संवर्से॑ क्षमा॑ है ॥२७६॥ क्षायिकों
 से॑ उपरामेंका॑ असरयाते॑ गुणित हैं ॥२७७॥ उपरामको॑ से॑
 वदके॑ अमरितोते॑ गुणित हैं ॥२७८॥ असंयतो॑ में॑ मांसांदन
 मरिसे॑ वर्म हैं ॥२७९॥ गांगामनों से॑ सम्यग्मित्यादृष्टि॑ सर्वात्
 गुणित है ॥२८०॥ सम्यग्मित्यादृष्टियो॑ से॑ असंयते॑ वर्मया
 दृष्टि॑ असर्वयोते॑ गुणित है ॥२८१॥ असंयते॑ वर्मयदृष्टियो॑ स
 मित्यादृष्टि॑ अनन्त॑ गुणित है ॥२८२॥ शमयते॑ गुणस्थान में॑
 उपरामेंका॑ संयते॑ क्षम है ॥२८३॥ उपरामेंको॑ से॑ क्षायिका॑ असरयाते॑
 गुणित है ॥२८४॥ क्षायिकों से॑ वर्तके॑ अमेन्याते॑ गुणित है ॥२८५॥
 ॥२८६॥ ॥२८७॥ ॥२८८॥ ॥२८९॥ ॥२९०॥ ॥२९१॥ ॥२९२॥ ॥२९३॥ ॥२९४॥

दर्शनमार्गणा, से चक्षुदर्शनी। और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्या-
हृषि स लेन्द्र क्षीणक्षयात्, गुणस्थान तक अवपत्तिहृत्य समान्य
कथन के समान है ॥२८६॥ विशेषता यह है कि चक्षुदर्शनियों
में अस्यत् सम्यग्दृष्टियों से भिन्नमिथ्यादृष्टि, अमर्यात् गुणित
है, ॥२८७॥ अवधिदर्शनियों, का अलगहृत्य अवधिशानियों
के समान है ॥२८८॥ केवल दर्शनियों, पर अवधित्य केवल-
शानियों के समान है ॥२८९॥

लेश्यमार्गणा स कृष्णलेश्या, नीललेश्या और काषोत्तलेश्या
बालों में भासादन, मर, से, कम है ॥२९०॥ भासादनों, से
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सुख्यात् गुणित है ॥२९१॥ सिम्यमिथ्या-
दृष्टियों से, अमरत्सम्यदृष्टि, असरयात्, गुणित है ॥२९२॥
अस्यत्सम्यग्दृष्टियों भ मिथ्यादृष्टि अनन्त, गुणित है ॥२९३॥
अमर गुणस्थान में क्षायिक सब से, कम है ॥२९४॥ क्षायिकों,
से उपगमक, अमरयात्, गुणित, है ॥२९५॥ उपशमकों से
वेदक असर्यात्, गुणित, है ॥२९६॥ तेजल, विशेषता, यह है
कि, काषोत्तलेश्याबालों, के अस्यत् गुणस्थान में उपशमक, मर से-
कम है ॥२९७॥ उपगमकों, से क्षायिक, असर्यात् गुणित, है
॥२९८॥ क्षायिकों, से वेदक, असर्यात्, गुणित है ॥२९९॥
तेजोलेश्या, और पद्मलेश्या, बालों में अपमत्तस्यत मर स कम
है ॥३००॥ अपमत्तस्यतों, स मृमत्तमयत मरयात् गुणित है.
॥३०१॥ प्रमत्तमयतों, से, स्यवासयत, असर्यात्, गुणित है,

॥३०२॥ सयतामयर्गों से रासादन असर्व्यात् गुणित हैं ॥३०३॥ रासादनों से सम्बिध्यादृष्टि 'सत्यात् गुणित हैं ॥३०४॥ सम्बिध्यादृष्टियों से असर्यतसंम्यग्दृष्टि असर्यात् गुणित हैं ॥३०५॥ असर्यत सम्यग्दृष्टियों से मिध्यादृष्टि असर्व्यात् गुणित है ग ॥३०६॥ असर्यत, संयतासर्यत, अमत्त-सर्यत और अमत्तसर्यत गुणस्थान में सम्बन्धसम्बन्धी अल्प-बहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३०७॥ शुगललेश्यां वैलों में अपूर्वकरण आदि तीन 'गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प, हैं ॥३०८॥ उपशान्तकपाय पूर्वोक्त प्रमाण हैं ॥३०९॥ शीणकपाय पूर्वोक्त प्रेक्षण ही है ॥३११॥ सयोगि-केवली प्रवेश की अपेक्षा 'पूर्वाक' प्रमाण ही है ॥३१२॥ सयोगिसेवली सर्वयकान की अपेक्षा 'सम्भाल' गुणित हैं ॥३१३॥ सयोगि केवली जिनों से असर्फ और अनुपशमक अप्रमत्तसर्यत मर्याद गुणित है ॥३१४॥ अप्रमत्तसर्यतों से ममत्तसर्यत सर्यात् गुणित है ॥३१५॥ प्रमत्तसर्यतों से संयता-सर्यत असर्व्यात् गुणित है ॥३१६॥ संयतासर्यतों से रासादन असर्यात् गुणित हैं ॥३१७॥ रासादनों से सम्बिध्यादृष्टि सर्व्यात् गुणित हैं ॥३१८॥ सम्बिध्यादृष्टियों से मिध्या-दृष्टि असर्व्यात् गुणित है ॥३१९॥ मिध्यादृष्टियों से असंयत-सम्यग्दृष्टि जीव सर्व्यात् गुणित है ॥३२०॥ असर्यत-गुणस्थान म उपशमक सर्व संक्षम है ॥३२१॥ उपशमकों से

जारिह असंख्यात् गुणित है ॥३२३॥ ज्ञापिकों से वेदक उन्मात् गुणित है ॥३२४॥ सूर्यतामयत, प्रमत्तमयत और अद्यत्तमयत गुणस्थान में सम्पूर्णत्व सम्बन्धी अद्यत्तहृत शान्ति कथन के समान है ॥३२५॥ इसी भाव अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में सम्पूर्णत्व सम्बन्धी अद्यत्तहृत है ॥३२६॥ दरगुपक्ष सरस कम है ॥३२७॥ उपरामकों से वेदक उन्मात् गुणित है ॥३२८॥

इति लेखामार्गं ए

दंशमार्गं ए, मैं अपर्याप्ति में सेकर अयोगिषेवली गुणस्थान तक अद्यत्त-सामान्य कथन के समान है ॥३२९॥ अपर्योगे वे-अद्यत्तहृत-नहीं हैं ॥३२१॥ सम्पूर्णत्व-मार्गं ए म सामान्य सम्पर्कियों में अद्यत्तहृत अवधिज्ञानियों के समान है ॥३२०॥ ज्ञापिकों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपरामक्ष दरेश की अपेक्षा तुल्य और अद्य है ॥३२१॥ उपरामक्षसामाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३२२॥ उपरामक्षसामिदों से ररेश सख्यात् गुणित है ॥३२३॥ सीण-जाति पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३२४॥ सुयोगिषेवली और अयोगिषेवनों प्रदेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३२५॥ सुयोगिषेवली जिन सचयकाल की अपेक्षा सख्यात् गुणित है ॥३२६॥ अद्यपक्ष और अनुपश्चयक अपमत्तमयत उन्मात् गुणित है ॥३२७॥ अपमत्तसुपतों से प्रमत्तपत्त उन्मात् गुणित है ॥३२८॥ प्रमत्तमयवों से प्रमत्तमयत सख्यात्

गुणिन है॥१३६॥ मर्त्यामयतों से अमर्येन्मम्यगृह्णि
अमर्यात् गुणित है॥१३७॥ अमर्यत, मयनामेया, प्रमत्तांश्च
अप्रमत्ता गुणस्थान में कायिके सा अलगवृत्त्य नहीं है॥१३८॥
वेदक में अप्रमत्तामयत मर्यसे कम है॥१३९॥ अप्रमत्तमयतों
से अमर्यत स्वयात् गुणित है॥१३१॥ प्रमत्तमयतों से
सायतासायत अमर्यात् 'गुणित है॥१३२॥' मयतोंसायतों से
असायत सम्यगृह्णि अमर्यात् गुणित है॥१३३॥ अमर्यत
सायतासायत, प्रमत्ता और अप्रमत्ता गुणस्थान में वेदक का
अलगवृत्त्य नहीं है॥१३४॥ उपर्यात्मक मध्यपूर्वरूप व्यादि
कीन गुणस्थानों में उर्शमंक प्रैग की अपेक्षा तुल्य और अल्प
है॥१३५॥ उपर्यात्मकायः से अनुपर्यात्मक अप्रमत्तसायतों स्वयात् गुणित
है॥१३६॥ अप्रमत्ता उसयतों से प्रमत्तमयते 'स्वयात् गुणित
है॥१३७॥' प्रमत्तसायतों से असायते सम्यगृह्णि 'असोरयोत्ते
गुणित है॥१३८॥' अमर्यते, सायतोसायत, प्रमत्ता और अप्र-
मत्ता गुणस्थानों में उपर्यात्मक का अलगवृत्त्य नहीं है॥१३९॥
सामादन, सम्यग्मिध्याहृष्टि और मिध्याहृष्टि का अलग-
वृत्त्य नहीं है॥१४०॥

इति मर्य और अमर्यस्थान भार्याः ॥ १४० ॥
संतीर्थार्थणा से संनियों में मिध्याहृष्टि 'स लेहरै क्षीणस्थाय
गुणस्थान न ता गलवृत्त्य सामान्ये' स्थिने के 'भूमाने' हैं

॥३५४॥ विगेष्टा यह है कि सेनियों में असत्यत मम्यगटियों
 से मिथ्यादिएं असर्वयात् गुणित हैं ॥३५५॥ असेनी जीवों
 में अल्पवदुत्त्र नहा है ॥३५६॥ आहारमाण्डण से आहारकों
 में अपुर्वगण आदि तान गुणरूपानों में उपगमक प्रवेश की
 अपेक्षा तुल्य आहा अहर है ॥३५७॥ उपगान्तुकपाय पूर्वाक्त
 प्रमाण ही है ॥३५८॥ उपगान्तुकपाय कपाय से क्षपक सरयात्
 गुणित है ॥३५९॥ क्षपाय पूर्वाक्त प्रमाण ही है ॥३६०॥
 मर्यागिमन्दी जिने प्रश्न की अपेक्षा पूर्वाक्त प्रमाण ही है
 ॥३६१॥ सयागिमेवली जिन संबंधकाल यी अपेक्षा सरयात्
 गुणित है ॥३६२॥ सयागिमेवली जिनों से अक्षपद और
 अनुशगमन अप्रभज्ञसायत सरयात् गुणित है ॥३६३॥ अप-
 भज्ञसायतों से प्रभज्ञसायत सरयात् गुणित है ॥३६४॥ प्रभज्ञ-
 सायतों से सयतासायत असरयात् गुणित है ॥३६५॥ सयना-
 सयतों स मादन असरयात् गुणित हैं ॥३६६॥ सामादनों
 से सम्यग्मिथ्यादिए सरयात् गुणित हैं ॥३६७॥ सम्यग्मिथ्या-
 दियों म असयत मम्यगटिए असरयात् गुणित हैं ॥३६८॥
 अमयत मम्यगटियों से मिथ्यादिए अनन्त गुणित हैं
 ॥३६९॥ अमयत मयतासयत, प्रभज्ञ अप्रभज्ञ गुणस्थान में
 मम्यवन्द समन्वी अल्पवदुत्त्र सामान्य कथन के ममान हैं
 ॥३७०॥ वसी प्रार अपूर्वगण आदि तीन गुणस्थानों म
 मम्यवन्द समन्वी अल्पवदुत्त्र सामान्य कथन के ममान हैं
 ॥३७१॥ उपगमन सरसे कम है ॥३७२॥ उपशमकों स

सप्त संख्यात गुणित है ॥३७४॥ अनादरकों में सर्वोगिष्ठे रत्नी
जिन सबस कम हैं ॥३७५॥ सर्वोगिष्ठे वलियों से अर्योगिष्ठे रत्नी
जिन संख्यात गुणित हैं ॥३७६॥ अर्योगिष्ठे वलती जिनों से मासादन
असंख्यात गुणित हैं ॥३७७॥ मासादनों से असवत्सम्पदादृष्टि
असंख्यात गुणित है ॥३७८॥ असवत्सम्पदादृष्टियों में मिथ्या-
दृष्टि अनन्त गुणित है ॥३७९॥ असवत गुणस्यान में उपशमक
सब से कम है ॥३८०॥ उपशमकों से क्षादिक संख्यात गुणित
है ॥३८१॥ क्षादिकों से ऐदक असंख्यात गुणित है ॥३८२॥

इति संनी श्रीत आदात्मांणा

